CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्तम स्मारिका

111.1

वर्ष 1995

'सहिष्णुता संदेश'

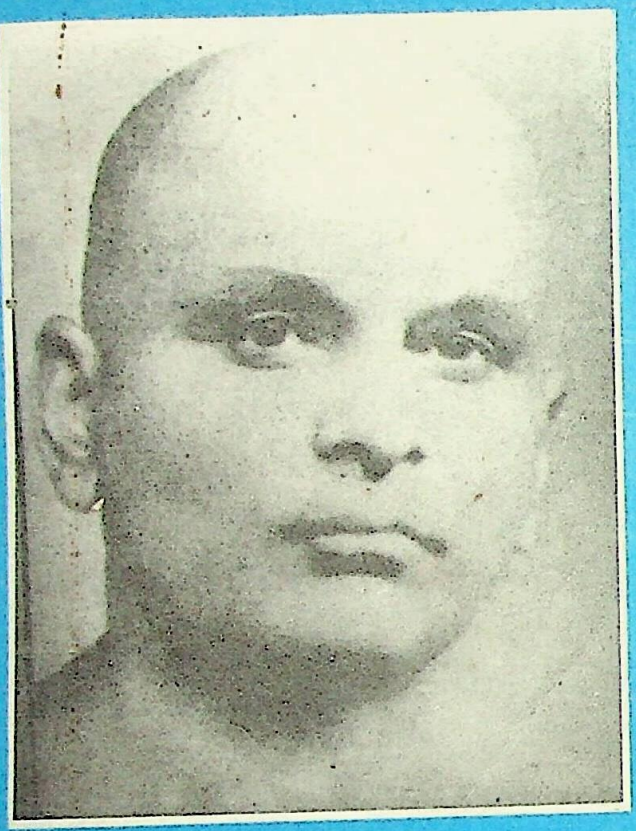

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज

(पंजीकृत आदर्श स्वयं सेवी संस्था)

109-पी, आरामबाग, नई दिल्ली-110055

दूरभाष : 523604

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS

*

*

*

FROM

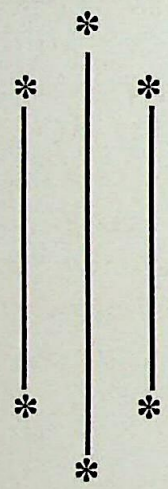

M/S PRINCE RUBBER & PLASTICS
JULLENDER

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

विश्वबन्धुत्व एवं सह-अस्तित्व पर आधारित भारतीय जीवनदर्शन पर आज तरह-तरह के प्रहार किए जा रहे हैं। जिस दर्शन ने हमें सहस्राब्दियों तक, अपनी अस्मिता को बिना खोए, जीवित और सुरक्षित रखा उसी को आज व्यर्थ और अप्रासंगिक करार किया जा रहा है।

भारतीय वर्णव्यवस्था किसी व्यक्ति विशेष या वर्गविशेष द्वारा निर्मित व्यवस्था नहीं थी। यह तो "गुणकर्मविभागशः" (गुणवत्ता और स्वतः विकासशील व्यवसाय के आधार पर) स्वयं विकसित एवं विकासशील व्यवस्था के रूप में प्रकट हो गई थी। मूलतः, जन्म से वर्ण का कोई सम्बन्ध नहीं था। गुणवत्ता और व्यवसाय ही वर्ण के निर्णायक होते थे। बाद में गुणवत्ता और व्यवसाय पर ही आधारित कुल बने। इसमें भी कोई बुराई नहीं थी। आज भी संगीतकारों के, स्थपतियों के या अन्य कलाकारों के घराने हैं जिनका सभी आदर करते है। ये कुल या घराने वस्तुतः गुणवत्ता और व्यवसाय के विश्वसनीय केन्द्र थे; यहां स्वतः सैद्धान्तिक और प्रायोगिक प्रशिक्षण की सुविधा थी। यही कारण है कि हमारे यहाँ जीवन और विश्व के प्रायः सभी पक्षों पर गम्भीर सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण अपने-अपने परिवारों में ही सभी के लिए सुलभ थे। क्या और कहीं भी संसार में ज्ञान-विज्ञान-साहित्य-कला के विभिन्न पहलुओं पर इतना विशाल और तथ्यात्मक तथा हृदयस्पर्शी साहित्य मिलेगा जितना हमारी परम्परा में है ?

हमारी वर्णव्यवस्था में, कई कारणों से, कुछ विकार भी आ गए थे। भगवन् महावीर बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुज, मध्व, निम्बार्क, चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महामना मदनमोहन मालवीय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आदि महापुरुषों ने इन विकारों को दूर कर एक परिष्कृत भारतीय समाज निर्माण की प्रेरणा दी। उसी श्रृंखला में दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती का भी अवतरण हुआ। इन्होंने भी परम्परा की सही सामयिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए आधुनिक भारतीय समाज को प्रगतिशीलता के 'प्रशस्त पुण्य-पन्थ' की ओर अग्रसर कराने की चेष्टा ही नहीं की, इसके लिए वह सतत निर्भीक भाव से संघर्ष करते रहे। कोई भी जानकार व्यक्ति स्वामी जी को जातिवादी कहने का साहस नहीं करेगा।

इस परिप्रेक्ष्य में 'जातीय संकीर्णता एवं सहजानन्द का दर्शन' पाठकों को अर्पित करते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। डॉ0 राधाकृष्ण शर्मा का 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती और जातिवाद' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। साथ-साथ डा. शक्तिपद शर्मा, डॉ. योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश', प्रो. कौशल किशोर शर्मा, प्रो. डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र, डॉ. राजेन्द्र राय, प्रो. महेन्द्र प्रसाद सिंह, श्री गिरीश पंकज जी, प्राध्यापक 'अचल, श्री दयाशंकर सिंह, श्रीमती सुधा राय जी तथा त्रिपुरारी राय जी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने अपने विचारोत्तेजक निबन्ध भेज कर हमें अनुगृहीत किया है।

यदि कहीं किसी प्रकार की त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए विज्ञ पाठक कृपया क्षमा करेंगे। हम अवश्य ही अपने श्रद्धेय पाठकों के विचारों की स्वागत करेंगे।

रामकरण शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

1.	स्वामी सहजानन्द सरस्वती और जातिवाद — डा0 राधा कृष्ण शर्मा	13-24
2.	कुछ उदगार : कुछ विचार — डा0 योगेश्वर प्रसाद सिंह	26
3.	स्वामी सहजानन्द सरस्वती व्यक्तित्व और कृतित्व — डा0 शक्ति पद शर्मा	29-34
4.	जातीय संकीर्णता एवं सहजानन्द का दर्शन — डा0 योगेश्वर प्र0 सिंह "योगेश"	35-41
5.	समाज समय और हम — डा0 कृष्ण चन्द्र मिश्र	43-45
6.	स्वामी सहजानन्द सरस्वती — प्रो0 महेन्द्र प्रसाद सिंह	47-48
7.	जातीय संकीर्णता और स्वामी सहजानन्द का दर्शन — डा0 राजेन्द्र राय	49-51
8.	स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जातीय आन्दोलन और उनकी अधुनातन — प्रासंगिकता प्राध्यापक 'अचल'	
9.	जातीय संकीर्णता और स्वामी सहजानन्द का दर्शन — गिरीश पंकज	59-61
10.	स्वामी सहजानन्द सरस्वती की प्रासंगिकता - आज के परिप्रेक्ष्य में — दयाशंकर सिंह	63-67
11.	जातीय संकीर्णता और स्वामी सहजानन्द का दर्शन — प्रो0 कौशल किशोर शर्मा	69-73
12.	जातीय संकीर्णता एवं स्वामी सहजानन्द का दर्शन — श्रीमती सुधाराय	75-80
13.	स्वामी सहजानन्द का जातीय दर्शन — त्रिपुरारी राय	81-88
14.	स्वामी सहजानन्द सरस्वती समाज सेवा पुरस्कार वर्ष 1994, 1995 का विवरण	91-94

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा० सं०.....6207...../कृ० मं०/94
D. O. No.....6207..... .../AM/94

कृषि मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110001

MINISTER OF AGRICULTURE
INDIA
NEW DELHI-110 001

दिनांक 6 दिसम्बर, 1994

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज, आरामबाग, नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 12 फरवरी, 1995 को इंडिया इन्टर नेशनल सेन्टर के समागार में राष्ट्रीय स्तर पर बुद्धिजीवी वर्ग के सेमिनार समारोह के आयोजन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

स्वामी जी ने अहिंसात्मक संघर्ष-वार्ता, तर्क एवं उपयुक्तता के आधार पर जो सराहनीय कार्य किये हैं वे स्मारिका में अवश्य प्रकाशित होंगे, जिसके अध्ययन से लोग लाभान्वित होंगे।

मैं सेमिनार के आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

बलराम जाखड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

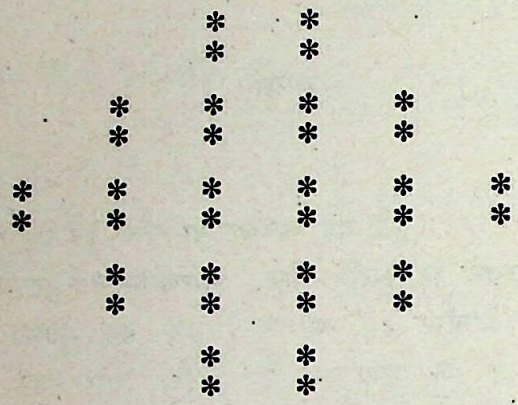

ASHOKA & BROS

SPECIALISTS IN :

Renovating of Bath Tubs, Spray Painting
Antek Deco Polishing, Civil Interior Decorator Contractors.

434, MANDAWLI FAZALPUR, DELHI - 110092
PHONES : 2216299, 2420461

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

By. No. 4995 M (HRD)/94

अर्जुन सिंह

मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत
नई दिल्ली - 110 001
MINISTER OF
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
INDIA
NEW DELHI - 110 001

5 DEC 1994

सन्देश

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज के तत्वावधान में 12 फरवरी, 1995 को राष्ट्रीय मुद्दों पर गोष्ठी के आयोजन का निर्णय सराहनीय है। समाज की गैर-राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों की सदैव प्रशंसा की गई है। गोष्ठी के निष्कर्षों से समाज सुधार के कार्य को गति मिल सकेगी ऐसा मेरा विश्वास है। गोष्ठी की सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(अर्जुन सिंह)

श्री त्रिपुरारी राय
संस्थापक अध्यक्ष,
स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज,
109-पी, आराम बाग, नई दिल्ली-110055.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Wishes

From

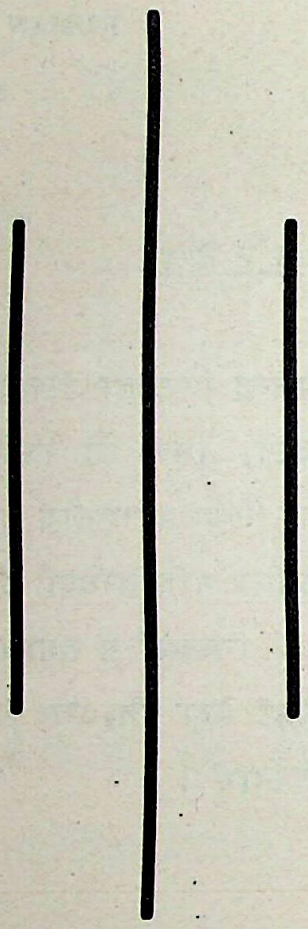

ARTEX INTERNATIONAL

6, LSC, Uday Park, New Delhi : 110049

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सी० के० जाफ़र शरीफ़

रेल मंत्री, भारत
Minister For Railways
India
नयी दिल्ली-110001
12 दिसम्बर, 1994

सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज द्वारा जातीय संकीर्णता की ओर जन-मानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक सेमिनार का आयोजन कर इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। आज हम देख रहे हैं कि जातीय संकीर्णता समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अतः ऐसे समय में जातीय संकीर्णता के विरुद्ध आवाज उठाने की बहुत ही आवश्यकता है क्योंकि यदि इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो इससे हमारी राष्ट्रीय एकता, सद्भावना, सहिष्णुता की विरासत पर भी प्रश्नचिह्न लगेगा। आज समाज में कुछ महत्वाकांक्षी शक्तियां अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर जातीय संकीर्णता को, इसके विध्वंसक परिणामों की ओर ध्यान दिए बिना फैलाने का प्रयास कर रही है।

जातीय सहिष्णुता राष्ट्रीय विकास की जननी है अतः हमें इस भावना को ध्यान में रखकर परस्पर सहयोग और सहभागिता की भावना को विकसित करने के लिए प्रयास करने चाहिए। स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज द्वारा किया जा रहा इस तरह का कार्य प्रशंसनीय है।

मैं इस सेमिनार की सफलता की कामना करते हुए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा हूं।

(सी० के० जाफ़र शरीफ़)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS

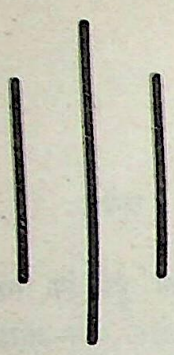

FROM

BISTRO

RESTAURANT COMPLEX

12, HAUZ KHAS VILLAGE, NEW DELHI

Ph. 6853857, 6852226, 6852227

THE VILLAGE BISTRO EXPERIENCE

A HEADY MIX OF HISTORY, ETHNIC,

SPLENDOUR AND EXOTIC CUISINE.

You haven't seen Delhi, if you haven't been to Bistro

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

D.O. No. 2719 MOS(A&C)/94

ARVIND NETAM

कृषि और सहकारिता राज्य मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110 001

MINISTER OF STATE
FOR AGRICULTURE & COOPERATION
INDIA
NEW DELHI - 110 001

दिनांकः ८ दिसम्बर, १९९४.

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि १२ फरवरी, १९९५ को स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज, नई दिल्ली द्वारा जातीय संकीर्णता के दुष्परिणामों की ओर जनमानस का ध्यान आकर्षित करने तथा परस्पर सहयोग की भावना को विकसित करने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर बुद्धिजीवी वर्ग का एक सेमिनार आयोजित किया जा रहा है । निःसंदेह जातीय सहिष्णुता राष्ट्रीय विकास की जननी है और इस भावना को लेकर इस अवसर पर समाज द्वारा एक स्मारिका का विमोचन किया जाना भी प्रशंसनीय है । आशा है कि समाज अपने इस राष्ट्र हितकारी उद्देश्य को प्राप्त करने में सक्षम होगा ।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर मैं समाज को हार्दिक बधाई तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

अरविन्द नेताम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

ALISHA ENTERPRISES PVT. LTD

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुख्यमंत्री
CHIEF MINISTER

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
GOVT. OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110 054
OLD SECRETARIAT, DELHI-110 054
TEL. NO.
D.O.NO. Cm/94/13200
दिनांक
Dated 22 DEC 94

-: सन्देश :-

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज ने 12 फरवरी, 1994 को एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया है, जिसमें सम-सामयिक समस्याओं पर विचार-विमर्श होगा । जातीय संकीर्णता हमारे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में बाधक है । समाज को इससे होने वाले नुकसान से बचाना तथा जातीय सहिष्णुता और आपसी सद्भाव को बढ़ावा देना, सभी हितकारी समाजसेवी संगठनों का कर्त्तव्य है । मुझे विश्वास है कि आपकी इस गोष्ठी से समाज को रचनात्मक दिशा देने में सहायता मिलेगी । मैं आपके इस आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ ।

हार्दिक शुभ-कामनाओं सहित,

(मदन लाल खुराना)

श्री त्रिपुरारी राय,
संस्थापक अध्यक्ष,
109, पी, आराम बाग, नई दिल्ली-55

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

UPHAR BUILDERS

OFF : **19/250, L.G. Room No. 3,**
Malviya Nagar, Shivalik Road,
New Delhi - 110 017

Ph: OFF : **6480333, 6480203**

Res. : **6440588**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालेश्वर राय
विशेष अधिकारी

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद
NEW DELHI MUNICIPAL COUNCIL
पालिका केन्द्र, नई दिल्ली-110 001
PALIKA KENDRA, NEW DELHI-110 001

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज राष्ट्रीय स्तर पर बुद्धिजीवी वर्ग का एक सेमीनार आयोजित करने जा रहा है ।

स्वामी सहजानन्द जी महाराज जीवन पर्यन्त जातीय संकीर्णता के विरुद्ध संघर्षशील रहे । उनकी विचारधारा प्रासंगिक है । आज जबकि हिंसात्मक घटनायें जातीयता के आधार पर चारों ओर फैल रही है और राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने के लिये तैयार हैं । हमें ऐसे समय में स्वामी सहजानन्द जी की याद आती है । जातीयता एवं विघटनकारी शक्तियों के विरुद्ध उनकी अहिंसात्मक विचारधारा आज भी प्रासंगिक है । उनके विचारों को जनमानस तक पहुँचाना और उनका अनुसरण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा होगी ।

मैं सेमीनार की सफलता के लिये अपनी शुभ कामनायें देता हूँ ।

आपका

बा॰ राय

बालेश्वर राय

श्री त्रिपुरारी राय,
संस्थापक अध्यक्ष,
स्वामी सहजानन्द हितकारी समाज,
109-पी, आराम बाग
नई दिल्ली-110055

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Wishes

From

KAKA'S TAKE AWAY

6, L.S.C. UDAY PARK,
NEW DELHI - 110049
Telephone - 656105

"ENJOY OUR TIME — TESTED CULINARY TALENT"

[]
[][][]
[][][][][]
[][][]
[]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती और जातिवाद

यदि कोई अन्धा है, तो उसे बाहर की कोई भी वस्तु दिखाई नहीं पड़ेगी, वह उस वस्तु के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ सकेगा। यदि वह हाथी के पैर को छूता है तो वह उसे केले का थम समझ सकता है। यदि किसी व्यक्ति की ऑख की ज्योती कमजोर है तो ज्योति जितनी कमजोर है उस अनुपात में उसे बाहर की किसी वस्तु का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट रूप में नहीं दिख पड़ेगा।

ऐसे ही जिस व्यक्ति की जैसी आन्तरिक भावना होती है उसी के अनुसार वह ईश्वर या किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में सोचने लगता है। जो स्वयं जातिवादी है वह स्वामी जी सहित दूसरे को भी जातिवादी कहता है। वह अपनी ऑख की ज्योति की कमजोरी, संकीर्ण मानसिकता, विवेक शून्यता और अधूरे ज्ञान का परिचय देता है। उसकी उस व्यक्ति से तुलना की जा सकती है जो दिन के दोपहर में अपनी ऑखों को मुंद लेता है, या किसी बन्द कमरे में रह कर कहता है कि अभी दिन नहीं है, बल्कि रात हो गई है।

जो व्यक्ति स्वामी सहजानन्द के निकट सम्पर्क में नही रहा है, या जिसने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समुचित या समग्र रूप में, अध्ययन नहीं किया है, वह उनके वास्तविक स्वरूप को समझने में कभी भी सक्षम नहीं हो सकता।

जातिवाद क्या है? जातिवादी किसको कहा जा सकता है? पहले इन बातों को समझना आवश्यक है।

प्रसिद्ध समाज शास्त्री डा0 कैलाशनाथ शर्मा के मतानुसार "जातिवाद या जातिभक्ति एक जाति के व्यक्तियों की वह भावना है जो देश के या समाज के सामान्य हितों का ख्याल न रखते हुए केवल अपनी जाति के सदस्यों के उत्थान, जातीय एकता और जाति की सामाजिक परिस्थिति (स्टेटस) को दृढ़ करने के लिये प्रेरित करती हो।"[1] समाज शास्त्र के एक अन्य विद्धान का मत है कि "जातिवाद एक जाति के सदस्यों की वह भावना है, जो अपनी जाति के हित के सम्मुख अन्य जातियों के सामान्य हितों की भी अवहेलना और प्राय: हनन करने को प्रेरित करती है।" अन्य जाति के लोगों को हानि पहुँचाना जातिवाद का मुख्य सन्देश है। इस प्रकार जातिवाद के दो पहलू है - भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक और क्रियात्मक या व्यावहारिक। किसी जातिवादी व्यक्ति के सिद्धातों और व्यवहारों के ये दोनों ही संकुचित या संकीर्ण पक्ष हैं।

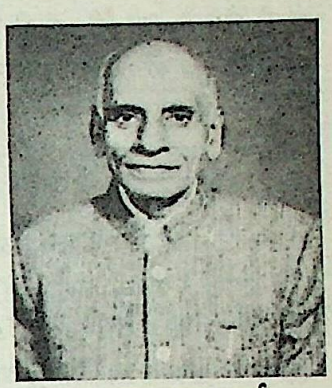

डा0 राधा कृष्ण शर्मा

जातिवाद की इन परिभाषाओं की कसौटी पर कस कर जाँच करने से स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी सहजानन्द जातिवाद के शिकार नहीं थे। वे राष्ट्रवादी और मानवतावादी थे। वे राष्ट्रवाद की रक्षा करते हुए विश्व बन्धुत्व के समर्थक थे।

स्वामी जी के शैशवकाल में ब्राह्मणों के दो वर्ग थे-याचक और अयाचक। याचक ब्राह्मण अपने को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। यज्ञ कराना, पढ़ाना, और दान लेना वे अपना विशेषाधिकार मानते थे। दंडधिकारी संन्यासी बनना भी वे अपना सुरक्षत अधिकार समझते थे।

भूमिहार कहे जाने वाले लोग अयाचक श्रेणी में थे। याचक ब्राह्मण भूमिहारों को हीन समझते थे और उनका अपमान करते थे। वे उन पर जोर-जुल्म भी करते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिहारों में भी कितने लोग अशिक्षित और अज्ञानी थे। कई ऐस लोग भी जो शिक्षित भूमिपति और धनी भी थे लेकिन उन्हें भी अपनी वास्तविक स्थिति की जानकारी नहीं थी। बहुत से भूमिहार अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को भूल गये थे। वे किंकर्तव्यविमूढ़ थे। समाज में उनकी प्रतिष्ठा नहीं थी। कहीं भी उनका सम्मान नहीं होता था।

उन दिनों जातीय सभाओं की भरमार थी। प्रायः सभी प्रमुख जातियों के अपने अपने संगठन थे। भूमिहारों का भी एक संगठन था। 1914 में (दिसम्बर) बलिया में अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा का अधिवेशन था। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती तथा कुछ अन्य लोगों के आग्रह पर स्वामी जी उस अधिवेशन में शामिल हुए। स्वामी जी ने अपने भाषण से लोगों को बहुत प्रभावित किया। लेकिन उन्हें अनुभव हुआ कि भूमिहार ब्राह्मण अपने गौरवपूर्ण अतीत को भूलकर संस्कार हीन हो गये हैं। दूसरे लोग उनका अपमान कर रहे है। स्वामी जी ने भूमिहारों की स्थिति में सुधार लाने के लिए निश्चय किया।

लेकिन स्वामी जी सन्यासी थे। वे सोचने लगे कि सन्यासी के लिए समाज में रह कर सामाजिक कार्य करना निरंतर उचित है? उनकी यह समस्या भी हल हो गई। स्वामी जी ने भक्त प्रह्लाद के सन्देश से शिक्षा ली। प्रहलाद ने कहा था- "ऋषि मुनि लोग स्वार्थी बनकर अपनी ही मुक्ति के लिए एकान्त वास करते हैं लेकिन सभी दुखियों को छोड़कर मुझे केवल अपनी मुक्ति नहीं चाहिए। मैं तो इन्हीं के साथ रहूँगा, जीऊंगा और मरुंगा।" स्वामी जी के सामने गीता का भी उपदेश था कि दिल लगा कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही भगवान की पूजा है[2] उन्हें तुलसी दास के मत से भी प्रेरणा मिली-पर हित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।

इस तरह प्रेरित हो कर स्वामी जी ने भूमिहार सुधार आन्दोलन चलाया। वे लगभग सात वर्षों तक अयाचक ब्राह्मणों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना जगाने में व्यस्त रहे। उन्होंने उन्हें पुरोहिती करने और संस्कृत पढ़ने के लिए भी प्रभावित किया।

भूमिहारों का उद्धार कर देना स्वामी जी की अस्थायी योजना थी। प्रारंभ में उन्होंने सोचा कि यह कार्य "मेरा मनफेर (डायभर्सन) होगा और मैं फिर अपने पठन-पाठन तथा ब्राह्म ज्ञान में लग जाऊंगा।" किन्तु उनका अस्थायी मन फेर स्थायी हो गया। भूमिहारों का सुधार जन सेवा की लम्बी यात्रा में पहला कदम सिद्ध हुआ। भूमिहारों की समस्या के ही आधार पर स्वामीजी का सामाजिक जीवन में अवतरण हुआ। अद्वैत वेदान्त द्वारा समर्थित निजी मुक्ति के मार्ग से हटकर लौकिक जीवन की ओर प्रयाण उनका यह प्रस्थान बिन्दु बना।[3]

स्वामी जी ने अपनी रचनाओं और भाषणों के माध्यम से भूमिहारों में अद्भुत जागृति ला दी। अब वे अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने लगे। उनका यह कार्य अनुचित नहीं कहा जा सकता। उन्होंने एक वर्ग के लोगों को ऊपर उठाया, किन्तु दूसरे वर्ग के लोगों को नीचे नहीं गिराया। वे जहाँ थे वही रहें। हाँ, उनके एकाधिकार को, उनके स्वामित्व और उनके अहंकार को अवश्य समाप्त कर दिया गया। यह कार्य जातिवादी नहीं था, बल्कि सामाजिक समता के क्षेत्र में एक प्रयोग था।

स्वामी जी के ही शब्दों में "मैं तो किसी और मतलब से उसमें पड़ा न था। एक बहुत बड़े समाज को एक उच्च और कुलीन ब्राह्मण समाज को औरों से पद-दलित पाया और देखा कि वह-तिलमिला रहा है, अपमानित हो रहा है। मगर कुछ कर नहीं पाता। मेरा दिल तड़प उठा और मैंने उसे उठाया-उठाने की कोशिश की और अपमानित करने वालों को ठीक-ठीक उत्तर दे दिया। उनके होश ठिकाने कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिये। इसमें क्या अपराध हुआ ? क्या बुराई हुई ?[4]

आखिर सारे मुल्क को तो ऊंचा उठाना ही है। आजादी की लड़ाई का आखिर मतलब ही क्या, अगर मुल्क को उठाना नहीं है ? जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो उसे तैयार करके उसका हक वापस दिलाना-यही तो आजादी की लड़ाई और असली समाज सेवा का रहस्य है।[5]

समष्टि रूप में समस्त समाज को ऊंचा उठाने को ही स्वामी जी समाज सेवा और समाजिक कार्य मानते थे। पैदल चलने में लम्बी यात्रा भी एक छोटा डेग या कदम से ही शुरू होती है। पूरे राष्ट्र या देश की सेवा करने के लिय स्वामी जी ने भूमिहार समाज का सुधार एक छोटे डेग के रूप में शुरू किया। उस प्रारंभिक अवस्था में स्वामी जी ने किसी की बुराई की बात सपने में भी नहीं सोची थी। उनके दिल और दिमाग दोनों ही शुद्ध और सरल थे। वे अभी राजनीति का क, ख, ग भी नहीं जानते थे। भूमिहार ब्राह्मण परिचय नाम प्रारंभिक पुस्तक में किसी दल या किसी व्यक्ति को दबाने की गन्ध भी नहीं पाई जाती है।

स्वामी जी कोई राजनीतिक दाँव-पेंच को या औरों को दबाने की मनोवृत्ति को निन्दित और बुरी मानते थे। उन्होंने लिखा है-"आत्म सम्मान की भावना एवं पुकार ने ही मुझे भूमिहार ब्राह्मणों के सामाजिक कार्य में कुछ समय के लिये घसीटा। उसमें कोई प्रतिहिंसा, स्वार्थ या तुच्छ राजनीति की भावना न थी। केवल गिरे या यों कहा जाय कि बलात् गिराये गये समाज को उठाना था। और उसमें आत्मगौरव की रूह फूंकनी थी। जो बहुत अंशों में खत्म हो चुकी थी या हो रही थी।"[7] असल में सिर्फ सेवा भाव और कर्त्तव्य बुद्धि से ही इस काम में मैं परिस्थिति वश खिच गया, न कि किसी और मतलब से। यदि रागद्वेष किसी तुच्छ स्वार्थ या नीच मनोवृत्ति से इसमें पड़ा होता तो मैं शायद ही आगे बढ़ पाता।[8]

आत्म-सम्मान और प्रतिष्ठा जीवन का सबसे बड़ा मूल्य होता है। स्वामीजी ने इस मूल्य को कायम रखने के लिए भूमिहारों को प्रेरणा प्रदान की।[9]

लेकिन जातीय जाल स्वामी जी को अधिक दिनों तक फँसाये नहीं रख सका। उनका क्रान्तिकारी व्यक्तित्व छोटे से जातीय संगठन के संकुचित दायरे में आबद्ध नहीं रह सका।[10] आगे चलकर वे छोटे समाज को छोड़ कर पूरे राष्ट्र या देश के कार्य में खिंच गये या कूद पड़े। धीरे-धीरे उनकी सेवा का क्षेत्र विस्तृत होता गया।

स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सिद्धान्त एवं व्यवहार से यह साफ सिद्ध हो जाता है कि वे जातिवाद, भाई-भतीजावाद, सम्प्रदायवाद आदि बीमारियों से बिल्कुल मुक्त थे।

1921-22 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने असहयोग की नीति अपनायी थी। उसने प्रान्तीय कौंसिलों के चुनाव का बहिष्कार किया था। स्वामी जी काँग्रेस के सम्मानित सदस्य थे। हथुआ के महाराज चुनाव में उम्मीदवार हो गये। वे भूमिहार ही थे। फिर भी स्वामी जी ने महाराज के पक्ष में प्रचार कार्य नहीं किया।

सर गणेशदत्त सिंह बिहार के एक महान सपूत थे। वे बहुत ही लोक-प्रिय नेता थे। वे बिहार सरकार के एक मन्त्री भी रह चुके थे। वे भी एक भूमिहार ही थे। फिर भी स्वामी जी का उनके साथ मतभेद हुआ, टकराव हुआ और संघर्ष हुआ।

पटना में 1926 में भूमिहार ब्राह्मण सभा होने वाली थी। गणेश दत्त सिंह उसके स्वागतध्यक्ष बनाये गये थे। वे किसी राजा या बड़े जमींदार को सभापति की कुर्सी पर देखना चाहते थे। स्वामी जी ने इसका विरोध किया। उनकी इच्छा के विरुद्ध और स्वामी जी की इच्छा के अनुसार एक जन सेवक काँग्रेसी नेता चौधरी रघुबीर नारायण सभापति की कुर्सी पर बैठ गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका शानदार स्वागत हुआ। इस तरह स्वामी जी के हस्तक्षेप के कारण गणेश दत्त पराजित और अपमानित हुए।[11]

इतना ही नहीं हुआ। मेरठ के चौधरी साहब का नाम सुनते ही गणेशदत्त चौंक पड़े। उन्होंने कुछ गड़बड़ी करनी चाही। वे रंज होकर जाने की तैयारी करने लगे। इस पर स्वामी जी ने कड़ा जवाब दिया - आप नियम नहीं मानेगे, अपनी जिद पर रहेगें, और उठकर चले जायेंगे तो दुनिया थोड़े ही खाली हो जायगी।[12]

सर गणेश दत्त तथा कुछ अन्य भूमिहार नही चाहते थे कि भूमिहार पुरोहिती का कार्य करे। अनेक दाँव-पेंच खेले गये कि पुरोहिती का प्रस्ताव ही पास न हो सके। किन्तु महासभा के खुले अधिवेशन में पुरोहिती का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया। महासभा की मुहर पुरोहिती पर लग गई। अब संस्कृत विद्या और कर्मकाण्ड का काम तुफानी गति से बढ़ने लगा।[13]

श्री अनुग्रह नारायण सिंह गया जिला बोर्ड के चेयरमैन थे। स्थानीय शासन गणेश दत्त सिंह के हाथ में था। 1929 ई0 में सरकार ने श्री अनुग्रह नारायण सिंह को हटा दिया और जिला बोर्ड को अपने अधीन कर लिया। स्वामी जी ने अनुग्रह नारायण सिंह का पक्ष लिया और गणेश दत्त सिंह की नीति एवं कार्य की कटु आलोचना की। अनुग्रह नारायण सिंह को अपनी सफाई देने का अवसर नहीं दिया गया और उनके साथ अन्याय किया गया। वह स्मरणीय है, कि अनुग्रह नारायण सिंह कोई भूमिहार नहीं थे, बल्कि राजपूत थे।[14]

1929 ई0 में मुँगेर जिला में भूमिहार ब्राह्मण महासभा का अधिवेशन होना था। सर गणेश दत्त सिंह को सभापतित्व करना था। वे ब्रिटिश सरकार के समर्थक और काँग्रेस के विरोधी थे। वे भूमिहारों का पुरोहित होना भी पसन्द नहीं करते थे। स्वामी जी ने गणेश दत्त सिंह के सभापति होने का घोर विरोध किया। उन्होंने कहा सर गणेश को भूमिहार ब्राह्मण महासभा का सभापति बनाना साँप को दूध पिलाना है।[15]

स्वामी जी ने बिहार के प्रमुख भूमिहार काँग्रेसी नेताओं की भी बात नही मानी। स्वामी जी द्वारा गणेश दत्त के सभापतित्व का विरोध जारी रहा। उन्होंने घोषणा की "मैं गणेश दत्त का पक्का विरोधी हूँ। इतना ही नहीं, वे चुनाव में जहाँ भी खडें होंगे मैं उनका विरोध सारी ताकत लगाकर करूँगा, और देखूँगा कि वे मिनिस्टर बनके आगे सरकार परस्ती कैसे करते है।[16] राम दयालु सिंह जैसे लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित भूमिहार नेता भी स्वामी जी को गणेश दत्त के पक्ष में प्रभावित नहीं कर सके।[17]

स्वामी जी मुँगेर तो गये किन्तु सभा-स्थल पर नहीं गये। गणेश दत्त के सभापतित्व में कार्य तो शुरू हुआ किन्तु सभा का सफल संचालन नहीं हो सका। स्वामी जी की अनुपस्थिति से प्रबल प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई। सभा में हंगामा शुरू हो गया। भीषण अराजकता फैल गई। स्वामी जी को सभा-स्थल पर बुलाया गया। उन्होंने भीड़ को शान्त किया। गणेश दत्त को उनके निवास पर सुरक्षित पहुँचाया गया।[18]

इसके साथ ही भूमिहार ब्राह्मण महासभा नामक संगठन भी समाप्त हो गया।

स्वामी जी का अपनी बिरादरी के गणेश दत्त जैसे महान व्यक्ति से जैसा सम्बन्ध था, वही एक उदाहरण पर्याप्त है यह सिद्ध करने के लिए कि उनके दिल और दिमाग में जातिवाद की भावना नहीं थी। किन्तु अभी कुछ और भी उदाहरण हैं, जिनसे स्पष्ट हो जाता है, कि स्वामी जी जातिवादी या सम्प्रदायवादी नहीं थे।

भारत में ब्रिटिश शासन काल में 18वीं सदी के नवें दशक में (1786-93ई0) जमींदारी प्रथा शुरू हुई। जमींदार भूमिपति थे और वे मौज तथा मस्ती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का जीवन बिताते थे।

स्वामी जी जमींदारी प्रथा के विरोधी थे। वे जमींदारों को किसानों का सख्त शोषक तथा दुश्मन और ब्रिटिश सरकार का समर्थक मानते थे। किसानों की दशा दयनीय थी। आजादी के पहले भारतीय किसान जमींदारों के जुल्म और उत्पीड़न से दबे हुए थे। उनकी आर्थिक और राजनीतिक स्थिति बंधुआ के समान छोटे-बड़े जमींदारों पर निर्भर थी। बटाईदारी प्रथा तथा काश्तकारी और लगान बन्दी का इतना कड़ा रिवाज सदियों से चला आ रहा था कि जोतने, कोड़ने और उपज पैदा करने के बावजूद भी किसान न तो जमीन का मालिक था और न ही अपनी फसल का। अच्छे-अच्छे किसानों को जमींदारी कोड़े का सामना करना पडता था। तथा कई जगहों में जुल्मी जमींदारों को लगानबन्दी के आगे फसल हो या न हो, किसान को कर्ज लेकर या अपनी सम्पत्ति को बेचकर जमींदार को भरपाई लगान अदा करना पड़ता था।[19]

स्वामी जी ने इस दूषित जमींदारी प्रथा का घोर विरोध किया। जमींदारों को बिना हर्जाना दिये इसे समाप्त करने के लिए प्रचार किया गया। कुछ जमींदार इस प्रथा की रक्षा के लिए स्वामी जी के लिए कुछ भी देने या करने को तैयार थे। किन्तु स्वामी जी अपने रास्ते से एक इंच भी इधर उधर नहीं हटे। ये उल्लेखनीय है कि जमींदारों में बहुत अधिक संख्या तो भूमिहारों की ही थी। स्वामी जी समृद्धशाली भूमिहार ब्राह्मणों के आकर्षक महलों में ठहरना और अच्छा स्वादिष्ट भोजन करना नहीं चाहते थे। उन्हें साधारण किसानों के साधारण घरों और झोपड़ियों में ठहरना और साधारण, रूखा-सूखा भोजन करना अधिक अच्छा लगता था। स्वामी जी जमींदारों और जमींदारी प्रथा का विरोध करते रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जमींदारी प्रथा समाप्त कर ही दी गई।[20]

स्वामी जी ने किसानों में ही भगवान को देखा और उनके सुख तथा उनकी सुविधा के लिए वे आजीवन संघर्षरत रहे। वे अपने किसान रूपी भगवान का अपमान किसी भी दशा में सहने के लिए तैयार नही थे।[21]

यहां यह भी स्मरणीय है कि सभी किसान केवल भूमिहार ही तो नहीं थे बल्कि उनमें भिन्न-भिन्न जातियों के लोग थे जो खेती से जुड़े हुए थे।

बिहार में श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में 1937 ई0 में पहला मंत्रिमंडल बना था। यह मंत्रिमंडल करीब ढाई वर्षों तक (1937-39 ई0) कायम रहा। श्री कृष्ण सिंह भूमिहार ही थे लेकिन स्वामी जी उन की नीति एवं कार्यों के भी कटू आलोचक थे।

स्वामीजी महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी एवं देश भक्त थे। उनके साथ उनका 14 वर्षों तक (1920-34ई0) घनिष्ठ सम्बन्ध बना रहा। स्वामी जी कांग्रेस के भी सक्रिय एवं निष्ठावान सदस्य थे। वे राष्ट्रीय आन्दोलन में भी प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे तीन बार जेल गये - 1921, 1930 और 1940 में और 4 -1\2 वर्षों तक जेल की सभी यातनाओं को बड़े धैर्य के साथ सहे। लेकिन गांधी भूमिहार नेता नहीं थे, वे तो राष्ट्रीय नेता थे। कांग्रेस भूमिहारों की संस्था नही थी बल्कि राष्ट्रीय संस्था थी। राष्ट्रीय आन्दोलन भूमिहारों का आन्दोलन नहीं था बल्कि देश को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करने के लिए स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन था।

फिर भी जब गांधी और कांग्रेस की नीति एवं कार्य किसानों और गरीबों के लिए लाभदायक सिद्ध नहीं हुए तो स्वामी जी गांधी और कांग्रेस दोनों से अलग हो गये। 1934 ई0 में 14 वर्षों (1920-34ई0) की बनी-बनाई गांधी भक्ति समाप्त हो गई।[22]

कुछ समय के बाद (सितम्बर 1948) उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता भी छोड़ दी।

स्वामी जी छुआछुत मानते थे, लेकिन स्वास्थ्य और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सफाई के आधार पर न कि जाति या वर्ग के आधार पर। वे स्वयं कहते थे - "मैं जाति या वर्ण के चलते नीच-ऊंच या स्पृश्य-अस्पृश्य किसी को नहीं मानता। मुसलमानों या अन्य धर्मवालों को अस्पृश्य मानने की नादानी भी मैं नहीं कर सकता हूँ।[23] यदि कोई भूमिहार ब्राह्मण या अन्य ब्राह्मण ही गन्दा रहता था या दुराचारी होता था तो स्वामी जी ऐसे व्यक्ति का भी छुआ या बनाया हुआ भोजन नहीं कर सकते थे। कोई भी व्यक्ति उनकी सुराही को जुठे या गन्दे हाथों से नहीं छू सकता था।[24] स्पष्ट है, कि जाति की अपेक्षा सफाई पर उनका ध्यान अधिक था। धीरे धीरे छुआछूत की भावना में भी उदारता आने लगी।

1937 ई0 के प्रारंभ में 1935 के अधिनियम के अन्तर्गत प्रान्तीय विधान सभाओं के लिए चुनाव होने को था। बिहार में कांग्रेसी उम्मीदवारों को मनोनीत करने के लिए प्रान्तीय कांग्रेस की कार्यकारिणी पर भार सौंपा गया। स्वामी जी भी कार्यकारिणी में एक सदस्य थे।

स्वामी जी के विचार से तीन शर्तें उम्मीदवार के लिए आवश्यक थीं-जो जेल गया हो या जुर्माना दिया हो या अन्य तरीके से तबाह-बर्बाद हुआ हो, जो गरीब या गरीबों का शुभचिंतक हो और जो किसान सभावादी थे। उम्मीदवार के लिए पहली शर्त अनिवार्य थी। किन्तु कार्यकारिणी में स्वामी जी अकेले इस विचार के थे। उसमें तो जो नाटक शुरू हुआ उसे देखकर स्वामी जी हैरान थे। उम्मीदवार के चयन में किसी सिद्धान्त पर जोर नहीं दिया गया। कहीं जाति-पाति की बात चलती थी तो कही अपने प्रिय पात्रों और सगे सम्बन्धियों की।[25क]

स्वामी जी ने ऊब कर कार्यकारिणी से त्याग पत्र दे दिया। इस से राजेन्द्र प्रसाद बहुत दुखी हुए। उन्होंने स्वामी जी को एक पत्र लिखा। स्वामी जी ने जबाब दिया कि आपकी दलीलों का मुझ पर कोइ असर नहीं हुआ लेकिन यदि आप सोचते हैं कि मेरे इस्तीफे का असर कांग्रेस की सफलता पर पड़ेगा तो मैं इस्तीफा वापस ले लेता हूँ।[25ख]

स्वामी जी के कुछ शुभचिन्तकों की इच्छा थी कि वे चुनाव में खड़े हों। स्वामी जी ने उत्तर दिया - मैं ऐसे कामों के लिए सर्वथा अयोग्य हूँ। मुझे तो जनता में काम करना है। स्वामी जी यह कहावत चरितार्थ की कि 'न रहेगा बांस, बाजेगी न बांसुरी।' उन्होंने मतदाता सूची से ही अपना नाम हटवा लिया ताकि उन पर उम्मीदवार होने के लिए किसी का दबाव न पड़े। इतना करने पर भी जब स्वामी जी के साथ प्रान्तीय कांग्रेस नेताओं और मन्त्रियों का मतभेद हुआ तो वे कहने लगे कि स्वामी जी को मन्त्री नहीं बनाया गया तो वे कांग्रेस का विरोध करने लगे।[25ग]

1940 ई0 में स्वामी सहजानन्द और सुभाष चन्द्र बोस दोनों ही कांग्रेस की समझौतावादी नीति के विरुद्ध थे। कांग्रेस ब्रिटिश सरकार से समझौता करना चाहती थी। इन दोनों नेताओं ने इसका विरोध किया। रामगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर स्वामी जी और बोस के संयुक्त प्रयास से एक शानदार समझौता विरोधी सम्मेलन हुआ था। कांग्रेस में कई प्रभावशाली भूमिहार नेता थे किन्तु स्वामी जी किसी भूमिहार नेता से प्रभावित नहीं हो सके।[26]

राज्य सभा के एक भूतपूर्व सदस्य ब्रजकिशोर सिंह ने दो घटनाओं का उल्लेख किया है, जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सन्यासी और जाति सेवक सहजानन्द बहुत पीछे छुट गये हैं। अब कोई नया सहजानन्द दिखाई पड़ रहा है।

स्वामी जी ब्रज किशोर सिंह के साथ (1945-46) वर्तमान नवादा जिला के बारसली गंज क्षेत्र से कही जा रहे थे। स्वामी जी को देख कर कुछ लोगों ने आवाज दी, वे निकट आये और कुछ खाने-पीने का सामान दिये। स्वामी जी उन्हें बड़े सौहार्द और प्रेम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से गले लगया वे मुसलमान थे। स्वामी जी ने इन मुसलमानों के अपनापन के भाव को बहुत सराहा। वे बोले - "दूसरी जगह की घटनाओं के लिए हम इन्हें क्यों जिम्मेदार समझें ? ये हमारे हैं, हमारे रहेंगे।" उस समय देश का वातावरण विषाक्त हो गया था। जहां तहाँ दंगे-फसाद हो रहे थे।[27]

दूसरी घटना दो वर्षों के बाद की है 1947-48 में जिला बोर्डों का चुनाव हो रहा था। कांग्रेस ने एक गैर भूमिहार को अपना उम्मीदवार खड़ा किया। उसके विरोध में एक शक्तिशाली भूमिहार नेता स्वतन्त्र उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए। स्वामी जी ने कांग्रेस उम्मीदवार का पक्ष लिया और उसी की जीत भी हुई।[28]

स्वामी जी ने जब भूमिहार महासभा का विकृत रूप देखा तो उसके प्रति उनकी कोई रूचि न रही। उन्होंने इसके दोषों को देखा। इसके माध्यम से सामन्त जमींदार लोग अपना स्वार्थ पूरा करते थे। सरकारी अफसरों की राजभक्ति करते थे और इसके द्वारा मत प्राप्त करने की कोशिश करते थे। स्वामी जी इन दोनो बातों के विरूद्ध थे। जब 1929 मे इस सभा की समाप्ति हो गयी तो उन्होने प्रशन्नता जाहिर की। उन्होने कहा- "यह ठीक ही है कि सभा सदा के लिए भंग हो गयी। अच्छा ही हुआ। उससे भलाई तो कुछ होनी न थी किन्तु बुराई हो जाया करती थी। दस वर्षों तक सभा का नाम लेने का किसी को हिम्मत होनी न थी। लोग जानते थे कि यदि उन्होंने सभा का नाम लिया तो मैं अवश्य विरोध करूंगा और उनकी एक न चलने दूँगा और उसे फिर भंग कर दूँगा। अब सब को यह भी पता लग गया है कि मुझे अब उससे कोई वास्ता नहीं है और उसमें मुझे जाना ही नहीं है"।[29]

एक जगह स्वामी जी ने साफ लिखा है - आज तो जातीय संस्थांएं एकमात्र कुछ गिने-चुने प्रतिष्ठित, चलते-पूर्जे तथा धनिकों के राजनीतिक स्वार्थ साधन की सामग्री बन गई है, और खूबी यह है कि खुलम खुल्ला तो वहाँ समाज-सुधार की बातें की जाती हैं लेकिन चुपके-चुपके राजनीतिक स्वार्थ-साधन का षड्यंत्र किया जाता है। जाति संगठन किसानों को फँसाने और बाँटने का जाल बन गया है।[29क]

1933 ई0 में जातिप्रथा के आधार पर स्वामी जी को प्रभावित करने के लिए एक ऐसी सभा बुलायी गई जिसमें भूमिहार ब्राह्मणों की संख्या अधिक थी। जातीय समीकरण बैठाने के उद्देश्य से यह सभा बुलायी गई थी। किन्तु सभा में आयोजकों का उद्देश्य पूरा नहीं हो सका। जाति के आधार पर स्वामी जी को प्रभावित नहीं किया जा सका।

1934 में जनवरी के मध्य में बिहार में भयंकर भूकम्प हुआ था। धन जन की बहुत क्षति हुई थी। स्वामी जी भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जी जान से जुड़ गये। लेकिन भूकम्प पीड़ितों में सभी भूमिहार ही तो नहीं थे बल्कि सभी-जातियों के लोग थे।

दूसरी ओर जमींदारों के एजेंट चाहते थे और प्रयत्न करते थे कि भूकम्प पीड़ितों को राहत में जो रुपये पैसे मिलते थे वे उन रुपये पैसो को लगान के बकाये में दे दें। यह जान कर स्वामी जी को अपार दुख हो रहा था।

स्वामी जी ने जातीय या जाति सुधार आन्दोलन चलाया था जातिवादी आन्दोलन नहीं। दोनों शब्दों में मौलिक भेद है। जातीय आन्दोलन जाति सुधार या सामाजिक-सांस्कृतिक विकास से जुड़ा है जबकि जातिवाद या जातिवादी ऐसा शब्द है जिस का अधिक प्रयोग राजनीतिक अर्थ में होता है। जिस समय स्वामी जी ने जातीय आन्दोलन चलाया था उस समय इस तरह के आन्दोलन सारे देश में चल रहे थे। ब्राह्मण सभा, भूमिहार महासभा, कायस्थ सभा, राजपूत महासभा, अग्रवाल महासभा आदि जैसे अनेक संगठन अपनी अपनी जाति में सामाजिक और शैक्षणिक सुधार को लेकर चल रहे थे। हर जाति के बड़े-बड़े बुद्धि जीवी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा नेता जातीय संगठन से जुड़े हुए थे। कायस्थ सभा तो बहुत पुरानी और प्रभावशाली संस्था थी। डा0 राजेन्द्र प्रसाद, डा0 सच्चिदानन्द सिन्हा जैसे व्यक्ति भी इस संस्था से सम्बन्धित थे। डा0 राजेन्द्र प्रसाद तो इस संस्था के कभी अध्यक्ष भी रह चुके थे। कुछ बड़े-बड़े राजपूत नेता भी राजपूत महासभा से जुड़े हुए थे। किन्तु इन सभी व्यक्तियों को जातिवादी नहीं कहा जाता है।

स्वतन्त्र भारत में जातिवाद का अधिक राजनीतिक उपयोग किया जाने लगा है। जातीयता के आधार पर उम्मीदवार का चयन होता है और मतों की माँग की जाती है। किन्तु हम देख चुके हैं कि इस दृष्टि से स्वामी जी बहुत ऊपर थे। उन्होंने कभी भी अपनी जाति के उम्मीदवार का जातीयता के आधार पर न तो स्वयं समर्थन किया और न अप्रत्यक्ष रूप से ही मदद दी।

असल में 19वीं शताब्दी में भारतीय महाजागरण (रिनासांस) की कम्पन तीन स्तरों पर एक ही साथ शुरू हुई थी। अखिल भारतीय स्तर, हिन्दू स्तर और जातीय स्तर। अखिल भारतीय जागरण, हिन्दू जागरण और जातीय जागरण, तीनों एक ही इतिहास शक्ति की अभिव्यक्ति के तीन रूप मात्र हैं। राष्ट्रीय मुद्दों पर तीनों एक साथ काम करते थे। कभी कभी तो इनका रंगमंच भी सम्मलित था और उन्हें व्यवहार में अलग करना मुश्किल था। प्रायः प्रत्येक नवजाग्रत व्यक्ति अपनी जाति के बारे में सचेत था, साथ ही अपने धर्म के बारे में और अपने देश के बारे में भी वही सोचता था। और कुछ दूसरा नहीं। बिना ऐतिहासिक दृश्य को समझे उस काल में जातीय आन्दोलनों का स्वरूप नहीं समझा जा सकता है। सारे जातीय आन्दोलन चाहे स्वामी जी का आन्दोलन हो या कोई आन्दोलन महाजागरण की ही निचले स्तर की अभिव्यक्तियाँ हैं।[31]

यह ठीक है कि स्वजाति के उत्थान के लिए स्वामी जी के दिल में दर्द था। उन्हें इस बात से दुख था कि ब्रह्मर्षियों के बंशज इतना दीन-हीन क्यों हो गये हैं। वे चाहते थे कि इनका बौद्धिक और आत्मिक विकास हो। ये वास्तविक ब्राह्मण और किसान बनें। इस कार्य में सफलता भी मिली।

धीरे-धीरे उनकी सेवा का विस्तार होने लगा। उनका प्लैटफौर्म बढ़ने लगा और उस पर सभी जातियों और वर्गों के लोग आने लगे। स्वामीजी का जीवन क्रान्तिकारी का सर्वोत्तम उदाहरण है। वर्ण से वर्ग संघर्ष की ओर, गांधीवाद से मार्क्सवाद की ओर, भूमिहार ब्राह्मण को ब्राह्मणों के समकक्ष स्थापित करने वाले एक निर्भीक नेता से भारत के दलित-पीड़ित किसानों के सब से प्रमुख प्रवक्ता के रूप में उभरने वाले जन नायक के रूप में उन के सम्पूर्ण जीवन में हम संघर्षशील क्रान्तिकारी परिवर्तन का एक आद्वितीय स्वरूप का दर्शन करते हैं।[32]

जातीयता के प्रश्न पर प्रो0 अमरेन्द्र ठाकुर के विचार भी उल्लेखनीय हैं। सरकारी दस्तावेज के एक अंश तथा ब्राह्मणों की द्वेषात्मक प्रतिक्रिया से उत्पन्न तत्कालीन रचनाओं के आधार पर कई लोंगो ने स्वामी जी पर जातीयता का अभियोग भी लगा दिया है। यह गलत निष्कर्ष एक ही स्त्रोत पर निर्भर करने का प्रति फल है और ऐतिहासिक तथ्यों से दूर होने का कारण है। अगर सारे स्त्रोतों की समीक्षा के पश्चात् कोई निष्कर्ष निकाला जाता तो निश्चय ही अन्य लोगों की तरह ये भी इस ऐतिहासिक निष्कर्ष पर पहुँचते कि स्वामी जी का वह प्रयास सिर्फ भूमिहारों को मात्र अधिकार दिलाना नहीं था बल्कि समाज के हर वैसे वर्ग को मुनासिब रिआयत दिलाना था जो अनाधिकृत रूप से ब्राह्मणों द्वारा स्थापित शोषणात्मक सामाजिक व्यवस्था से पीड़ित थे।[33]

स्वामी जी ने याचक ब्राह्मणों की जीविका के आधार - पुरोहिती - पर प्रहार किया था। उन्होंने अपनी शोधपूर्ण पुस्तकों को सरल भाषा हिन्दी में लिखा। अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्व साधारण इन पुस्तकों को पढ़कर वास्तविक स्थिति को समझने लगे। इससे याचक ब्राह्मण की मान-मर्यादा में भी कमी होने लगी। स्वाभाविक ही वे बौखला गये और उन पर जातीयता सहित किस्म किस्म की अनर्गल लांछन लगाते रहे।[34]

स्वामी जी सन्यासी होते हुए जीवन भर समाज में संघर्षरत रहे। लेकिन उन्होंने कभी संघर्ष संघर्ष के लिए नहीं किया। सभी संघर्षों में उनका कोई न कोई लक्ष्य रहता था। वह लक्ष्य ऊंचा और कल्याणकारी होता था। सभी संघर्षों के मूल में अन्याय, अत्याचार, शोषण, विषमता जैसी बुराइयों का प्रतिरोध करना था।

स्वामी जी के सहयोगियों में केवल भूमिहार ही नहीं थे बल्कि भिन्न-भिन्न जाति के लोग थे। वे तो ऋषि थे - महा मानव थे। उनका न कोई सम्प्रदाय था, न कोइ क्षेत्र और न कोई जाति। उनमें लोक कल्याण की भावना कूट कूट कर भरी हुई थी। उन्हें गरीबवादी कहा जाय तो इस में कोई अत्युक्ति नहीं होगी। वे गरीबों के तन-मन-धन से शुभ चिन्तक थे। उनके एक सहयोगी ने उन्हें दलितों का क्रान्तिकारी सन्यासी कहा है।[35]

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी उन्हें दलितों का सन्यासी कहा है। उन के ही शब्दों में स्वामी जी 'निज़ से बिरत और सकल मानवता के हित में अनुरत थे। अपने कदमों से मणि, मुक्ता, स्वर्ण, रजत ठुकराते थे।[36]' एक अन्य लेखक का मत है कि स्वामी जी में ऋषि और कृषि का समन्वय था और वे शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध कालाग्नि रुद्र थे।

श्री चन्द्रिका राम नामक एक प्रसिद्ध दलित नेता के मतानुसार स्वामी जी के विचार में संकीर्णता नहीं थी।उनके आदर्श एक देशीय एवं एक जातीय नहीं थे। उनके हृदय में सभी के लिए आह थी। सभी के लिए दर्द था।[37]

बहुत से पीड़ित लोग चाहे वे किसी जाति और धर्म के हों स्वामी जी और उनके आश्रम पर पूरा विश्वास करते थे और स्वामी जी उनको राहत देने या दिलवाने की कोशिश करते थे। वास्तव में स्वामी जी किसी भी प्रकार के प्रलोभन और संकीर्ण स्वार्थ से मुक्त एक आदर्श मानव थे और उनकी साधना का लक्ष्य था, जीवित भगवानों को चाहें वे किसी भी जाति, वर्ग, वर्ण अथवा धर्म के क्यों न हों, सब प्रकार की संकीर्णताओं और अत्याचारों से उन्मुक्त करना था।[38]

स्वामी जी का जीवन त्याग, तपस्या, सेवा और संघर्ष का काव्य है। उनका हृदय विशाल था, विचार उदार थे। चरित्र निर्मल था और प्रतिभा बहुमुखी थी। वे कर्मयोगी थे। उन्होंने अपने सिद्धान्त के साथ कभी भी किसी के साथ समझौता नहीं किया गलत बात होने पर किसी को भी खरी खोटी भी सुना देने में उन्हें हिचक नहीं थी। चाहे वह कैसा भी उच्च पदस्थ व्यक्ति हो। उनके एक सहयोगी ने तो यहाँ तक कह दिया है कि उस पर भी दण्ड प्रहार करने में चुकने वाले वे जीव नहीं थे और गीता हृदय में तो कर्मकांडियो के ईश्वर भी पिट ही गये हैं।[39]

आजकी स्थिति क्या है ? जातिवाद और भ्रष्टाचार के समुद्र में देश-विशेष बिहार-आकंठ डुबा हुआ है। चरित्र पर संकट के बादल छाये हुए हैं। भारतीय संस्कृति पर अप संस्कृति का प्रहार हो रहा है। अश्लील गाने और अंग प्रदर्शन मनोरंजन के साधन बन रहे है। नैतिक और आध्यात्मिक मर्यादाएं शिथिल हो रही है। केन्द्रीय शिक्षा माध्यमिक बोर्ड भारत में संस्कृत के अध्ययन को महत्वपूर्ण नहीं समझता है तो सर्वोच्च न्यायालय ने इसे महत्वपूर्ण बताया है। अधिकांश नेताओं को जनहित की अपेक्षा अपनी कुर्सी और अपने पद के लिए अधिक चिन्ता है।

ऐसे समय में स्वामी सहजानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सिद्धान्त एवं व्यवहार का अध्ययन और चिन्तन प्रांसंगिक है - बहुत ही प्रासंगिक है। श्री योगेन्द्र शर्मा, मुक्ति संघर्ष नामक साप्ताहिक और कम्युनिस्ट मासिक के सम्पादक ने लिखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार के अमानुषिक बर्बर काण्डों से बरबस स्वामी जी की याद आ जाती है। यदि आज वे जीवित होते तो इन जघन्य सामन्ती नर मेंधों की आग में हाथ सेकने वाले नाराधम जाति वादी राजनीतिज्ञों की कुटिल चालों को विफल कर सभी जातियों और सम्प्रदायों की शोषित-पीड़ित जनता को एकताबद्ध करने तथा पूरे ग्रामीण समाज के जनवादीकरण के हमारे संघर्ष को अद्धितीय रूप से प्रेरित और अनुप्राणित करते।[40]

एक विद्धान का तो मत है कि स्वामी जी द्वारा संचालित किसान आन्दोलन मुख्यतः उसी जाति के जमींदारों के विरुद्ध था इसके अलावा जिस व्यक्ति ने सांसारिकता के बन्धन से किशोरावस्था में ही अपने को मुक्त कर लिया था वह सन्यासी किसी जाति के बन्धन में नहीं बंध सकता था।[41]

स्वामी सहजानन्द आगामीं अनेक दशकों तक अप्रासंगिक और पुराने नहीं हो सकते। भारतीय अर्थनीति और राजनीति में उनकी बातें अब भी प्रासंगिक हैं। वस्तुतः उनका प्रस्थान बिन्दु भारत की महान श्रम परम्परा होते हुए उनका गुणकर्म स्वभाव भारत की महान श्रम परम्परा की प्रकृति के निकट था। उनका व्यक्तित्व और चिन्तन उन्हें बुद्ध, महाबीर, नानक, कबीर और इतिहास की परम्परा से संयुक्त करता है जो अनुभव लब्ध सत्य को सत्य मानती थी, पोथी वाक्य को नहीं। वही अक्खड़ता, वही साहस, वही विद्रोह और वही आह्वान अनकी भाषा और जीवन में मिलता है जो उपयुक्त सन्तों में पाया जाता है।[42]

यदि सुक्ष्म रूप से विचार किया जाय तो स्वामी सहजानन्द कुछ दृष्टि से महात्मा गांधी से भी आगे थे। राजा राम मोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द की श्रेणी में स्वामी सहजानन्द की गणना भी की जा सकती है। इन महापुरुषो में रागद्वेष निहित स्वार्थ और किसी भी क्षेत्र मे वर्चस्व प्राप्त करने की लालसा का अभाव था। ये सभी मानवतावादी थे और बिना किसी भेदभाव के सबका कल्याण चाहते थे।

उपर्युक्त विवरण से बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती जातिवाद के प्रबल दुश्मन एवं विरोधी थे। इसके बाद भी यदि उन पर जातिवादी होने का कोई आरोप लगाता है तो वह अपनी अज्ञानता, संकीर्णता और मन्द बुद्धि तथा दुषित प्रकृति का परिचय देता है।

सन्दर्भ

1. रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, भारतीय समाज और संस्कृति, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 1992 पृष्ठ 74
2. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, मेरा जीवन संघर्ष, श्री सीतारामाश्रम, बिहटा (पटना) 1952 पृष्ठ 168
3. पी एन सिंह (सं0), समकालीन सोच, गाजीपुर, 1989 पृष्ठ 74
4. मेरा जीवन संघर्ष, पूर्वोक्त, पृष्ठ 170
5. वही
6. वहीं पृ0 169
7. वही पृ0 285

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8. वही पृ0169
9. अगुवादस्ता, साप्ताहिक, गाजीपुर 15 अक्टुबर,1988, पृ08
10. इन्द्र दीप सिंह, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, जन्म शताब्दी समारोह, स्मारिका, नई दिल्ली,1989, पृ0 47
11. मेरा जीवन संघर्ष, पूर्वोक्त, पृ0 194
12. रास बिहारी राय शर्मा, स्वामी सहजानन्द सरस्वती (जीवनी), किसान सभा, बिहटा,1957, पृ0 62
13. वही, प62-63
14. मेरा जीवन संघर्ष, पूर्वोक्त, प0 331-33
15. वही पृ334
16. वही पृ337
17. वही
18. वही, पूर्वोक्त, पृ338
19. शंकर दयाल शर्मा, जो छोड़ गये वे भी रहेंगे (संस्मरण), अनुराग प्रकाशन, वाराणसी,1986, पृ0 25
20. शंकर दयाल शर्मा, पूर्वोक्त, पृ24
22. मेरा जीवन संघर्ष, पूर्वोक्त, पृ427
23. वही पृ0 209,
24. श्री वैघनाथ पांडये, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, व्यक्तित्व एवं कृतित्व (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध बिहार वि0 वि0) 1993, पृ83-84
मेरा जीवन संघर्ष, पूर्वोक्त पृ270
25. मेरा जीवन संघर्ष, पूवोक्त, पृ० 293
26. रामगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन और समझौता विरोधी अधिवेशन दोनों को लेखक ने एक स्नातक छात्र के रूप में स्वयं देखा था।
27. ब्रज किशोर सिंह, ब्रह्मर्षि सन्देश, कानपुर, मार्च 1986, पृ० 33
28. वही
29. मेरा जीवन संघर्ष, पूर्वोक्त, पृ0 338-39
31. कुबेर नाथ राय, महाजागरण के अन्तिम शलाका पुरुष, भूमेश्वर सन्देश, अंक 18, 19, लखनऊ ,1991 पृ० 11
32. त्रिवेणी शर्मा सुधाकर, दलितों का क्रान्तिकारी सन्यासी स्वामी सहजानन्द सरस्वती, मुक्ति संघर्ष, नई दिल्ली, 26 जून 1994 ई० पृ11
33. स्वामी सहजानन्द सरस्वती ओंकार से हुँकार तक, राहुल प्रेस, पटना,1990 पृ5
34. वही, पृ40-41
35. त्रिवेणी शर्मा सुधाकर, मुक्ति संघर्ष, पूर्वोक्त, पृ12-13
36. ब्रह्मर्षि सन्देश, कानपुर, मार्च 1986
37. श्री चन्द्रिका राम, गरीबों के नेता, स्मृति ग्रन्थ स० त्रिवेणी शर्मा सुधाकर, गया,1982, पृ० 123

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

38. डा० शिवमंगलराय, स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन और किसान समस्या, निवेदिता, स्वामी सहजानन्द सरस्वती महाविद्यालय पत्रिका, गाजीपुर, 1982, पृ० 28
39. किशोरी प्रसन्न सिंह, समृतिग्रन्थ, पूर्वोक्त,
40. समृतिग्रन्थ, पूर्वोक्त, पृ 70
41. डा0 रामनाथ शर्मा, निवेदिता, गाजीपुर, 1989, पृ 35
42. प्राचार्य कुबेर नाथ राय, स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, पत्रिका, गाजीपुर 1988, पृ 20

With Best Compliments

From

Jagatjit Industries Ltd

Whole Sale Depot (L-1)

508, Sethi Bhawan
7, Rajindra Place,
New Delhi - 110 008

Phone : 5719979
5716834

Head Office :—

9th Floor, Ashoka Estate
24, Bara Khamba Road,
New Delhi - 110 001

Phone : 3317027

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

METCHEM Canada Inc. Provides consulting and engineering services to the mining, metallurgical and steelmaking industries around the world. These services include feasibility study, design & engineering project and construction management, environment management, engineering, equipment procurement, contracting, turnkey construction start up and technical assistance during commissioning, training services and mine and plant management.

METCHEM currently enjoys an ongoing association with such prestigious companies in India as Coal India Limited, Kudremukh Iron Ore Company Limited, Essar Steel, National Mineral Development Corporation Limited, Steel Authority of India Limited and Uttar Pradesh State Mineral Development Corporation.

METCHEM's presence in India was initially established in the mid 1970s when it was appointed Mining Associate and Engineer Constructor by Kudremukh Iron Ore Company Limited on the US$630 million iron ore project in Karnataka State.

With its wide ranging expertise in engineering procurement and project management, **MET CHEM** is committed to an objective of sharing its technological know-how with its distinguished clients in India.

METCHEM Canada Inc,
425, Boulevard de Maisonneuve Ouest,
Suite 401,
Montreal, Quebec,
CANADA H3A 3G5
PHONE : (514) 288 - 5211
TELEX : 055-62093

VAISHALI INTERNATIONAL
MANAGEMENT AND RESOURCES (P) Ltd.
2, Yashwant Place,
Chanakpuri,
NEW DELHI - 110021.
PHONE : 672448, 6119172, 600045
TELEX : 031-72144 VIND IN &
031-72235 AGRI IN

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

RAJ EMBROIDERY
RZ-57/2, Gali No.7, Tughlakabad Extn.
New Delhi - 110019

SHAHNAZ EMBROIDERY
H.No. 127, Madan Giri Village,
New Delhi - 110062.

SAHIN EMBROIDERY
MADAN GIRI VILLAGE
NEW DELHI - 110062.

OBERAI INTERCRAFT
1/4959, Gali No. 4,
Balbeer Nagar Extn.
Shahdra, Delhi - 110032.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

कुछ उदगार : कुछ विचार

डा० योगेश्वर प्रसादसिंह 'योगेश

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का समाज हितकारी ।
मिला आप का पत्र, बहुत मैं होता हूँ आभारी ॥
संस्थापक अध्यक्ष दक्ष हैं श्री त्रिपुरारी राय ।
लाभान्वित जिनकी कर्मठता से है यह समुदाय ॥
स्वामी सहजानंद क्रान्ति के सुलगाये थे शोला ।
शोषक जमींदार का पत्थर दिल जिनसे था डोला ॥
दुष्ट फिरंगी का शासन होता था पानी-पानी ।
स्वामी सहजानन्द देश के स्वतंत्रता सेनानी ॥
ब्रह्मर्षि समाज को जिनने बारम्बार जगाया ।
गीता के प्रवचन को जिनने जनहित सरल बनाया ॥
कितने पंडित हुए पाठकर जिनका 'कर्मकलाप' ।
थे किसान आंदोलन के आधार बने खुद आप ॥
गये जहाँ भी जनता ने आदर से शीश झुकाया ।
स्वामी सहजानन्द राष्ट्र का महाभक्त बन आया ॥
थे किसान आंदोलन के वे नेता बहुत पुराना ॥
भारतीय संस्कृति के प्रेमी, सन्यासी का वाना ॥
उनका नाम नहीं सकती है प्यारी जनता भूल ।
सहज भाव उनके चरणों पर करती अर्पित फूल ॥
पूर्ण राष्ट्र, पूरे समाज पर जिनका सेवा-ऋण है ।
स्वामी जी से यह समाज आगे भी नही उऋण है ॥
स्वामी जी की प्रखर लेखनी, ओजमयी थी वाणी ।
स्वामी जी, इस भारत के सच्चा स्वतंत्र-सेनानी ॥
निरत पूर्ण करने में हम हैं उनका कारज शेष ।
शीश झुकाते आदर से उनको डा० 'योगेश' ॥

With Best Compliments
from
Gillette®
Indian Shaving Products Ltd.
34, Okhala Industrial Estate, New Delhi - 110020 Tel: 6830218, 6830723

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

PSI

offer you

a variety of following material testing machines

for excellence & perfection of your products

1. Universal Testing Machine, cap. 10 Tonnes to 100 Tonnes
2. Tensile Testing Machines, for metals, cap. 250 kg. to 10 Tonnes
3. Brinell Hardness tester, cap. 3000 kg.
4. Portable Brinell Hardness Tester
5. Rockwell Hardness Tester
6. Rockwell-cum-Brinell Hardness Tester
7. Poldi Hardness Tester
8. Impact Testing Machine for Izod and Charpy tests
9. Torsion Testing Machine for Wires, manual and electrically operated
10. Leaf Spring Testing Machine
11. Mounting Press, both Mechanical and Hydraulically operated
12. Specimen Leveller
13. Compression & Tension Force Gauges
14. Polishing Machines, single, double and triple discs models
15. Fatigue Testing Machine for metals, Contilever Rotating Bar Type (designed and developed by Hindustan Aeronautics Ltd., Bangalore)
16. "Erichsen" Cupping Testing Machine
17. Carbon and Sulpur-in-steel Determination Apparatus
18. Muffle Furnace and Hot Air Drying Ovens.
19. Extensometers, Mechanical & Electronic
20. Foundry (Moulding) Sand Testing Equipment
21. Spring testing Machine cap. 1 Kg. to 20 MT
22. Bend Test apparatus
23. Wire wrapping Test Machine
24. Load Cells & Dynamometer

Manufactured by :
TESTING MACHINES INTERNATIONAL
NEW DELHI

Sold & Serviced by :

P.S.I. SALES PRIVATE LIMITED
804, HEMKUNT HOUSE,
6, RAJENDRA PLACE,
NEW DELHI - 8
PH. 5710726, 5737240
TELEX 031-771093 DKT IN

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

M/S CASTLE DOUGLAS INDUSTRIES LIMITED

C-43, NEETI BAGH
NEW DELHI - 110 049
INDIA
PHONE : 663243
662834
6855712
FAX : 6851015

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती व्यक्तित्व और कृतित्व

— डा० शक्ति पद शर्मा

आधुनिक भारतीय इतिहास, दर्शन साहित्य, राजनीति एवं धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में स्वामी सहजानन्द सरस्वती को एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। स्वामी जी आधुनिक भारत के एक युग पुरुष थे। भारतीय इतिहास को गौरवपूर्ण बनाने में उन्होंने अहम् भूमिका निभाई। महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, पंडित जवाहर लाल नेहरू, डा0 राजेन्द्र प्रसाद, सरदार बल्लभ भाई पटेल, संत बिनोवा भावे, आचार्य कृपलानी, नरेन्द्र देव, राम मनोहर लोहिया आदि आधुनिक भारतीय इतिहास के महान नायकों की तरह ही स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने भारतीय स्वतंत्रता का संग्राम लड़ा और शताब्दियों से गुलाम भारत को आजादी दिलाई।

स्वामी जी यदि एक ओर इतिहास पुरूष थे तो दूसरी ओर एक महान दर्शनिक भी थे उनके एक हाथ में लाठी और दूसरे में चिन्तक की लेखनी रहती थी। युद्ध के मैदान में उनका नारा था "लठ हमारा जिन्दाबाद" दर्शन के क्षेत्र में उनका नारा था "तमसो माँ ज्येर्तिगमय"। महामान्य बाल गंगाधर तिलक की तरह उन्होंने भी गीता पर अपना भाष्य लिखा। उनका गीता हृदय भी बाल गंगाधर तिलक के गीता रहस्य की ही तरह काफी प्रसिद्ध हुआ। गीता हृदय मे मार्क्सवाद और श्रीमद्भागवत गीता की वाणी का मिलान किया गया है। दर्शन के क्षेत्र में उन्होंने कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग की अभूत पूर्व व्याख्या की है। स्वामी जी समाजवाद और कर्मवाद के महान दार्शनिक थे। समाजवाद, कर्मयोग आदि की तरह क्रांति सम्बन्धी दर्शन भी उनका काफी लोक प्रिय था। उन्होंने पहली बार भारत के इतिहास में भारत के सनायुतंत्र किसान को अपने दर्शन से जगाया और उन्हें भारतीय स्वतंत्रता की क्रान्ति में भागीदारी प्रदान किया। जब तक महात्मा गाँधी जैसें विचारक किसानों के हृदय तक नहीं पहुंच सके थे, स्वामी जी ने अपने विचार एवं दर्शन से किसानों का दिल जीत लिया था। किसानों और मजदूरों में मार्क्स और लेनिन की तरह स्वामी जी छाये हुए थे। इस प्रकार दर्शन और विचार को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ कर स्वामी जी ने भारतीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती एक दार्शनिक ही नहीं अपितु एक महान साहित्यकार भी थे। उन्होंने अनेक श्रेष्ठ साहित्यों की रचना की एवं पत्र पत्रिकाओं का कुशलता पूर्वक सम्पादन भी किया। उनका सबसे श्रेष्ठ एवं शोध ग्रंथ "ब्रह्म ऋषि वंश विस्तार" है जो एक प्रमाणिक ग्रंथ माना जाता है। ब्रह्म ऋषि वंश विस्तार के बाद उनका दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ कर्मकलाप है जो चौदह सौ पृष्ठों में लिखा गया है। इस महान ग्रंथ में स्वामी जी ने लिखा है, कि "गुरुवाई और पुरोहिती बपौती हो गई है। इसी से गुरु लोग भी लिख लोड़ा पढ़ पत्थर ही होते हैं। यदि कोई कुछ कर्मकाण्ड सीखने की धृष्टता भी करता है तो किसी ज्ञाता के पास जाना व्यर्थ समझ ऐरों गैरों से ही कुछ अनाप-सनाप सीख कर अनर्थ का कारण होता है। इस तरह हम देखते हैं कि दिन दहाड़े हिन्दु धर्म और उसके संस्कारों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्दयता पूर्वक बंद करने की प्रकिया दिनों दिन प्रवल ही होती जाती है। और हम लोग तटस्थ होकर तमाशा देखते है"। इसी ग्रंथ में आगे लिखते हैं कि " इसमें ऐसी पद्धति की नितान्त आवश्यकता है, जो आज कल की हिन्दी में लिखी जाय और वह भी इस विचार से की कर्मकाण्ड के ज्ञान से बिल्कुल शून्य हिन्दी और संस्कृति के जानकार भी पूरा-पूरा लाभ उठा सके।"

स्वामी जी के इन कथनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रकार वे भारतीय संस्कृति की मूल आधार कर्मकाण्ड की रक्षा में तत्पर थे। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपयोगिता को समझते थे। एक बार उन्होंने महात्मा गाँधी को जेल से छुड़ाने के लिए यज्ञ का अनुष्ठान किया था और यज्ञ पूरा होते होते गाँधी जी छोड दिये गये थे। स्वामी जी सन्यासी होते हुए भी साहित्य एवं कर्मकाण्ड की सेवा में लीन रहे। ब्रह्म ऋषि वंश विस्तार एवं कर्मकलाप के बाद दूसरी उनकी अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाएँ थी इनमें गीता हृदय, किसान सभा संस्मरण, मेरा जीवन, संघर्ष, किसान कैसे लडते हैं,झारखण्ड के किसान,किसान क्या करें, खेत मजदूर आदि अनेक पुस्तकों की रचनाएँ की। उन्होंने कई प्रमुख पत्र - पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया जिनमें भूमिहार ब्राह्मण (वाराणसी), लोक संग्रह (पटना)। इनका सम्पादन क्रमशः 1911-16 एवं 1922-24 तक सफलता पूर्वक किया। उनके प्रमुख लेख हूँकार (पटना), जनता (पटना) विशाल भारत (कलकत्ता) तथा कल्यांण (गोरखपुर) के योगाँक एवं ईश्वरांक में प्रकाशित हुए थे। अतः साहित्य के क्षेत्र में स्वामी जी की सेवा अविस्मरणीय थी।

इतिहास पुरूष, साहित्य के प्रणेता एवं महान विचारक स्वामी सहजानन्द सरस्वती राजनीति से भी काफी निकटता से जुडे हुए थे। जिस युग में स्वामी जी पैदा हुए थे वह युग भारत के राजनीतिक उथल-पुथल का काल था। 1857 की महान क्रान्ति ने स्वामी जी को काफी प्रभावित किया था। वीर कुंवर सिंह, रानी लक्ष्मी बाई आदि की गाथाओं ने उनके बाजुओं में फड़क पैदा कर दी थी। राजनीतिक जीवन में प्रवेश के पूर्व स्वामी जी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के विशम्भरपुर नामक गाँव में रहते थे। गाँवों में किसानों की दयनीय अवस्था, बीज, खाद सिंचाई के साधनों का अभाव, अवैज्ञानिक खेती, अकाल, बाढ और महामारियों से जुझते किसानों की दयनीय स्थिति ने उनके तन-मन को प्रभावित कर दिया था। इतना ही नहीं जमींदारों के अत्याचारों एवं बढती हुई लगान ने भी किसानों को रौद डाला था।

भारतीय किसान जो भारत की अर्थव्यवस्था का रीढ था उपेक्षित होकर जी रहा था। स्वामी जी ने उनके अन्दर की सोई हुई ताकत को जगाया और उन्हें भारत की राष्ट्रीयता की मुख्य धारा से जोड़ा। किसानों को राजनीति से जोडने के लिए उन्होंने 1927 ई0 में सितारामाश्रम की स्थापना की और पश्चिम पटना में किसान सभा की नीव डाली। 1929 ई0 में इसी सभा ने प्रान्तीय किसान सभा का रूप ले लिया। 1933 ई0 में वीहटा में किसान सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता स्वामी जी ने की। स्वामी जी के नेतृत्व में किसान आंदोलन बिहार में काफी तेजी से विकास करने लगा। उनके आंदोलन से भयभीत होकर 1934 ई0 में डा0 राजेन्द्र प्रसाद एवं डा0 श्रीकृष्ण सिंह स्वयं स्वामी सहजानन्द सरस्वती से मिल। डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने कांग्रेस कार्यकारिणी में स्वामी जी के विरूद्ध प्रस्ताव रखा। इस प्रकार के आचरणों से नाराज होकर स्वामी जी ने स्वयं कार्यकारणी से इस्तीफा दे दिया। स्वामी जी के नेतृत्व में 1935 में हाजीपुर में किसान सभा सम्मेलन हुआ। इस अधिवेशन में किसान सभा ने जमींदारी उन्मूलन का प्रस्ताव पास किया। सन्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1936 ई0 में अखिल भारतीय किसान सभा का आयोजन लखनऊ में किया गया। इस सभा की भी अध्यक्षता स्वामी जी ने की। 1938 ई० में त्रिपुरी में किसान सभा का अलग अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन की भी अध्यक्षता स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने ही किया। इस प्रकार किसानों को जगा कर इन्होंने शोषण, अत्याचार एवं अनाचार से लड़ना सिखाया। भूख एवं गरीबी के विरूद्ध भी इन्होंने किसानों को लड़ने का संदेश दिया। भारत किसानों का देश है और जब तक किसान स्वतंत्रता आंदोलन में भाग नहीं लेगें भारत स्वतंत्र नहीं हो सकता। स्वामी जी ने कांग्रेस अधिवेशन में किसानों को स्वतंत्रता में कूंद पड़ने के लिए ललकारा।

भारतीय राजनीति में कूद पडने के लिये स्वामी सहजानन्द सरस्वती को जिस घटना ने सबसे अधिक प्रभावित किया वह थी 13 अप्रैल 1919 जालियाँ वाला बाग की भंयकर नरसंघार की घटना। इस अमानवीय एवं हृदय विदारक घटना ने 1000 भारतीयों की जानें लीं। जबकि सरकारी ऑकडा केवल 379 लोगों की मृत्यु का ही दिखाया गया। इस पैशाचिक घटना में निहत्थे भारतियों पर जिसमें बच्चें बूढ़े और महिलाएँ भी शामिल थे 1650 गोलियाँ चलाई गई। स्वामी जी का करूण हृदय इस घटना से रो उठा। अब उन्होंने अंग्रेजों को भारत से निकालने का संकल्प कर लिया तथा इसी उद्देश्य से 6 दिसम्बर 1920 ई0 को सर्वप्रथम मौलाना मजहरूल हक के मकान पर गाँधी जी से मुलाकात एवं बातचित किया। महात्मा गाँधी की सलाह पर वे भोजपुर (सिमरी) चले आये एवं वहाँ 300 चर्खे चलवाने लगे। सन् 1921 ई0 में उन्हें राजद्रोह के अभियोग में कारावास का दण्ड मिला। 1923 ई0 में वे कारागार से मुक्त किये गये।

स्वामी जी का विद्रोही मस्तिष्क धीरे-धीरे गाँधी के विचारों से अलग हटने लगा। अब वे गाँधी जी का वैचारिक विरोध करने लगें तथा सुभाष चन्द्र बोस एवं आचार्य नरेन्द्र देव के विचारों का समर्थन करने लगे। यही कारण था कि 19-20 मार्च 1940 ई0 में जब रामगढ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो स्वामी जी ने महात्मा जी का खुलकर विरोध किया एवं सुभाष बाबू का समर्थन किया। इस प्रकार स्वामी जी उदारवाद से समाजवाद की ओर तथा गाँधीवाद से मार्क्सवाद की ओर बढने लगे। इस अधिवेशन के बाद स्वामी जी को पुनः तीन वर्षों के कारावास की संजा हुई। इस कारावास में हजारीबाग के सेन्ट्रल जेल में बन्दी बनायें गये। यहाँ इन्होंने गीताहृदय, किसान सभा के संस्मरण, मेरा जीवन संघर्ष आदि महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की। 1944 ई0 में कारागार से मुक्त होने के बाद इन्होंने आन्ध्रप्रदेश के बैजवाड़ा में 14-15 मार्च 1944 को किसान आंदोलन की पुनः अध्यक्षता की। 1944 ई0 तक स्वामी जी काफी सक्रिय रूप से भारतीय राजनीति से जुड़े रहे। इस समय इनके प्रमुख सहयोगियों में जयप्रकाश नारायण, डा0 राममनोहर लोहिया, पो0 एन0 जी0 रंगा, आचार्य नरेन्द्रदेव आदि महत्वपूर्ण वामपंथी नेता थे।

राजनीति में स्वामी जी बिल्कुल ही बालगंगाधर तिलक की प्रतिमूर्ति थे। इन दोनों नेताओं का जन्म एक ही ब्राह्मण वंश में हुआ था। स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन धार्मिक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अनुकरणीय है। स्वामी जी ने कोई धर्म बाद या सम्प्रदाय नहीं चलाया। उनका धर्म मानवधर्म था। मानव कल्याण, गरीबों, दलितों, अछूतों, एवं हर प्रकार के शोषितों का उद्धार ही उनके जीवन का लक्ष्य था। उनका कहना था कि "नत्वहंकामये स्वर्गः न चः पुर्नभवम्। कामयेहं दूःखतप्तानां प्राणि आर्तः नाशनम्"। सम्पुर्ण जगत सुखी हो, कष्टों से रहित हो,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शोषण का अन्त हो, यही उनकी इच्छा थी इसी कारण से धर्म के अफीम का त्याग करके इन्होंने कार्लमार्क्स के विश्व साम्यवाद का अनुशरण किया। यह एक महान आश्चर्य है कि त्रिदण्डी स्वामी होने के बावजूद भी इन्होंने कभी अपने को संकीर्ण धर्म के कचडे में नहीं डाला। संस्कृत और अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्धान स्वामी जी ने कर्मकाण्ड एवं शस्त्रार्थ में काशी के प्रकाण्ड पंडितों को हरा कर अपनी धाक जमा ली। गुरुवाई और पुरोहिती में एकाधिकार जमाए एवं कुण्डली मारे बैठें लिख लोडा पढ पत्थर ब्राह्मणें को इन्होंने उखाड फेका एवं धर्म का द्वार सबों के लिए खोल दिया। अब चण्डाल भी मन्दिरों में प्रवेश कर सकते थे। इस प्रकार धर्म के क्षेत्र में स्वामी जी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और राजाराम मोहन राय के ज्यादा निकट थे। इन्होंने धर्म का अर्थ सामाजिक बुराईयों का अन्त एवं स्वस्थ समाज की स्थापना बताया। जो श्रेष्ठ है, अनुकरणीय है, करने एवं धारण करने योग्य है वही सच्चा धर्म है। इन आदर्शों को स्थापित कर स्वामी जी ने धर्म को नई दिशा दी। व्यक्तिगत जीवन में स्वामी सहजानन्द सरस्वती शैव धर्म के अनुयायी थे। शिव के प्रति इस आस्था में उनकी अध्यात्मिक चेतना सदा जागृत रखा। जैसा कि हम जानते है शिव का अर्थ है कल्याणकारी एवं मंगलमय। शिव आम जनता के प्रतीक हैं वे सर्वहारा के पुज्य हैं जिनका कोई घर-द्वार, वेष-भूषा धन सम्पति से कोई लगाव नहीं है। जगत के कल्याण करने वाले, सर्पों की माला पहनने वाले, वस्त्र के नाम पर मृग चर्म धारण करने वाले, भाँग-धतूरा और भिक्षाटन से जीवन निर्वाह करने वाले नील कंठ स्वामी जी के अराध्य देव थे। शिव को आदर्श मानकर स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने जगत के कल्याण के लिए गौतमबुद्ध एवं महावीर की तरह अपना सब कुछ त्याग कर दिया।

स्वामी जी भारतीय संस्कृति के रक्षक एवं जनसेवक भी थे। शिक्षा व लेखन के क्षेत्र में उन्होंने एक ऐसी भाषा पर जोर दिया जिससे संस्कृत न जानने वाले भी उस ज्ञान से पूरा पूरा लाभ उठा सके। भारतीय संस्कृती के मूल आधार पर कर्मकाण्ड की रक्षा में वे काफी तत्पर थे। राष्ट्र भाषा हिन्दी की उपयोगिता को वे काफी महत्व देते थे। स्वामी जी ने उन दिनों देखा की समाज का अगुवा ब्राह्मण दो दलों में बँटा हुआ है। याचक एवं अयाचक। याचक दल का व्यवसाय मूलतः पुरोहितीं था। वेद विद्या रहित ढोगी तथा पाखण्डी हो चला था। तथा अयाचक ब्राह्मण अपनी वीरता से परशुराम, द्रोणाचार्य, पुष्यमित्र शुंग, पेशवा बालाजी बाजीराव आदि महान योद्धा तथा समाज परिवर्तकों की अहम् भूमिका निभाई थी। जिस कुल में कभी वशिष्ठ और लोकमान्य तिलक जैसे महान पंडित उत्पन्न हुए थे आज मोह ग्रस्त हो दिगभ्रामित हो गया था। उन्हें दिशा बोध कराने के लिए तथा उचित मार्ग पर लाने के लिए स्वामी जी ने ब्रह्म ऋषि वंश विस्तार एवं कर्मकलाप जैसे महान ग्रंथों की रचना की।

स्वामी जी भारत में किसान आंदोलन के जन्मदाता तथा बिहार में जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने वालों में सबसे पहले थे। गया, पटना तथा मुंगेर में छोटे-छोटे बहुत से जमींदार थे जो मध्यम वर्ग के किसानों का शोषण कर रहे थे। इसी वजह से उन्होंने जहानाबाद एवं बीहटा को अपना मुख्य कार्यालय बनाया तथा वहाँ से किसान आदोंलन का नेतृत्व करने लगे। वे किसानों के साथ मिल कर एवं उनके साथ काम कर एक सेना नायक के भाँति जमींदारों से मोर्चा लेते रहे। तथा किसानों को उनकी जमीन की बेदखली से बचाते रहें।

जमींदारों के शोषण से भी एक बड़ा शोषण भारतीय नारियों का हो रहा था। तिलक दहेज के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभाव में बहुत से लड़कियों का जीवन बर्बाद हो रहा था। उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया जाता था। दहेज प्रथा, एवं बेमेल विवाह, बाल विधवा आदि भयंकर सामाजिक महामारियाँ भारत के समाज में घुस आई थी जिनकी जडें काफी गहरी और विषैली हो गई थी। स्वामी जी ने जहर के इन पौधो को उखाडने का संकल्प लिया तथा जगह-जगह भाषण देकर, सभाओं का आयोजन कर, घर-घर जाकर लोगों को समझा बुझाकर तथा स्त्रियों को इन कूप रेखाओं से लडने की शिक्षा देकर इन महामारियों को दूर करने का प्रयत्न किया। वे जीवन प्रर्यन्त इन सामाजिक व्याधियों से लडते रहे। इस प्रकार कर्मयोगी, ब्रह्मज्ञानी एवं साधना के सरस्वती स्वामी सहजानन्द ने समाज को राजाराम मोहन राय की तरह ही आधुनिकता का मार्ग दिखाया तथा आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का कर्म जितना ही आकर्षक एवं महान था उनकी जीवनी भी उतनी ही आकर्षक एवं प्रेरणा दायक है। संसार के प्राय: सभी महान व्यक्तियों की तरह उनकी भी बाल्य अवस्था काफी तकलीफों से गुजरी। चन्द्रगुप्त मौर्य, चाणक्य, शेरशॉह, शिवाजी, नेपोलियन, हिटलर, मोसोलिनी, हुमायूँ, अकबर, रामकृष्ण परमंहश, राजाराम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती यहाँ तक की व्यास, बाल्मीकी, तुलसीदास, संत कबीर, सूरदास आदि महान विभूतियों के जीवन का अगर हम अध्ययन करें तो देखेगें की उनका बाल्यकाल काफी कठिनाइयों से गुजरा। जीवन से लडते-लडते इन महान विभूतियों ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही मानवता एवं राष्ट्र की अस्मीता की रक्षा करने में ही बीता दिया। इन्ही महान विभूतियों की तरह स्वामी सहजानन्द सरस्वती का भी जीवन काफी संघर्षमय था।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जन्म गाजीपुर जिले के देवा नामक ग्राम में 1889 ई0 के महाशिव रात्रि के दिन हुआ था। इस संबंध में यह स्मरणीय है कि इसी वर्ष अर्थात 1889 ई0 में ही भारत के एक और महान रत्न पंडित जवाहर लाल नेहरू का भी जन्म हुआ था। स्वामी जी कश्यप गोत्रीय जुझौतिया ब्राह्मण थे जो बुन्देलखण्ड से आकर गाजीपुर जिले में बस गये थे। वहाँ के भूमिहार ब्राह्मणों को अपने अनुरुप पाकर उनके पूर्वजों ने उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। स्वामी जी के पिता का नाम बेनी राय था जब स्वामी जी 3-4 वर्षों के थे उनके माता का भी देहान्त हो गया। इस प्रकार माता की ममता सर से उठ जाने के बाद उनका लालन-पालन उनकी मौसी ने किया। 16 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया परन्तु गौतम बुद्ध एवं महात्मा महावीर की तरह विवाह उनकों बाँध नही सका। विवाह के दो वर्षों बाद ही उन्होंने गृह तथा पत्नी का त्याग कर दिया। गृह त्याग कर युवक नवरंग राय जो बाद में सहजानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए काशी गये और वहाँ स्वामी सच्चिदानन्द गिरि के शिष्य बन गये। आगे चलकर इन्होंने पुज्य स्वामी अच्चुतानन्द सरस्वती से दिक्षा ली। इसके बाद वे सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। इन्होंने स्वयं किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया। शिक्षा दिक्षा समाप्त होने के बाद इनके जीवन की धारा में महान परिवर्तन आया। ऋषि शैभरी की तरह इनके जीवन का भी रूपान्तर हुआ। स्वयं स्वामी जी के शब्दों में "समष्टि रूप में समस्त समाज को ऊंचा उठाने को ही मैं समाज़ सेवा और सामाजिक कार्य मानता हूँ और यही मैने शुरू किया। इस लिए तो पीछे छोटे से समाज को छोड समंस्त देश के काम में कूद पडा। हाँ यदि उस समाज सेवा में कोई राजनीतिक दावपेंच अथवा औरों को दबाने की बात रहती या मनोवृति काम करती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो वह अवश्य ही निंदित या बुरी होती। मगर यह बात मैंने सपने में भी नहीं सोची।"

इस प्रकार स्वामी जी एक क्रान्तिकारी जोगी थे। रूढ़ियों से लड़ना उनका स्वभाव बन गया था। वस्तुतः वे जननायक थे और किसी भी वर्ग या जाति पर हो रहे अत्याचार को बर्दास्त नहीं कर सकते थे स्वामी जी पर कभी-कभी अज्ञानियों द्वारा जातिवादी होने के भी आरोप लगाये गये हैं जो सर्वथा गलत हैं। ऐसी महान विभूति सम्पूर्ण राष्ट्र, सम्पूर्ण मानवता और विश्व मात्र का होता है। भारत की इस महान विभूति, महान क्रान्तिकारी, श्रेष्ठ विचारक, समाजसेवी, लेखक, एवं मानवता के उद्धारक की मृत्यु 26 जून 1950 ई0 को 61 वर्ष की आयु में ही हो गयी। यह महान विभूति जो शिव का अंश था शिवत्व में समा गया।

WITH BEST COMPLIMENTS

From

Mohan Goldwater Breweries Ltd.

B-18, Phase II, Maya Puri
New Delhi - 110067
Ph : 540 4424, 540 6472

Regd. Office : Mohan Meakin Road
Daliganj, P.O.Box. 200
Lucknow 226007

Gram	:	GOLD WATER
Telex	:	535-469 MGB IN
Ph	:	73796, 72180, 71675
Fax	:	0522-72681

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय संकीर्णता एवं सहजानन्द का दर्शन

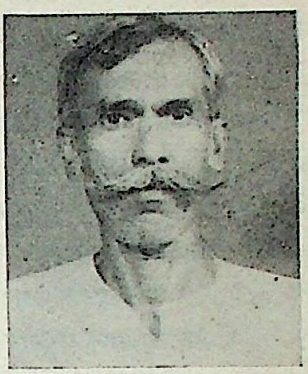

डॉ० योगेश्वर प्र० सिंह 'योगेश'

देवात्मा हिमालय के अंक में स्थित भारत भूमि सदा से देवताओं के लिए महिमा मण्डित रही है। पुराणों ने 'गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्याअस्तु ते भारतभूमि भागे' कहकर इसकी सराहना की। कभी विश्व-गुरु के पद पर प्रतिष्ठित यह देश समस्त विश्व को ज्ञानालोक से आलोकित करता था। किन्तु आज इसकी एकता-अखण्डता पर संकट के बादल छाए हुए हैं। 'सगच्छध्वं संवदध्वं' की वेदवाणी को विस्मृत हम खण्ड-खण्ड में बँट कर पतन के कारागार पर आसीन हैं। भ्रष्टाचार-पापाचार जैसे वैयत्किक दुर्गुणों का प्रचार-प्रसार तो हुआ ही जातीय संघर्ष की विभीषिका ने समस्त बुद्धिवादियों के समक्ष एक विकट प्रश्न चिन्ह उपस्थित कर दिया है। महात्मा बुद्ध की ज्ञान भूमि, महावीर की निर्वाण-भूमि और गाँधी की कर्म-आह्वान भूमि बिहार में जातीय नर-संहार ने देश के दिल को उद्धेलित कर दिया। अन्य राज्यों में भी जातीय उन्माद देश की अस्मिता को बर्बाद करने में संलग्न है। स्वामी सहजानंद की कर्मभूमि बिहार ही है। आजादी की लड़ाई में महात्मा गाँधी के उद्घोष पर स्वामी जी ने अपना समस्त जीवन देश सेवा के लिए उत्सर्ग कर दिया था। दलित-पीड़ित किसानों को एक नई दिशा दी थी और जमींदारो के विरुद्ध अपनी प्रखर आवाज उठाई थी। आज हम उनके विचारों को भी भूलते जा रहे हैं यदि देश को जातीय जहर की ज्वाला से बचाने में हम नाकामयाब हुए तो भविष्य में समस्त राष्ट्र की स्थिति भयावह हो जाएगी।

आज हमें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के साथ स्वर में स्वर मिलाकर सोचना है कि -

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ, विचारें आज मिलकर वे समस्याएँ सभी ॥

सृष्टि के प्रारम्भ में तो हम सब एक ही थे। मनु हमारे आदि पुरुष थे। 'मनोर्जातास्तु मानवाः'। मनु से उत्पन्न हम लोग मनुष्य कहलाए। वैदिक साहित्य में चारो वर्णों का प्रमाण है। सार्वभौम कल्याण एवं आत्मबोध के निमित्त पूर्वाचार्यों ने वर्णाश्रम व्यवस्था को सर्वश्रेष्ठ दायित्वपूर्ण धर्म माना है।

'ऊं ब्राह्मणोअस्य मुखमासीद् वाहू राजन्यः कृतः'
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदाभ्याम् शूद्रो अजायत ॥

(शुक्ल यजुर्वेद : पुरुष सूत्र)

एकात्म भाव से सम्पूर्ण समाज को एक राष्ट्र पुरुष के रूप में मान कर कार्यक्षेत्रों के सम्यक् संचालन के लिए वर्णव्यवस्था की कल्पना दृष्टिगोचर होती है। चारों वर्ण एक ही परमात्मा के शरीर के अंश हैं। न कोई बड़ा, न छोटा, एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता। समस्त मानव जाति परमात्मा के ही पुत्र हैं। इसीलिए तो उपनिषद् कहती है-

'श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः'

(श्वेता० उपनिषद् 2/5)

अर्थात् 'अविनाशी परमात्मा के समस्त पुत्र, जो दिव्य लोकों में निवास करते हैं, सुनें। यहाँ जन्मना सम्पूर्ण मानव जाति को ब्रह्म स्वरूप माना गया है। भगवान कृष्ण भी यही बात कहते हैं 'चातुर्वर्णयं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः' (गीता 4/93) अर्थात गुण और कर्मों के विभाग से चारो वर्ण मेरे द्वारा रचे गए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाभारत में भृगु ऋषि ने कहा है:

न विशेषोस्ति वर्णानां सर्व ब्राह्ममिदं जगत्
ब्राह्मणा पूर्वसृष्टादि कर्म भिर्वर्णतां गतम्।
(महा०, शा० प० 10/186)

अर्थात् सत्ययुग में सभी ब्राह्मण ही थे। उपनिषद् भी कहती है -

बह्म वा इदमग्र आसीदेकमेव तदेकं सन्न व्यभवत
तच्छेयोरूपमत्यसृजत् क्षत्रमास नैवण्यभवत् स
विशम सृजत।
स नैव व्यभदत् स शौद्रं वर्णमसृजत
(वृहदा0 उप0 1/4, 11, 12, 13)

पहले केवल ब्राह्मण था, उसने क्षत्रियों की सृष्टि की क्योंकि उसने उन्नति नहीं की। क्षत्रियों ने भी उन्नति नहीं की, उसने वैश्य की सृष्टि की। उससे भी उन्नति नहीं हुई तो शुद्र की सृष्टि हुई। यानी चारो वर्ण विकास के रूप में बने। महाभारत, गीता एवं स्मृतियों में चारो वर्णों के कर्त्तव्य निर्धारित हैं। ब्राह्मण को सर्वभूतों में मैत्री का दायित्व है।

मैत्री ब्राह्मण उच्यते उच्यते अथवा 'मैत्री सर्वेषु भूतेषु' आदि वाक्य मनुस्मृति में आए हैं। क्षत्रिय का कार्य रक्षण, वैश्यों का उत्पादन एवं शूद्रों का सेवाभाव है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि क्षात्र धर्म ब्राह्मण बनने की तैयारी का सोपान है। विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि बने। चारो वर्ण अपने कर्मों का दायित्व निर्वाह कर मोक्ष पा सकते 'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः' (गीता 14/48)

महाभारत स्पष्ट रूप से घोषणा करता है कि चारो वर्ण एक ही ब्राहमण वर्ण के विकसित रूप हैं।

एक वर्णं इदं पूर्व विश्वं आसीद युधिष्ठिर ।
क्रिया कर्म विभेदेन चातुर्वर्ण्य प्रतिष्ठितम
(महा0 शा0 पं0 180)

वर्णों का विभाजन त्रेतायुग में हुआ

वर्णानाम् प्रविभागाश्च त्रेतायां सम्प्रकीर्तितः
(वायु पुराण)

अत्रि संहिता में स्पष्ट उल्लेख है

जन्मना ब्राह्मणोज्ञेयः सस्काराद्विज उच्यते
विद्ययायाति वियुत्वं श्रोत्रियस्त्रिभिरेव च।
(अत्रि संहिता 1/40)

मनुस्मृति भी प्रकारान्तर से यही उद्घोष करती है:

'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते।'
वेदाभ्यासी भवेद् विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः
(मनुस्मृति 2/172)

यह निर्विवाद है कि स्मृति ने गुण-कर्म के आधार पर ही वर्णव्यवस्था का निर्णय दिया है। जन्मना जाति की मान्यता नहीं दी गई है। मनु महाराज ने स्पष्ट कर दिया है कि शूद्र कुल में उत्पन्न व्यक्ति गुण एवं अच्छे कर्मों से ब्राह्मण हो जाता है और ब्राह्मण निकृष्ट कर्म करके शूद्र हो जाता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥
(मनुस्मृति 10/65)

उदाहरणार्थ महर्षि जाबालि, विश्वामित्र, मातंग ऋषि, वाल्मीकि, वेदव्यास आदि का नाम प्रस्तुत है। हमारे यहाँ तो विदेशी जातियाँ, शक, हूण, पारसी आदि भारतीय वर्णव्यवस्था के सागर में समाविष्ट हो चुकी हैं। कोई भी व्यक्ति स्वाध्याय आदि शुभकर्मों से ब्राह्मण बन सकता है।

'स्वाध्यायेन जपै होमैस्तैविधेनज्यया सुतैः
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः
(मनु 2/28)

यद्यपि राष्ट्र रक्षण हेतु क्षत्रिय शस्त्र धारण करते हैं, किन्तु धर्म संकट एवं आपातकाल में आत्मरक्षार्थ एवं धर्म के लिए ब्राह्मण को शस्त्र-धारण करना चाहिए।
(मनुस्मृति 8/348)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी विवेकानंद ने कहा है "हमारी वर्णव्यवस्था का यही आदर्श है, उसका उद्देश्य है कि सम्पूर्ण मानवता को शनैः शनैः उस आध्यात्मिक पुरुष की ओर बढ़ाया जाय।"

महात्मा बुद्ध ने कर्म को प्रधानता दी। उन्होंने जन्मना वर्णवाद पर प्रहार किया।

'न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति वाम्हनो'

अर्थात

'न जन्म से कोई ब्राह्मण होता है न जन्म से शूद्र'

(धम्यपद)

बौद्ध, जैन, सिख और आर्यसमाज ने वर्णव्यवस्था को स्थान नहीं दिया। महाभारत में आचरण के आधार पर ही ब्राह्मण या शूद्र बन सकता है। महाराज युधिष्ठिर ने सर्प रूप नहुष से कहा है -

'सत्यं दानं क्षमाशीलं मानृशंस्यं तपो घृणा
दृश्यन्ते यत्र राजेन्द्र स ब्राह्मण इति स्मृतः'

(महाभारत वन पर्व)

'सर्वोदयं ब्राह्मणो लोके वृत्रेन तु विधीयते
वृत्ते स्थितस्तु शूद्रोअपि ब्राह्मणत्वं निगच्छति'

(महाभारत : अनुशासन पर्व)

अर्थात आचरण से ही सब ब्राह्मण बनाए जाते हैं, सदाचरण करने वाला शूद्र भी ब्राहणत्व को प्राप्त करता है।

वर्ण और जाति ?

वर्ण तो प्रारम्भ से ही चार हैं किंतु वर्ण का ही विकसित रूप जाति है। सम्प्रति भारत वर्ष में तीन हजार से अधिक जातियाँ हैं। मेरा मत हैं, वर्ण का एक अर्थ रंग भी होता है। महाभारत के शान्तिपर्व में भारद्वाज और भृगु का संवाद है। भृगु ने बाह्मण का श्वेत, क्षत्रिय का लाल, वैश्य का पीला और शूद्र का काला रंग बतलाया। आज भी मगध में एक कहावत है: 'करिओ ब्राह्मण, गोरा शूद्र, जिसे देख कर काँपे रुद्र'। इससे भी वर्णों का रंग विभाजन का ज्ञान होता है। प्रारम्भ में जाति को भी इसी आधार पर परिभाषित किया गया।

'आकृति ग्रहणा जातिः' (व्याकरण महाभाष्य)

यहाँ आकृति से बनावट अर्थ ज्ञापित होता है और इससे रंग भी ध्वनित होता है। यहाँ जाति शब्द सम्पूर्ण 'मानव' के लिए प्रयुक्त हुआ है। बाद में जाति एक वर्ग विशेष के लिए प्रयुक्त होने लगा। हरबर्ट रिजले ने इसकी परिभाषा दी - 'जाति परिवारों के समूह का एक संकलन है, जिनका कि एक सामान्य नाम है, जो एक पौराणिक पूर्वज, मानव या देवता से एक सामान्य वंश परम्परा की उत्पत्ति का दावा करते है।'

(रिजले एस0 एच0, दी पीपुल ऑफ इंडिया (1915) पृ0 5)

श्री बलंट ने कहा 'एक जाति अन्तर्विवाही या अन्तिविवाही समूहों का संकलन है जिसका एक सामान्य नाम है, जिसकी सदस्यता वंशानुगत है, जो अपने सदस्यों पर सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ प्रतिबंध लगाती है।'

ब्लंट ई.ए.एच. दि कास्ट सिस्टम इन नार्दन इण्डिया (1939) पृ0 5

इसी तरह केतकर और ब्राउन ने भी परिभाषा दी है। डा0 मजूमदार ने तो कहा कि 'जाति एक बन्द वर्ग है।' डेगफिन, सिवरसीन महोदय का मत है कि जाति की अवधारणा कर्मकांडीय व्यवस्था पर आश्रित है।

वास्तव में वर्ण वैदिक समाज के चार वर्ग हैं, जिनमे गतिशीलता थी अर्थात क्षत्रिय भी ब्राह्मण हो सकते थे। कर्म का महत्व पर जोर था। परन्तु जाति जन्मजात है। इसमें परिवर्तन सम्भव नहीं है। इतिहास में प्रारम्भिक दो ही जातियाँ थी आर्य और अनार्य। अब तो जाति में अनेक उपजातियाँ हो गई है। जातियों के सम्बन्ध का इतिहास शोध का विषय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय संकीर्णता का कारण

जनसंख्या बढ़ती गई, समाज में स्वार्थ के लिए संकीर्णता का आविर्भाव हुआ जो समस्त राष्ट्र की अखण्डता, भावनात्मक एकता के लिए बाधक सिद्ध हुई। ऊँच-नीच, छूआछूत, घृणा द्वेष नई सभ्यता की देन है। दूषित राजनीति ने आग में घी का काम किया है। भारतीय संविधान में सबको समानता का अधिकार है किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है। वर्ण, जाति, प्रजाति और उपजाति जातीय संकीर्णता का ही परिणाम है। आर्नोल्ड ट्वायनवी ने ठीक ही कहा कि, 'प्रजाति मानव समाज के उस विशेष वर्ग को कहते हैं जिसमें कोई विशेष गुण हो और वह वंशानुगत हो।' (इतिहास एक अध्ययन पृष्ठ 43)

'यदि जाति की परिभाषा श्रेणी के अन्तर्गत एक दल व्यवस्था के रूप में ली जाती है, जो सामान्यत: सगोत्रीय, सहभोगी तथा एक ही शिल्प के होते हैं, तो तुलनात्मक रूप से उत्तरकाल तक हमारे पास इसके अस्तित्व का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है। (ए एल. वाशम : अद्‌भुत भारत पृष्ठ 122)

जाति व्यवस्था पर स्वामी विवेकानंद के विचार दृष्टव्य हैं 'जाति व्यवस्था ठीक है। जीवन की समस्याएँ सुलझाने का वही एकमात्र स्वाभाविक उपाय है। मानव को अपना जाति-गुट निर्माण करना ही चाहिए। उससे आप मुक्त नहीं हो सकते। परन्तु उसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें विशेष अधिकार हो।' महर्षि अरविंद का कहना है कि 'हम यह भी अनुभव करते हैं कि जो रूप से स्वयं स्वतंत्र है उस दार्शनिक सत्य का समाज की वर्णव्यवस्था ठोस रूप है, जिसके द्वारा कर्म किया जाता है, उस व्यक्ति के स्वभाव की उचित रीति से एवं व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्ति के अनुसार उचित कर्म की संकल्पना पर यह (वर्ण व्यवस्था) आधारित है।'

जातीय संकीर्णता मिटाने ही के लिए भक्त कवियों ने जाति की उपेक्षा की। 'जाति-पांत पूछे ना कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।'

सामाजिक क्षेत्र में जाति की नहीं वैयक्तिक गुणों की प्रतिष्ठा के लिए राष्ट्र कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने महावीर कर्ण का ओजस्वी चित्र अंकित किया है। जाति पर सामाजिक प्रवंचना को अपनी गर्वोदीप्त अस्मिता से ललकारता हुआ उनका कर्ण कहता है -

'जाति जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाषण्ड।
मैं क्या जानूँ जाति? जाति हैं ये मेरे भुजदण्ड
मैं उनका आदर्श, कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे
पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे।
(रश्मि रची)

जातीय संकीर्णता के प्रबल विरोधी : स्वामी सहजानंद सरस्वती

कबीर ने ठीक ही कहा है कि साधुओं की जाति से नहीं ज्ञान से पहचान होती है। स्वामी सहजानंद इसके उदाहरण हैं। स्वामी जी का जन्म जुझौतिया ब्राह्मण कुल में हुआ था। इन्होंने वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद् और गीता का अध्ययन किया। काशी के ब्राह्मणों का इन्हें कोप भाजन बनना पड़ा। 'ब्राह्मण: ब्राह्मण दृष्ट्वा श्वानवत गुड़गुड़ायते'। शास्त्रार्थ में स्वामी जी की जीत हुई। इन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। अपने मत की सम्पुष्टि के लिए ही इन्होंने 'ब्रहर्षि वंश विस्तर' जैसे शोधपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। इन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण किया और देखा कि भूमिहर ब्राह्माणों की शादी मैथिली, जुझौतिया तथा कान्यकुब्जों में है किन्तु तथाकथित ब्राह्माण समाज में इन्हें मान्यता नहीं थी। स्वामी जी ने 'कर्मकलाप' जैसे अमूल्य साहित्य तथा अनेक संस्कृत विद्यालयों की स्थापना के द्वारा इन्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगाया। ऐसा कर उन्होंने सन्यासी धर्म का ही पालन किया। जिस तरह से भगवान श्री राम कहते थे कि -

कहउं सुभाव न कुल ही प्रसंसी
कालहु न डरहि न रन रघुवंसी।

उसी तरह स्वामी जी ने जाति के स्वाभिमान को जगाया। 'मेरा जीवन संघर्ष'में उन्होंने लिखा है कि यद्यपि पौरोहित्य कर्म निदंनीय है फिर भी ज्ञानार्जन कर भूमिहार ब्राह्मण भी कर्मकांड के अधिकारी हैं। इससे समस्त अयाचक ब्राह्मणों में जागृति आई, चाहे वे भूमिहार हो या त्यागी अथवा मोहियाल।

स्वामी जी 1928 ई0 से ही किसान आन्दोलन से जुड़े रहे। उन्होंने जमींदारों का विरोध किया। बिहार स्वामी जी की कर्मभूमि है। यहाँ के अधिकांश जमींदार भूमिहार ही थे। किसानों के हक में स्वामी जी को इन जमींदारों का कोपभाजन बनना पड़ा। स्वामी जी ने इनकी परवाह नहीं की।

देश की पराधीनता के लिए संघर्ष शिखर पर था। स्वामी जी प्राचीन ऋषियों की तरह 'अग्रतः सकलं शास्त्रं, पृष्ठतः सशरः धनुः' धारण करने वाले थे। गांधी जी के आह्वान पर कई बार जेल यातना सहनी पड़ी। जीवन के प्रारम्भ में स्वामीजी संस्कार वश स्वयं पाकी थे। किन्तु राष्ट्र धर्म के निर्वाह के लिए जेल में तथा भ्रमण की अवधि में इस नियम को उन्होंने शिथिल किया।

स्वामी जी वास्तविक रूप में सन्यासी थे। सन्यासी की कोई जाति नहीं होती। 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।' इन्होंने समस्त जीवन राष्ट्र एवं मानवता के उत्थान में बलिदान किया। बिहार में किसानों के हक के लिए जीवन भर लड़ते रहे। 'गीता हृदय' की रचना कर गीता ज्ञान को सरल भाषा में प्रस्तुत किया। स्वामी जी गीता के इस कथन को सबके लिए कल्याणप्रद मानते थे 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि लमते नरः' (गीता 18/45)

स्वामी जी मानवता के संदेशवाहक थे। आज के भ्रष्ट एवं जातीय संघर्ष में आकंठ डूबे हुए राष्ट्र को स्वामीजी के उपदेशों की प्रासंगिकता वांछित है। जिस व्यक्ति ने अपना समस्त सुख, जीवन, अनुभव ज्ञान विश्व के लिए समर्पित किया उस महापुरुष को हम भूल रहे है, उसके नाम पर न तो सरकार की ओर से कोई पुरस्कार है, न कोई स्मारक। बिहटा में स्वामी जी की प्रतिमा, उनके द्वारा स्थापित संस्कृत विद्यालय तथा उनकी रचनाएँ भूली भटकी जनता के लिए आलोक स्तम्भ के रूप में हैं। स्वामी जी किसानों के मार्गदर्शक, राष्ट्र के सेनानी तथा मानवता के उद्धारक के रूप में युग-युग तक याद किए जाएंगे। स्वामी जी को मेरा, नमन, पावन स्मरण एवं श्रद्धांजलि निवेदित है।

स्वामी सहजानंद सरस्वती जातीय गौरव के उन्नायक थे, उन्हें जातिवादी कहना अनुचित हैं। 'श्री सीतारामश्रम' के रीतिरिवाजों का उदाहरण देकर उन्हें भूमिहारों का पक्षधर घोषित करना अविवेकपूर्ण है, क्योंकि वे आश्रम के पंचायतनामे से प्रतिबद्ध थे। स्वामी जी के हदय में ऐसी दूषित भावना कभी नहीं आई कि दूसरी जाति के बच्चों को शिक्षा नहीं मिले। इसलिए जब उन पर बार-बार आक्षेप होने लगे तो उन्होंने अपने आलोचकों को चुनौती दी कि वे अपनी अपनी जाति के बच्चों के लिए आश्रम खोलें और उनसे सहायता लें। इस पर आलोचकों की बोलती बन्द हो गइ।

1892 ई0 में 'भूमिहार ब्राह्मण सभा'का संगठन हुआ। भूमिहार ब्राह्मण को कई स्थानों पर 'बाभन' संज्ञा से अभिहित किया जाता है। 'बाभन' शब्द भी ब्राह्मण का ही परिवर्तित रूप है। भूमिहार ब्राह्मण पौरोहित कर्म नहीं करते थे, वे कृषि और व्यवसाय पर निर्भर थे। कान्यकुब्ज, सरयूपारी आदि ब्राह्मण इन्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हेय दृष्टि से देखते थे। 'भूमिहार ब्राह्मण सभा' जमींदार, राजामहाराजा तथा कुछ पढ़े लिखे लोगों की मुट्ठी में थी। वे एक ओर भूमिहारों की सामाजिक-शैक्षिणिक उत्थान की बाते करतें थे, दूसरी ओर अंग्रेजी सरकार के प्रति वफादारी करते थे। सभा का अधिवेशन 1914 ई0 में बलिया में हुआ, जिसमें स्वामी सहजानंद ने भाग लिया। इस सभा में स्वामी जी ने भूमिहारों में अंग्रेजी सरकार के प्रति चाटुकारिता देखी, वहीं उन्होंने उनकी विवश आंखों में अपने उद्धार के लिए आग्रह का भाव भी। उन्होंने इस गलित-पीड़ित जाति में आत्मगौरव की भावना भरने के लिए 'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' एवं 'बह्मर्षि वंश विस्तर' लिख कर यह सिद्ध कर दिया कि भूमिहार भी अन्य ब्राह्मणों की तरह ब्राह्मण ही हैं तथा इन्हें भी पौरोहित्य कर्म का अधिकार है। इस जाति की विशिष्टता इसकी 'अयाचकता' थी। इसी प्रतिक्रिया में 'श्री सीतारामाश्रम' की स्थापना हुई और इसमें भूमिहारों को वेद-वेदांगों की शिक्षा की व्यवस्था की गई। अगर यह आश्रम जातीयता का केन्द्र होता तो कुछ दिनों के बाद भूमिहार जमींदार इसे दान देना बन्द नहीं करते।

स्वामी जी पर छूआछूत को लेकर भी आक्षेप लगाए जाते है। स्वामी जी छुआछूत को तो व्यापक अर्थों में लेते थे। वे छुआछूत को बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार की शुद्धियों पर निर्भर मानते थे। वे तो मुसलमानों का छूआ हुआ भी खाने को तैयार थे। किन्तु यह सत्य है कि स्वामी जी खान पान में बहुत संयम से काम लेते थे तथा इसे वे नीरोग होने का कारण भी मानते थे। स्वामी जी कर्म की प्रधानता देते थे। उनका कहना था कि 'हमारा धर्म, हमारा सदाचार और हमारी प्रतिष्ठा वस्तुत: इसी में है कि कमाकर खाएँ और किसी काम को छोटा नहीं समझे। (स्वामी सहजानंद : ज्योति कलश, पृष्ठ 14)

स्वामी जी की दृष्टि में अधिकारों से वंचित, अपमानित, तिरष्कृत जनसमुदाय की चेतना का उद्बोधन करना ही किसी समाज सेवी का सर्वोत्तम लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए उन्होंने भूमिहारों को ललकारा कि खुद पुरोहिती करो। जब काशी और मिथिला के विद्वान ब्राह्मण, भूमिहारों के बच्चों को संस्कृत पढ़ाने से कतराते थे और उनका शुभ संस्कार नहीं करते थे, स्वामी जी ने इसका विरोध किया।

'जायते वर्ण संकर:' नामक लेख में उन्होंने वर्णव्यवस्था के व्यापक दृष्टिकोण को उजागर करते हुए यह स्पष्ट किया है कि जीवनसंघर्ष को ठीक ठीक चलाने और मानव समाज को समृद्धि के शीर्षस्थ मंजिल तक पहुँचाने के लिये ही समाज को चार भागों में बाँटा गया था।

स्वामी जी ने वैदिक प्रतीकवाद की चर्चा पर 'हिरण्यगर्भ पुरुष के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुए' 'ब्राह्मणोअस्य मुखमासीद' को विचार का आधार नहीं माना। हारीत-स्मृति की यथार्थवादी उक्ति मानी। वास्तव में स्वामी जी ने सहस्राब्दिओं से प्रचलित पौरोहित्य याचक ब्राह्मणो मात्र के एकाधिकार और प्रति ग्रह की कर-वसूली से तुलनीय धार्मिक व्यवस्था पर चोट की। (स्वामी सहजानंद ज्योति कलश पृष्ठ 169) स्वामी जी जन्मना जाति को नहीं स्वीकारते थे, उनका कहना था 'जो क्षत्रिय वास्तव में बलवान, प्रतिष्ठित और धनी हो जाता था वही क्षत्रिय प्रतीत होता था न कि दूसरी जाति के लोग' (स्वामी सहजानंद ज्योति कलश पृष्ठ 170)

निष्कर्षत: स्वामी जी न तो किसी जाति के पक्षपाती थे और न जातिवादी ही। उन्होंने सदियों से दबे-कुचले भूमिहार ब्राह्मणों को उठाने और प्रतिष्ठा दिलाने की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया है। अपने लक्ष्य के प्रति अटूट निष्ठा और सक्रियता ने उन्हें भूमिहार ब्राह्मणो के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया, जिसके कारण कुछ लोग उन्हे जातिवादी मानने लगे। जबकि वे तो स्वयं भूमिहार जाति के थे भी नहीं। उनके जैसे निःस्वार्थ जाति-सेवकों के द्वारा बिहार क्या सम्पूर्ण देश में भी जातीय पुनर्जागरण की चेतना फैल गई। यह इतिहास का सत्य है, भावना का वाग्विलास नहीं।'

(स्वामी सहजानंद सरस्वती 105 वीं जयन्ती स्मारिका पृष्ठ 47)

वास्तव में स्वामी सहजानंद सरस्वती एक सच्चे राष्ट्र भक्त, मानवतावादी दृष्टा और युग के सृष्टा थे। उनका विचार, उनकी भावना सम्पूर्ण मानव के लिये मंगलप्रद है। उन्हें शत् शत् बार नमन। इत्यलम्।

With Best Compliments from :

OMEGA EXPORTS PVT. LTD.

D-10, N.D.S.E. - II, New Delhi - 110049 (India)

Manufacturers & Exporters of :

High Fashion silk and Rayon beaded and Hand Embroidered Garments

Ph: 6462415, 6442356
Telex : 031 - 70045-OMEX - IN
Fax : 6468780

THE PRINTWAYS

ELECTROSTAT (MODI XEROX & CANON)

COMPUTER LASER TYPE SETTING

- ELECTRONIC TYPING
- IBM ELECTRIC TYPING
- NOTARY ATTESTATION (9.00 A.M.- 9.30 A.M.)
- CYCLOSTYLING & NON JUDICIAL PAPERS

E-28, HAUZ KHAS MARKET, NEW DELHI - 110 016

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments

***

*

From

*

***

MAX INDIA LIMITED
(Pharmaceuticals Division)
Dr. Jha Marg, Okhla, New - Delhi
PC : 110020
Tele : 633343, 633760,
Fax : 6848860
Tel : (031) 75022

With Best Compliments

< > < > < >

< > < >

< >

From

< > < > < >

< > < >

< >

AGARWALS BUILDERS &
DEVELOPERS
C-14, N.D.S.E. - II
New Delhi - 110049
Tele : 6443428,
6410968

With Best Compliments

= = =

*

= = =

From

= = =

*

= = =

ACE DESIGN
FACILITIES PVT. LTD.
Consulting Engineers
(HVAC, Electrical, Fire-
Protection, Public Health)
C-18, N.D.S.E. Part - II
New Delhi - 110049
Tele : 6463297
6483037

With Best Compliments

< > < > < >

< > < >

< >

From

< >

< > < >

< > < > < >

GOPAL JEE
REAL ESTATE AGENTS &
INVESTMENT ADVISOR
GOPALJEE HOUSE
E-13, SOUTH EXTENSION II,
MARKET
NEW DELHI - 110049
Tele : 6448000
6428000 (664068)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज समय और हम

— डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र

दिशा और काल के विभिन्न आयामों से बोधगम्य यह ब्रह्माण्ड अपनी समग्रता विस्तार और अनन्त को ही सूचित करता है। किन्तु अन्तिम दर्शन में एक और अनेक एक ही सूत्र के दो ध्रुवान्त हैं। माननीय मेधा आरम्भ में अधिक सहज होने के कारण ऐसे सरलीकरणों को स्वाभाविक अन्तर्दृष्टि से स्वीकार करती थी। अतः उस समय व्यष्टि अथवा व्यक्ति की सार्थकता समष्टि या समाज के अंङ्ग के रूप में स्वभावतः सिद्ध मानी जाती थी। समाज-व्यवस्था की उत्पत्ति के सम्बन्ध में मनुष्यमात्र के ग्रन्थालय में प्राचीनतम चिन्तन हमें ऋग्वेद के पुरूष सूक्त के रूप में उपलब्ध है। 'सहस्त्रशीर्षा पुरूष : ...' के रूप में मानवी समाज व्यवस्था को सारे भौतिक पदार्थों की समृद्धि का आधार घोषित करने वाला ऋग्वेद (10-90) का यह सूक्त रत्न प्राचीन काल से हमारे सामाजिक चिन्तन का प्रेरणा स्रोत रहा है। इसी सूक्त ने जीवों की उत्पत्ति स्थिति के आधार इस 'भूमि' की सार्थकता समाज (पुरूष) के द्वारा उसे अर्जित करने में बताया है। समाज (पुरूष) ने अपनी उत्पत्ति (संघटन) के साथ ही इस भूमि (प्रकृति) को व्याप्त कर लिया और इसके बाद आरम्भ हुई मानवीय सभ्यता की अद्‌भुत निर्माण की यशोगाथा। वेद और लोक की सारी उपलब्धियां समाज (पुरूष) द्वारा भूमि (प्रकृति) के इसी सदुपयोग की उपलब्धि है इसका साक्षी है ऋग्वेद का पुरूष सूक्त —

"सभूमिं विश्रवतो वृत्वां अत्यतिष्ठद्
दशाङ०गलम्॥"
"सजातो अत्यस्वित पश्चाद् भूमिमयो पुरः"
"तस्माद् यज्ञात् सर्वदुतः ऋचः सामानि चलिरे"
– – – आदि।

कर्म (यज्ञ) की सुचारू संचालन व्यवस्था के लिए उस विराट् पुरूष ने यह समाज रूप धारण किया और उस प्रारम्भ काल में गुणकर्म या श्रम विभाजन के आधार पर हिन्दू समाज ने चार वर्ण या वर्ग निर्धारित किये थे जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र कहलाये —

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद् वैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत।"

ध्यातव्य है कि उस आदिम वर्ण विभाग में कोई गुरूत्वल धुत्ववोध नहीं है। सभी एकावयव समग्र के अंग हैं। पश्चात्, कर्म के प्रसार से जटिलता बढ़ी प्रतिद्वन्द्विता ने जन्म लिया तथा समाज में वर्णों के आन्तरिक तथा वाह्य भी अनेक सहयोगी प्रतियोगी समूह संघ हित हो गये। किन्तु समाज की कार्य सिद्धि के लिए वैदिक ऋषि ने विकास क्रम में उत्पन्न इन सभी वर्णों या पेशाधारियों का सदा एकात्मभाव से आदर किया। यजुर्वेद के रूद्राध्याय में समाज के सभी वर्ग या वर्ण समान भाव से शिव के अंशरूप में नमस्कृत हैं :

"नस्तक्षभ्यो रथ कारेभ्यश्चच वो नमो
नमः कुलालेभाः कर्मारेभ्यश्च वो नमो
नमो निषादेभ्यः मुज्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः"

इस तरह सामाजिक सद्‌भाव की चिन्ता और तदनुकूल व्यवहार, वर्णव्यवस्था पर आधारित समाज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के स्रष्टा, हमारे ऋषिगण आरम्भ से दर्शाते रहे हैं। बौद्धिक सूत्रधार होने के कारण ब्राह्मण वर्ग इसके लिए सबसे अधिक उत्तरदायी थे। समय की मांग के साथ उन्हें वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में कठोर और उदार दोनों प्रकार के दृष्टिकोण अपनाने पड़े। स्मृतियों तथा महाभारत में इस सम्बन्ध में प्राप्त भिन्न स्वरूप विचारों का यही रहस्य है। मूलतः सारी जातियां या वर्ण एक हैं ऐसा व्यास का निश्चित मत है —

"न विशेषाऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदंजगत्
ब्रह्मणापूर्वसृष्टा हि कर्मभिवर्णतां गतम्।"

— (महाभारत 12 . 188.10)

कर्म का क्षेत्र ही संघर्षमय है। एकबार यहां उतरने पर व्यक्ति-जाति, वर्ग-वर्ण भावना से अछूता रहना असम्भव सा हो जाता है ऐसी स्थिति में मूलभूत एकता होते हुए भी अधिकार और सम्पत्ति के लिए वर्ग या वर्ण संघर्ष हो ही जाता है। आर्यों की आदिम समाज व्यवस्था में ब्राह्मणों और क्षत्रियों की प्रतिद्वन्द्विता इसी का परिचायक है। आरम्भ में बड़ी सहजता से स्वीकृत वर्ण विभाजन वर्ग स्वार्थ वश जटिल बनता गया। शुरू में भूमि को आवृत कर विस्तार पाने वाला समाज पुरूष के लिए भूमि अकृष्टपच्या, दयालु धातृ के समान थी अतः वह धरती माता की बन्दना मे विभोर होकर गा रहा था —

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"

किन्तु भोगवृत्ति के प्रवल होते ही भूमि पर अधिकार के लिए पहला संघर्ष समाज के ऊपरी ढांचे के सूत्रधार, दो वर्गों, ब्राह्मणों और क्षत्रियों में ही परिलक्षित हो गया। स्मृतियों, महाभारत तथा अन्य आर्य ग्रंथों में इस विवाद का स्पष्ट संकेत है। मुद्दा यह था कि भूमि मूलतः किसकी है? ब्राह्मण की या क्षत्रिय की ?

"द्विजस्य क्षत्रबन्धोर्वा कस्येयं पृथिवी भवेत्?"

जिसके उत्तर में ब्राह्मण ऋषियों ने स्पष्टतः अपने पक्ष में मत देते हुए कहा कि —

"ब्राह्मणों जाय मानो हि पृथिव्यामनुजायते"

अतः "विप्रस्थ सर्वमेवैतद् यत् किंच जगतीगतम्।"

— (महाभारत,' शान्ति पर्व, 72)

चूंकि मूलतः सभी मनुष्य ब्राह्मण माने गये अतः ब्राह्मणों की भी कर्मों में प्रवृत्ति को मान्यता दी गई। समाज के विकास क्रम में संघटित अन्य वर्णों या वर्गों को अपने निर्दिष्ट कर्मों में ही विशेष रूप से लगे रहने का विधान किया गया। ध्यातव्य है कि विकास-क्रम में ब्राह्मण या क्षत्रिय स्वयं भूमि से उत्पादन कार्य से विरत होकर मात्र उसके उपभोक्ता वर्ग बन गये। इसी कारण भूमि पर अधिकार का विवाद भी चला। ब्राह्मणों के लिए प्रतिग्रह (दान ग्रहण) जीविकार्जन का मुख्य साधन बन गया। फिर भी प्रतिग्रह एक दोषपूर्ण कार्य ही माना जाता था। ब्राह्मणों द्वारा दान ग्रहण को उनके अन्य गुणों के कारण ही निर्दोष बताया गया है —

"नाध्यापनाद् याजनाद् अन्यस्माद्वा प्रतिग्रहात्
दोषोभवति विप्राणां ज्वलिताग्नि समा द्विजाः।"

—(महाभारत : वन पर्व 200-87)

इन्हीं परिस्थितियों में प्रतिग्रह-पराङ्मुख द्विजातियों (ब्राह्मणों) का एक वर्ग आरम्भ में ही खड़ा हो गया था जिनका मुख्य व्यवसाय भूमि (कृषि) पर आधारित था यद्यपि वे परिस्थिति के अनुरूप अन्य सभी क्षत्रिय, वाणिज्य आदि वृत्तियों में भी अपनी श्रेष्ठता दिखाते रहे। इन्हीं के बारे में गर्व से कहा गया कि —

"अग्रतः सकलं शास्त्रम् पृष्ठतः सशरं धनुः"

आज के भूमीश्वर, भुमिहार, त्यागी, महिपाल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्तपावन आदि, मूलत: इन अप्रतिग्रही ब्रह्मर्षियों के ही वंशज हैं, ऐसा मानने में कोई सन्देह नहीं । कालचक्र के आवर्तन में जातियों के असंख्य परिवर्तन का इतिहास-समाया है। सहस्र शीर्षा समाजपुरूष, महाकाल के गतिनिर्देश पर निरन्तर अपना कार्य करता रहता है। समाज पुरूष का शीर्षवत् अग्रगण्य ब्राह्मण वर्ण ने देशकाल की आवश्यकता अनुसार अपने अनेक वर्ग बनाये। सहस्राब्दियों के उनके लम्बे इतिहास में अनेक कटुमधु तथ्य भरे हैं। कट्टरपना की जड़ता से लेकर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उदार भावना भी उन्हीं की देन है। हिन्दू समाज के अवांछित विखराव से लेकर अद्‌भुत सांस्कृतिक स्थायित्व तक के दोष और गुणों के स्रष्टा ब्राहमण ही रहे हैं। हिन्दू समाज पाश्चात्य किस्म के राष्ट्रवाद से अनभिज्ञ रहा है। इतिहास साक्षी है कि बहुत सारा खून-खराबा के बाद उपलब्ध की गई राजनीतिक जातीयता या राष्ट्रीयता पश्चिमी समाज को एकता के सूत्र में बांधने का साधन बनी है। हिन्दुओं में इसके विपरीत विभिन्न जातियों या वर्णों की मूलभूत धार्मिक एकता ने ही सामाजिक एकता के रूप ने राष्ट्रीयता का स्वरूप ग्रहण किया था। स्थिति आज भी कमोवेश यही है। व्यावहारिक दृष्टि से आजभी जातियों का सामाजिक महत्व कम नहीं हुआ है। उनका प्रभाव केन्द्र भर बदले हैं जैसे 'रोटी' से अधिक 'बेटी' के सम्बन्ध में । कारणवश कुछ अवांछित प्रभाव केन्द्र भी बने हैं, जैसे चुनाव, नौकरी आदि के क्षेत्र में। इन्हीं कारणों से जातियों के सामाजिक महत्व को दिखावटी प्रगतिशीलता के आवेश में नकारना पाखण्ड ही होगा। आवश्यकता है बदलते परिप्रेक्ष्य में उनके सामाजिक उत्तरदायित्वों का विवेकपूर्ण पुनर्निर्धारण की। युगों की धुंध ने जो अनेक सामाजिक कुरीतियों को जन्म दिया है उसे सामाजिक विवेक और नये तौर तरीक से ही सफलतापूर्वक दूर कर सकते हैं। केवल राजनीतिक विधि विधान इसके लिए नाकाफी है। अत: आज के युग में संघटित जातीय समाज साम्प्रदायिक सद्‌भावना, कुरीति उन्मूलन आदि के द्वारा राष्ट्रीयता की नयी लहर उठा सकते हैं। इन विभिन्न सामाजिक समूहों का उद्देश्य भी एक महान् समाज या राष्ट्र पुरूष की विराट् छवि को दिखाना है जो इस 'भूमि की सहज रूप है — "अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्"

— (अथर्व)

भूमीश्वर (ब्राह्मण) समाज ने वैदिक काल से लेकर अपने त्याग, तप और कर्म के बल पर इस भारत (उपमहाद्वीप) की समृद्धि में उल्लेखनीय योगदान किये हैं। विश्वामित्र के तपोवल से सिद्ध मंत्र 'गायत्री' तथा परशुराम द्वारा दुराचारी राजकर्ताओं के विनाश की वैदिक पौराणिक गाथाओं से लेकर, टोडरमल द्वारा तुलसीदास जैसे महापुरूष की अविस्मरणीय सेवा-सहायता और फिरंगियों से भारत की मुक्ति के लिए प्रथम संग्राम में पहली गोली दागकर मंगल पाण्डेय जैसे वीर सिपाही की शहादत आदि इस समाज के इतिहास के कुछ स्वर्णिम पृष्ठ हैं। वर्तमान युग में भी अपने त्याग और कर्मठता से देश का मस्तक ऊंचा उठाने वाले महापुरूषों का इस समाज में कमी नहीं रही। कृषिप्रधान इस भूमिभाग में यदि समय की हाँक को पहचान कर हम संगठित हों और पहले अपने समाज की आन्तरिक स्वच्छता को , कुरीति उन्मूलन द्वारा पुन:स्थापित करें तो निश्चय ही हम दूसरों के लिए भी अनुकरणीय बनेंगे और एक सवल सशक्त महान् समाज के निर्माण का पुरातन स्वप्न साकार होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments
From

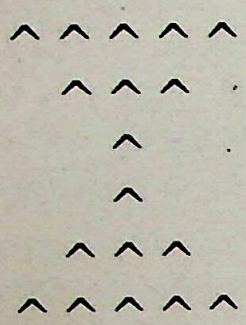

IMPRESSIVE IMPRESSIONS
(P) LTD.
9495/12, Multani Dhanda
Paharganj, New Delhi - 110055.
Ph: 737650, 7528844.

With Best Compliments
From

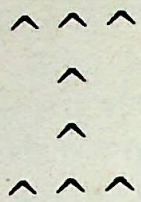

JAGDISH
DEPARTMENTAL STORE
Chemist Cosmetics Provision
General Merchant
All Cleaning Material &
Poultry Products
65-91, Yashwant Place, Chankya puri,
New Delhi - 110021
Ph: 677430, 608244

With Best Compliments
From

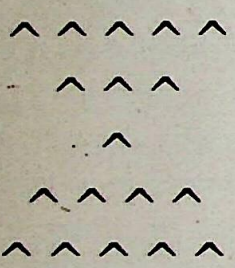

P.P. PHARMACEUTICALS
(ANTEKA)
59, Yashwant Place
CHANKYA PURI
NEW DELHI - 110021
Phone : 6877832
Res. 608608

With Best Compliments
From

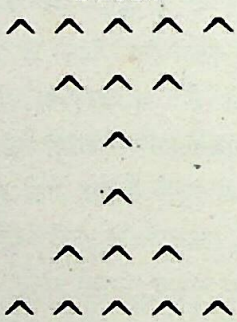

MALIK FUR HOUSE
A House of Indian Handicrafts
106, Yashwant Place,
Chanakyapuri
New Delhi - 110021.
Ph: 606774
(R) 2926540

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

प्रो. महेन्द्र प्रसाद सिंह

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का नाम किशोर वय से ही सुनता आया हूं। यह 1950 के उत्तरार्द्ध की बात है। मैं अपने गांव (ओकरी, जिला गया, अब जहानाबाद) में तब मध्य और उच्च विद्यालय का छात्र था। पाठ्यक्रम में किसी स्कूली किताब में उनके बारे में पढ़ने का कुछ स्पष्ट स्मरण नहीं आ रहा, पर घर, स्कूल, गांव में स्वामी जी और उनके किसान सभा को लगभग सब कोई जानते थे। उन की प्रायः चर्चा भी होती थी। किसान-बहुल गांव में चार फरीक जमींदार कुल के थे जो 'चार दरबार' कहलाते थे। मेरा जन्म इन में सब से बड़े जमींदार फरीक के घर हुआ, जो 'बड़ा दरबार' कहलाता था। मेरे चाचा जी, श्री केदार नाथ सिंह, बड़े अड़ियल जमींदार थे। पर अपेक्षाकृत मध्यम दर्जे का जमींदार होने के साथ काश्तकार भी थे। गांव के अधिकांश किसान परिवार हम लोगों की ही तरह बाभन जाति के थे। अतः किसान परिवारों से किंचित दूरी के बावजूद हमारा काफी अपनापन का संबंध था। अतः किसान सभा के प्रति हमारे परिवार में वैसा विरोधात्मक रूख नहीं था जैसा बिहार के बड़े जमींदारों में, उन में भी जो समजातीय थे, एक चरण में हो गया था। वय में मेरे पिताजी, श्री शिवेश्वर प्रसाद सिंह, चाचाजी से छोटे थे और पटना और कलकत्ता में हाई स्कूली शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। वे कांग्रेस के 'fellow traveller' थे, कुर्सी-नसीन कांग्रेसी। उन का एक अच्छा खासा व्यक्तिगत पुस्तकालय था जिस में बहुत सारी राजनीतिक और साहित्यिक पुस्तकें संग्रह की गयी थीं तथा कई पत्र-पत्रिकाएं भी नियमित रूप से आती थीं। उन के संग्रह में स्वामी जी का ब्रह्मर्षि वंश विस्तार तथा किसान सभा के सम्मेलनों में दिये गये उनके अभिभाषणों के पैम्फलेट मौजूद थे। इन पुस्तकों से संकेत मिलता है कि स्वामी जी का सामाजिक जीवन दो चरणों से गुजरा है। इस बिन्दु पर इतिहासकार प्रो. रामशरण शर्मा से बातचीत कर के भी मैंने इस व्याख्या को दुरूस्त पाया है। प्रथम चरण में स्वामी जी ने भूमिहार ब्राह्मण सभा का संगठन किया। ब्रह्मर्षि वंश विस्तार पुस्तक उन के इसी 'Sanskritization' के चरण का द्योतक हैं। 'बाभन' से 'ब्राह्मण' बनने के क्रम में बाभनों ने ब्राह्मण पुरोहितों के बदले 'भूमिहार ब्राह्मण' पुरोहितों से जीवन-चक्र के आनुष्ठानिक विधि-व्यवहार प्रारंभ किये। संस्कृत शिक्षा के प्रसार के लिए मठ व विद्यालय खोले। बहुतों ने अपने कुलनाम 'सिंह' से बदल कर 'शर्मा' या गोत्रीय कर लिये। हमारे गोत्रपुरूष शांडिल्य ऋषि हैं जिन का संबंध सामवेद के उत्तर ग्रंथ छांदोग्य उपनिषद् से है। पर मेरे परिवार में सिंह कुलनाम चलता रहा। हां, मैट्रिक्यूलेशन के बोर्ड के प्रपत्र भरते समय मेरे किसी शिक्षक के मूक पहल के फलस्वरूप मेरे मैट्रिक सर्टिफिकेट में मेरे पिताजी के नाम के साथ कुलनाम शर्मा जुड़ गया है।

बहरहाल, स्वामी जी के 'सामाजिक-राजनीतिक जीवन का दूसरा चरण मार्क्सवाद तथा कम्युनिस्ट व कांग्रेस पार्टियों से संबंध रखता है। इस चरण से यह संकेत मिलता है कि स्वामी जी जाति-पंथ आदि से ऊपर उठ गये और भारतीय एवं मानवतावादी परिप्रेक्ष्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में कार्यरत हो गये। उन के किसान सभा चरण से संबंधित क्रियाकलाप पर अमरीकी इतिहासकार प्रो. वाल्टर हाउजर ने बड़ा गहन शोध किया है।' जिन दिनों 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में प्रो. ह्यउजर भारत में शोध कर रहे थे उन दिनों मैं पटना विश्वविद्यालय में राजनीति-विज्ञान में एम.ए. का छात्र था। वे एक बार हमारे विभाग में भी अपने शोध पर एक व्याख्यान देने आये थे। उन्होंने किसान सभा पर बहुत गवेष्णात्मक निबंध प्रस्तुत किया था। उन का एक वाक्य,

"The Swami was a militant agitator", अभी तक स्मृति में शिलालेख-सा खुदा है। पिछले वसंत में प्रो. हाउजर से दिल्ली में मुलाकात हुई तो मैंने उनकी पी-एच.डी.थीसिस के बारे में जिज्ञासा की। उन्होंने बताया कि उस पर और अधिक शोध कर के वे उसे प्रकाशित कर रहे हैं। पुस्तक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाश्य है।

यह स्वामी जी के व्यापक व्यक्तित्व तथा उनकी वृहत विरासत का द्योतक है कि पिछले वर्षों में जब उनकी शताब्दी मनायी गयी तो उनके लेखन और व्याख्यानों का पुनप्रकाशन कई संस्थाओं के द्वारा पृथकत: किया गया। अपने पड़ोसी श्री कैलाश झा के सौजन्य से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा पुनप्रकाशित इन पुस्तकों में से कुछ जिल्दों को देखने का अवसर मिला है। इन में उन से संबद्ध राजनीतिक दलों के अतिरिक्त नृकुल-संस्थाएं भी शामिल हैं।

स्वामी सहजानंद सरस्वती एक महान समाज-सुधारक और राजनेता/किसान नेता थे। वे उन नर-पुंगवों में से एक थे जिन के पंजों के छाप भविष्य पर पड़ते रहेंगे।

With Best Compliments

From

REGAL SHOES

E-30, NDSE PART II, NEW DELHI - 110 049
Phone : 6440500

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangøtri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय संकीर्णता और स्वामी सहजानन्द का दर्शन

योग दर्शन की मान्यता है कि मनुष्य को संस्कारवश अपने कुल, जाति, देश, धर्म से स्वाभाविक प्रेम होता है, इसी कारण उसे मृत्योपरान्त पुन: उसी देश, धर्म, जाति और वंश में जन्म लेना पड़ता है। इसलिए मनुष्य को अपने कुल,. समाज, धर्म और राष्ट्र का सुधार करना चाहिए। इसी सत्प्रेरणा से प्रेरित होकर योग और धर्म तथा प्राच्य एवं पाश्चात्य विधाओं के मर्मज्ञ स्वामी सहजानन्द सरस्वती प्रांण-प्रंण से समाज सुधार कार्यों में जुट गये। अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध आवाज बुलन्द करने वालों में स्वामी जी अग्रणी थे, चाहे वह अत्याचार जाति विशेष का या वर्ग विशेष के ही विरूद्ध क्यों न हो।

स्वामी जी का जीवन दर्शन जातीय संकीर्णता से एकदम परे था। वे कभी भी किसी एक जाति विशेष या वर्ग विशेष का होकर नही रहे। वे उन सभी के थे, जहां सामाजिक कमजोरियों की लड़ाई के क्षेत्र में उनकी आवश्यकता थी।

स्वामी जी भूमिहार ब्राह्मण (अयाचक ब्राह्मण) परिवार में पैदा हुए थे, इसलिए उन्होंने केवल भूमिहार ब्राह्मण समाज के स्वाभिमान और उनके अधिकार के लिए ही लड़ाइयां नही लड़ी अपितु शोषण और अत्याचार के खिलाफ जहां भी बात आयी उन्होंने उस क्षेत्र में अपना झण्डा बुलन्द किया, चाहे वह अयाचक ब्राह्मणों के खिलाफ याचक कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के एकाधिकार की बात हो, अथवा गरीब किसानों के विरूद्ध जमींदारों का अत्याचार, या मजदूरों की उनकी अपनी निजी समस्या।

यहां पर स्वामी सहजानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में कुछ ऐसे उद्धरण दिए जा रहें, जिससे उनके जीवन दर्शन से जातीय संकीर्णता को विलग करने की बात प्रमाणित होती है ।

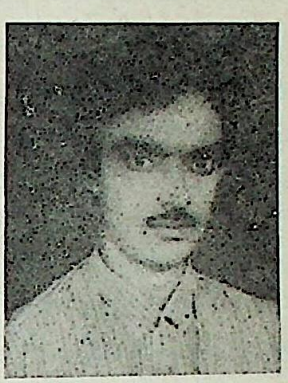

डा. राजेन्द्र राय

(अ) स्वामी जी ने देखा कि याचक ब्राह्मण कहे जाने वाले कर्मकान्डी ब्राह्मण अपने को अन्य अयाचक ब्राह्मणों से श्रेष्ठ समझते हैं तथा वेद पढ़ना, यज्ञ कराना, कर्मकान्ड करना आदि कार्यों को अपना एकाधिकार समझते हैं, तो उन्होंने इस बात का विरोध किया और अपने अध्ययन, भ्रमण तथा सुविचारित तर्कों द्वारा सिद्ध किया कि याचक या कर्मकान्डी कहे जाने वाले ब्राह्मणों के जो भी अधिकार और कर्त्तव्य हैं, वे सभी अयाचक ब्राहमणों के भी हैं। उन्होंने अयाचक ब्राह्मणों को सुशिक्षित और जानकार बनाने के लिए जगह-जगह संस्कृत पाठशालायें खुलवायी, शास्त्रार्थ किया और "ब्राह्मण समाज की स्थिति," कर्म कलाप, ब्रह्मर्षि वंश विस्तर," झूठा भय और मिथ्या अभिमान" नामक पुस्तकें लिखकर इस समाज में स्वाभिमान जगाया तथा उसके पुराने गौरव दिलाने की कोशिश की। स्वामी जी के विचारों को सुनकर, उनके ग्रन्थों को पढ़कर, अयाचक ब्राह्मण समाज में एक नई चेतना आयी, जागृति आयी और वे अपने वास्तविक रूप को पहचानने लगे।

इस तरह एक तरफ स्वामी जी ने जहां समाज के एक वर्ग विशेष को सही मार्ग पर आने को प्रेरित किया और उसमें आत्म विश्वास भर दिया तो वहीं दूसरी ओर एक वर्ग विशेष के एकाधिकार को, उसके स्वामित्व को समाप्त करने की भी कोशिश की। स्वामी जी के इस कार्य को जातिवाद जैसी संकीर्ण संज्ञा नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दी जा सकती। यह तो सामाजिक समता के क्षेत्र में एक सराहनीय प्रयोग था।

(ब) स्वामी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि वे जातिवाद से कोसों दूर थे। उनके जीवन में अनेकानेक ऐसे मौके आये जब उन्होंने भूमिहारों का डटकर विरोध किया और गैर-भूमिहार का जमकर समर्थन। अब आधुनिक बिहार के निर्माता एवं भूमिहार कुल के गौरव सर गणेशदत्त सिंह का ही प्रकरण ले लें। सन् 1929 ई. में गया जिला बोर्ड के चेयरमैन श्री अनुग्रह नारायण सिंह को उनको सफाई का मौका दिये बिना पद से हटा दिया गया। उस समय स्थानीय शासन जिसमें जिला बोर्ड आता था, सर गणेशदत्त सिंह के अधीन था। इस प्रकरण पर स्वामी जी ने गैर भूमिहार श्री अनुग्रह नारायण सिंह का पक्ष लिया और सर गणेशदत्त सिंह जी का विरोध।

(स) जातीय सुधार आन्दोलन का नेतृत्व करने के कारण स्वामी जी को उनके कुछ विरोधी जो उनसे इर्ष्या रखते थे, उन पर जातीवादी होने का आरोप लगाये, किन्तु ऐसा करते समय वे भूल गये कि वे अपनी अल्पज्ञता का ही परिचय दे रहे हैं क्योंकि स्वामी जी ने उपर वाले को नीचे नहीं गिराया अपितु नीचे वालों को उपर उठाने का कार्य किया, जो बुरी बात नहीं है। फिर भी जब स्वामी जी ने देखा कि कुछ शक्तिशाली भूमिहार जाति सुधार सभा का उपयोग अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए कर रहे हैं तो इससे दुःखी होकर स्वामी जी इससे विलग ही नहीं हुए बल्कि इसे समाप्त ही कर दिए।

(द) स्वामी जी जमींदारी प्रथा के घोर विरोधी थे। वे जम्मीदारों को किसानों का दुश्मन और शोषक मानते थे। उन्होंने जमीदारी प्रथा समाप्त करने के लिए आवाज उठाई। अब "जातीय संकीर्णता और स्वामी जी का दर्शन" के परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न उठता है कि अगर स्वामी जी अपने भूमिहार जाति के प्रबल पक्षधर थे तो जमीदारी प्रथा का इतना विरोध क्यों किये?

(य) बिहार प्रवास के दौरान कुछ प्रभावशाली भूमिहार जमीदारों ने स्वामीजी को अपने पक्ष में करने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन दिए किन्तु हिमालयी चट्टान की तरह अडिग स्वामी जी अपने मार्ग से रंच मात्र भी विचलित नहीं हुए। इस सम्बन्ध में स्मरणीय है कि स्वामी जी धनीमानी भूमिहारों के महलों में ठहरने और उत्तम भोजन ग्रहण करने के बजाय किसी किसान की झोपड़ी में रहना और साधारण भोजन करना अधिक पसन्द करते थे।

(र) स्वामी सहजानंन्द सरस्वती किसान आन्दोलन के जनक थे। उन्होंने किसानों की भलाई के लिए क्या नहीं किया। वे उनकी दशा में सुधार लाने के लिए सामाजिक और राजनैतिक मंच से संघर्ष करते रहे। इनके संघर्ष के परिणामस्वरूप किसानों की दशा में बहुत कुछ सुधार भी हुआ। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या सभी किसान भूमिहार जाति के ही थे? जिनके लिए स्वामी जी ने आजीवन संघर्ष किया? यदि नहीं तो, निश्चय ही स्वामी जी का जीवन दर्शन जातीय संकीर्णता से ऊपर था।

(ल) एक बार हथुआ स्टेट के महाराजा कौंसिल के चुनाव के लिए खड़े हुए। कांग्रेस ने उनके खिलाफ एक अनपढ़ धोबी को खड़ा कर दिया। स्वामी जी जानते थे कि हथुआ महराज भूमिहार हैं किन्तु फिर भी उन्होंने कांग्रेस के उम्मीदवार का समर्थन और महाराजा का विरोध करते हुए कहा कि "राजा महाराजाओं से तो हमारा धोंबी कहीं अच्छा है।" अब पुनः वही प्रश्न उठ खड़ा होता है कि यदि स्वामी जी जातीय संकीर्णता से ऊपर न होते तो एक भूमिहार उम्मीदवार के विरूद्ध गैर भूमिहार उम्मीदवार का समर्थन क्यों करते?

इस प्रकार उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट हो गया है कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी स्वतंत्र विचारों के समर्थक थे। वे किसी भी जाति, वर्ग या व्यक्ति के भक्त नहीं थे। हां वे गरीबों, किसानों, मजदूरों और अपने सिद्धान्तों के पक्षधर जरूर थे चाहे उनके इस परिधि में उनकी अपनी ही भूमिहार जाति या अन्य कोई आये वे उसकी भलाई के लिए प्राणप्रण से तैयार हो जाते थे। ऐसे में उन्हें जातिवादी संकीर्णता के दायरे में रखना महान भूल होगी !

तो ऐसे थे मझोले कद वाले, मांसल शरीरधारी, गेहुआ रंग, मन्डित मस्तक, गेरूआ वस्त्र, स्फूर्तिदायक तेज चाल, हाथ में सन्यासी का डंड कांतिपूर्ण ललाट, किसानो के मसीहा, जननायक स्वामी, विचारक, लेखक, पत्रकार, शोषित उपेक्षितों के रहनुमा, समाजसुधारक, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी,प्रचंड सिंहनाद घोषक, क्रांतिकारी, वीतराग सन्यासी, निष्काम योगी, राजनीतिज्ञ, शिवरूप, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, असाधारण पुरूष, परम पूज्य परिब्राजकाचार्य स्वामी सहजानन्द सरस्वती, जिनके व्यक्तित्व और जीवन दर्शन में एक साथ बहुत कुछ था किन्तु जातीय संकीर्णता बिल्कुल नहीं।

With Best Compliments

FROM

Shankar Electronics & Electrical Works (Regd.)

Shankar Electrical & Contractor

Shankar Electrical Trading Syndicate

Shankar Power System (P) Ltd.

Office & Workshop
128/127D Mohammadpur
opp. Bhikaji Cama Place
New Delhi - 110066
Phones : 607505, 602539

Residence
B-4/131/2
Safdarjang Enclave
New Delhi : 110029
Phone : 6874473

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Phone : 6420411PP

FASHION ARTS

Specialist in : All kinds of
Machine Embroidery
(UNIT 35 MACHINE)

1868/13, Govindpuri
Extn. New Delhi - 110019

PAWAN KUMAR
Prop.

Phone : 2267267

KAMAL EMBROIDERY

Specialist in :
ALL KINDS OF EMBROIDERY
FOR EXPORT QUALITY

673/2B, Krishna Gali No.11
Maujpur, Delhi - 110 053

Prop.
RAMJI LAL

HUSSAIN 786 Ph :

H.N. EMBROIDERY

Specialists in :
Exports Quality : Aari Chikan Peaco
All Kinds of Machine Embroidery Works

RZ-1/63 G Gali No. 3,
Tughlakabad Extn.,
New Delhi - 110019

M/s Shankar Embroidery Works

Specialists in :
Export Quality Machine Embroidery

374, Krishna Gali No.11,
Adarsh Mohalla, Maujpur
Shahdara, DELHI - 110053.

RAKESH KUMAR Phone : 2268291
Prop.

NISHA CRAFTS

Specialist in :
All Kinds of Embroiders for Export Quality

201/60C, Opp. Krishna Gali No. 6,
Moujpur, Delhi - 110053

MOTIUR RAHMAN

{}
{}{}{}
{}{}{}{}{}

Fashion Embroidery Works

{}{}{}{}{}
{}{}{}
{}

44, Madangir Village, New Delhi - 110062

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जातीय आन्दोलन और उनकी अधुनातन प्रासंगिकता

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत-बसुन्धरा पर एक से एक अतिशायी मेधावी, पराक्रमी, त्यागी-तपी तथा जन सेवी नर-रत्न प्रादुर्भूत हुए, उनमें से स्वामी सहजनानन्द सरस्वती एक ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व एवं असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न महापुरूष थे जिनके विषय में 'प्रो.राजनाथ पाण्डेय ने अपनी पुस्तक 'त्रिकालजयी" में लिखा है— "महर्षि दयानन्द के पश्चात् दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के समान दीप-शिखा जैसी प्रखर बुद्धि , प्रचण्ड मेधा, तडितवत् अखंड ब्रह्मचर्य, अग्नि समान प्रज्वलित स्वभाव एवं महासागर सदृश अगांध पांडित्य वाला क्रान्तिकारी समाजवादी तथा मौलिक चिन्तनवाला सन्यासी दूसरा अब तक भारत में हुआ ही नहीं है।" स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद के देवा नामक ग्राम में एक अर्थ-संकट-ग्रस्त साधारण भूमिहार ब्राह्मण-परिवार में सन् 1889 में हुआ था और माता-पिता ने बालक का नाम नवरंग राय रखा था। बाल्यावस्था में ही उस बालक में असामान्य बुद्धि-विवेक तथा विरागी स्वभाव का दर्शन हुआ। तीन-चार वर्ष की वय में ही बालक की माता का शरीरान्त हो गया। परिवार के लोगों को रोते-पीटते देखकर बालक का धैर्य विचलित नहीं हुआ, प्रत्युत् उसने अन्य लोगों का यह कह कर प्रबोधन किया—"मां तो मर ही गयी, क्या रोते-रोते आप लोग भी मर मिटेंगे।" वह बालक भारत के ग्रामीण पिछड़े हुए अंचल में अंध-विश्वास एवं रूढ़ियों से आक्रान्त सामन्ती आर्थिक-सामाजिक दुर्व्यवस्था के मध्य इस भूतल पर अवतरित था। वहां न पढ़ने -लिखने का वातावरण था.और न पारिवारिक शिक्षा-सम्पन्नता ही थी। फिर बालक के होनहारपन और बौद्धिक तेजस्विता ने परिवार को इतना अनुप्राणित किया कि उसने बालक को पढ़ाने-लिखाने का साहस जुटाया। बालक की शिक्षा आरंभ हो गयी।

प्राध्यापक "अचल'

मेधावी बालक नीचे की दो-दो कक्षाओं को फाँदते-लांघते हाई स्कूल तक पहुंच गया। परिवार ने उसे "मैं अरू मोर तोर यह माया" के महाजाल में फँसाना चाहा, किन्तु महाजाल को एक झटके में तोड़कर वह भाग निकला। वह फिर परिवार के हाथ न लगा उसने परिवार और जाति-बिरादरी के माया-मोह से संन्यास ले लिया। उसका नाम तक नहीं रहने दिया तथा नवरंग राय से स्वामी सहजानन्द सरस्वती बनकर आत्म-मुक्ति की खोज में चल पड़ा।

अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्वामी जी ने बीहड़ देश-भ्रमण का असहय् कष्ट झेला, तब उन्होंने सोचा—"जंगल-पहाड़ों की खाक बहुत छानी, योगी-तपस्वी का भी पता लगाया, भटके भी काफी, मंगर हाथ कुछ भी नहीं आया। भगवान तो अभी दूरके दूर ही रहे। इसलिये अपने शास्त्रों का मंथन करें, उनमें क्या है।" स्वामी जी काशी लौटकर शास्त्र मंथन में तल्लीन हो गये। उन्होंने सप्त वर्ष निरन्तर दिन रात सिर तोड़ परिश्रम करके संस्कृति वांङ्मय का मंथन किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं अगाध पाण्डित्य अर्जित किया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में "वह विद्वान संन्यासी के तौर पर अपनी प्रौढ़ प्रतिभा और व्यापक ज्ञान से एक सर्वमान्य संन्यासी सैकड़ों छात्रों का, शिष्यों का गुरू होता, मगर ब्राह्मणों के मिथ्या अभिमान ने व्यक्ति नहीं, एक गौरवपूर्ण जाति को अपमानित करना चाहा और उसे बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने अपने दण्ड को उठाया और कुछ ही सालों में भूमिहारों में वह भावभर दिया कि ब्राह्मणों को अपनी शेखी छोड़नी पड़ी"। वस्तुतः स्वामी सहजानन्द ने घर-बार छोड़ा था एवं शास्त्र-मंथन किया था। आत्म मुक्ति या आत्मज्ञान के लिये, परन्तु उनकी प्रचण्ड प्रतिभा अगाध पांडित्य तथा बलवती भावुकता ने उन्हें समाज-सेवा के पथ पर बरबस ला खड़ा किया। गौरवपूर्ण इतिहासवाली भूमिहार ब्राह्मण जाति में आत्म विस्मृति एवं अस्तित्व-रक्षा की असमर्थता देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठा, उनकी प्रतिभा उत्तेजित हो उठी तथा उनका पांडित्य भड़क उठा और वे उसकी महिमा-गरिमा के रक्षार्थ उसकी आर्त पुकार पर उसके समीप वैसे ही पहुंचे थे जैसे गजराज के पास भगवान विष्णु और द्रौपदी के निकट श्री कृष्ण। स्वामी जी ने 'मेरा जीवन संघर्ष' में स्वयमेव लिखा है —"आत्म-सम्मान की भावना और पुकार ने ही मुझे भूमिहार ब्राह्मणों के सामाजिक कार्य में कुछ समय के लिये घसीटा। उसमें कोई अतिहिंसा, स्वार्थ या तुच्छ राजनीति की भावना न थी। केवल गिरे या यों कहिए कि बलात् गिराए गये समाज को उठाना था और उसमें आत्म-गौरव की रूह फूंकनी थी।"

उदारमना स्वामी जी ने गिरे या गिराये समाज में आत्म-गौरव की रूह फूंकने के लिये भूमिहार ब्राह्मण-सभा में प्रवेश किया। उस समय वैसी जातीय सभाएं और भी बहुत थीं, किन्तु उनमें आजकल के जातीय संगठनों जैसी प्रतिहिंसा, प्रतिशोध, घृणा तथा स्वार्थ-परता नहीं थी। वे जातीय सुधार तथा उत्थान का आदर्श रखती थीं। उस समय के उनके नेताओं में आज के नेताओं जैसी शोषक वृत्ति, सीनाजोरी, सत्ता की भूख, निर्लज्जता, दाव-पेंच, मुख में राम बगल में छूरी, जी हजूरी कराना, लोगों को पीछे-पीछे घुमाने-बहकाने की लत आदि अवगुण नहीं थे। वे अपने को निर्भय, विनम्र, त्यागी-तपी, जन-सेवी बनाने की कामना रखते थे। वे फूहड़पन तथा निर्लज्जतापूर्वक वोट बैंक बनाने की चिन्ता नहीं करते थे। देश की स्वाधीनता, एकता और अखंडता उनका परम लक्ष्य था। जाति को वे राष्ट्र की एक छोटी इकाई मानकर जातीय उत्थान का कार्यक्रम बताते थे। स्वामी सहजानन्द ने 'मेरा जीवन-संघर्ष' में इसका उल्लेख इन शब्दों में किया है —"राष्ट्रीयता और जातीयता में बहुत ही कम अन्तर है। जाति छोटी है और राष्ट्र बड़ा है। बस, इतना ही अन्तर है।" स्वातंत्र्य-पूर्व के नेता जातीयता से जातिवाद के निम्न स्तर पर उतरने का साहस नहीं जुटा पाते थे। जातीयता मानवता का कलंक अथवा अवरोध नहीं है। यह जन-सेवा का ही लघुक्षेत्र है। इसके द्वारा हम देश-सेवा और विश्वजनीनता तक पहुंच सकते हैं। स्वामी सहजानन्द इसके निदर्शन हैं। आंग्ल और हिन्दी भाषा-साहित्य के मान्य विद्वान प्राचार्य कुबेरनाथ राय के शब्दों में "जातीय" और "जातिवादी" दो भिन्न शब्द हैं और इनके अर्थ मे मौलिक प्रभेद है। 'जातीय' शब्द मे 'जातिवादी' शब्द की राजनीति प्रधान, दुराग्रही और कुटिल व्यूह-रचना-परक गंध नहीं है। 'जातिवादी' का सीधा अर्थ होता है फासिस्ट या नाजी। यह सत्ता-संघर्ष के लिये राजनीतिज्ञ की व्यूह-रचना का एक अंग है जिसे जातीय उन्नयन के आकर्षक नारों से जोड़कर सबल किया जाता है। यह देश के लिये जहन्नुम का रास्ता है। परन्तु जातीय आन्दोलनों की प्रकृति भिन्न होती है और उसकी संघर्ष-भूमि राजनीति नहीं सामाजिक जीवन होता है तथा वे शिक्षा और सुधार के अतिरिक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्म-पहचान से भी जुड़े रहते हैं।" स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में भूमिहार ब्राह्मण-सभा के माध्यम से चलाये जाने वाले आन्दोलनों का जातीय रूप रहा। समाज में संस्कृति शिक्षा का अभाव, तिलक-दहेज की विकट रूढ़ि, पुरोहित वर्ग के प्रति अन्ध भक्ति.धूम्रपान की लत आदि की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया गया।

स्वामी सहजानन्द ने भी अन्य सामान्य संन्यासियों की भांति आत्म मुक्ति या ब्रह्मज्ञान का आनन्द लूटनेके लिये घर-बार छोड़ा था और जंगलों की खाक छानी थी, किंतु शस्त्र-मंथन ने उन्हें जन-सेवा का मार्ग दिखा दिया। इस सन्दर्भ में उन्होंने श्रीमद्भागवत का यह श्लोक उद्धृत किया है जिसमें भक्त प्रहलाद ने भगवान नरसिंह को उत्तर दिया है—

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्ति कामा
मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः।
नैतान्वि हाय कृपणान्विं मुमुक्ष एको
नान्यं त्वदस्य शंरणं भ्रमतोऽनुपश्ये॥ 7.9.44

स्वामी जी ने इसका सारांश दिया है—"ऋषि मुनि लोग तो स्वार्थी बनकर अपनी ही मुक्ति के लिये एकान्त वास करते हैं। उन्हें औरों की फिक्र नहीं होती। लेकिन मैं हर्गिज ऐसा नहीं कर सकता। सभी दुखियों को छोड मुझे सिर्फ अपनी मुक्ति नहीं चाहिए। मैं तो उन्हीं के साथ रहूंगा और मरूंगा-जीऊंगा।"इसी प्रसंग में स्वामी जी ने आगे लिखा है कि "इसलिए मेरा विचार अब बदला और धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में समय लगाने का निश्चय कर लिया।... शास्त्र -मंथन समाप्त होते न होते जन-सेवा की ओर जा झुका।... यह भी जान लेना चाहिए कि यह जो जन-सेवा की बात मेरे दिल में उठी, वह पहले-पहल जंन-साधारण की सेवा न थी। मैंने तो यही सोचा कि चलो एक भूमिहार ब्राह्मण -समाज का उद्धार कर दो। फिर अपने पठन-पाठन और ब्रह्म ज्ञान का मजा उठायेंगे। मैं तो किसी और मतलब से उसमें पड़ा न था। एक बहुत बड़े समाज को — एक उच्च कुलीन ब्राह्मण समाज को — मैंने औरों से पद-दलित पाया और देखा कि वह तिलमिला रहा है। अपमानित हो रहा है। मगर कुछ कर नहीं पाता। मेरा दिल तड़प उठा और मैंने उसे उठाया। उठाने की कोशिश की और अपमानित करने वालों को ठीक-ठीक उत्तर दे दिया। समष्टि रूप से समस्त समाज को ऊंचा उठाने को ही मैं समाज-सेवा और सामाजिक कार्य मानता हूं और यही मैंने शुरू में किया। इसीलिए तो पीछे छोटे से समाज को छोड़ समस्त देश के काम में खिंच गया या कूद पड़ा। हां, यदि उस समाज सेवा में कोई राजनीतिक दांव-पेंच या औरों के दबाने की मनोवृत्ति रहती, तो वह अवश्य ही निंदित और बुरी होती।"

स्वामी जी ने भूमिहार ब्राह्मण समाज में स्वाभिमान जागृत करने के लिये, उसमें आत्म-चेतना लाने के लिये, निरंकुश, अन्यायी, शोषक तथा स्वार्थी पुरोहित-सामन्तों का भंडा फोड़कर उन्हें पस्त कर दिया। सनातन धर्मी संस्कारों में पले होने पर भी स्वामी जी ने पुरोहित वर्ग की सामन्ती प्रकृति, उसके स्वार्थी क्रिया-कलापों या ढकोसलों के प्रति विद्रोह कर दिया। यदि पुरोहित-वर्ग ने हाथ उठाकर धमकी दी—"हम शाप दे देंगे और पूरा भूमिहार समाज जल कर भस्म हो जायेगा।" लौह पुरूष शास्त्रज्ञ स्वामी जी बंदर घुड़की से दबने— डरनें वाले नहीं थे। उन्होंने भी अपना दण्ड उठाकर भूमिहार को निर्भय ब्राह्मण समाज बनाने के लिये उत्तर दिया —"यह संन्यासी भी अपना शाप का ब्रह्मास्त्र छोड़ देगा।""

यदि स्वामी जी ने भूमिहार ब्राह्मण-समाज को संगठित किया तो पूरे समाज के उन्नयन के निमित्त। उन्होंने कभी उस समाज के बड़े-बड़े, जमींदार सामन्तों से परिचय-संपर्क नहीं बढ़ाया और न उनकी प्रत्यक्ष-परोक्ष-चापलूसी की। उन्होंने अपमानित तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्म-विस्मृत सामान्य भूमिहार ब्राह्मण - समाज के मध्य खंड़ा होकर स्वाभिमान, आत्म-चेतना, निर्भयता, साहस तथा आत्म-निर्भरता का शंखनाद किया जिससे उनमें आत्मबल आया और उन्होंने जमींदार सामन्तों का उत्साह पूर्वक सामना किया। इन धनी-मानी जमींदार सामन्तों के प्रति स्वामी जी की धारणा थी — "धनियों की अजीब खोपड़ी होती है। यह सब को एक ही तराजू पर तौलना चाहते हैं और वह तराजू है पैसा।" स्वामी जी के नेतृत्व में भूमिहार ब्राह्मणों ने भूमिहार ब्राह्मण-सभा पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। उन्होंने सभा को राष्ट्रीय और गणतंत्रात्मक बना दिया। वह राजभक्त सामन्तों की सभा नहीं रही। उसमें राजा-रंक सबको समान आसन प्राप्त होता था। "मेरा जीवन-संघर्ष" की यह उद्धृति इसकी पुष्टि करती है — "यह पहला ही मौका था कि सरकार का बागी उसका सभापति था और यह पहला ही अवसर था, जब सभी अमीर-गरीब एक ही सतह में एक ही प्रकार के बिछौने पर बैठे थे। सभापति के सिवाय किसी भी और के लिये ऊंची या खास जगह नहीं थी।.....

..... होती भी क्यों ? वह तो जातीय सभा थी और जाति के नाते तो सभी बराबर हैं। फिर कोई ऊंचे और कोई नीचे क्यों बैठे ? यह भेद-भाव क्यों ? इस प्रकार लड़कर मैंने सभा में समानता और गणतंत्र ला दिया था।"

स्वामी जी ने सभा में अमीर-गरीब सबको एक सतह पर एक प्रकार के टाट या बिछौने पर बैठाकर जिस प्रकार सामान्य भूमिहार ब्राह्मणों का मनोबल ऊंचा कर दिया और उसमें स्वाभिमान की आग जला दी उसी प्रकार पुरोहितों की तानाशाही को भी झकझोर डाला और उनकी मनमानी नहीं चलने दी। उन्होंने भूमिहीन ब्राह्मणों को पुरोहिती करने के लिए ललकार कर खड़ा कर दिया जिससे उनमें स्वावलंबन आया और उनका आत्म सम्मान जागा। स्वामी जी ने पुरोहितों का विरोध नहीं किया बल्कि उनकी सामन्ती प्रवृत्ति, मनमानेपन तथा समाज, को अन्धविश्वासी बनाने का विरोध किया मेरा जीवन-संघर्ष में वे कहते हैं — "पुरोहितों ने सिर्फ पुरोहिती न कराने की धमकी दी प्रत्युत बहुत ज़गह भूमिहार ब्राह्मणों की पुरोहिती— विवाह श्रद्धांदि — कराना ही छोड़ दिया। इससे समाज में एक प्रकार का हाहाकार मच गया। विरोधी समझते थे कि अब तो स्वामी जी इस काम में पड़ेंगे नहीं। समाज के लोग भी कुछ ऐसा ही समझने लगे थे। इन लोगों ने बड़ी करूणवाणी में अपनी स्थिति मुझे बार-बार सुनाई थी। फलतः मेरा दिल फिर पसीज गया।... पुरोहित समझते थे इनमें कोई पौरोहित्य तो जानता नहीं, फलतः हार कर इन्हें गिरना ही होगा। फिर तो मनमानी शर्तें मनायेंगे।..... एक बार फिर सामाजिक कार्य में कूदना पड़ा। ..... इसी समय बारह सौ पृष्ठों की पुस्तक 'कर्मकलाप'" लिखी गयी। किताब हिन्दी मे भली भांति समझाकर लिखी गयी थी जिससे लोगों को कर्मकाण्ड कराने में सुविधा हो गई। फिर आगे स्वामी जी ने लिखा है — "मैंने युक्त प्रान्त और बिहार में घूम-घूम कर सैकड़ों सभाएं कीं और भूमिहार-ब्राह्मणों को ललकारा कि आत्म सम्मान का तकाजा है कि स्वयं पुरोहिती करो। मैं ने प्रयाग के पंडों आदि का दृष्टान्त भी दिया कि आखीर वे भी तो भूमिहार ही हैं। बस लोगों की आंखें खुली और इस काम में कूद पड़े !"

स्वामी जी का उद्देश्य न तो इस जातीय आन्दोलन के द्वारा किसी अन्य जाति पर दबाव बनाना था, न तो प्रतिशोध था और न तो आक्रामक रूख अपनाना था। एक मात्र इसका प्रयोजन भूमिहार, ब्राह्मण-समाज में आत्म सम्मान तथा आत्म अस्तित्व की रक्षा का भाव भरना था। स्वामी जी वीतराग पुरूष थे। उन्हें जाति की सेना खड़ी करके मठाधीश, विश्वविद्यालय का कुलपति अथवा मंत्री-मुख्यमंत्री आदि नहीं बनना था। उन्होंने समाज-सेवा या जन सेवा के भाव से यह काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरंभ किया था। इसके द्वारा उन्होंने एक आत्म-विस्मृत समाज में स्वाभिमान, स्वकर्त्तव्य-बोध तथा स्वावलंबन भर दिया। इस आन्दोलन का गाजीपुर जनपद के रेवतीपुर गांव में बड़ा जोर रहा। रेवतीपुर के अतिरिक्त शेरपुर, हरिहर पुर आदि गांवों में भी स्वामी जी के भाषणों का कार्यक्रम रहा। यहां इस आन्दोलन में रेवतीपुर निवासी सर्वश्री महावीर शर्मा ब्रह्मचारी, रामानन्दराय शर्मा, शुभ करण राय, वासु देव (बासू) राय, देवनाथ राय आदि विशेष सक्रिय रहे। ब्रह्मचारी महावीर शर्मा के प्रयास से सन् 1925 के आस-पास रेवती पुर में ब्रह्मर्षि संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हुई जो आज भी चल रहा है और जनपद तथा प्रदेश में संस्कृत का एक अच्छा विद्यालय है। इसमें संस्कृत पढ़ने की सबको छूट है। ब्रह्मचारी जी आजीवन कर्मकाण्ड कराते रहे। आज कल उनके चेले यह कार्य करते जा रहे हैं।

अहंकारी पुरोहित जो दक्षिणा, नेग आदि के द्वारा यजमानों का घोर दोहन कर रहे थे स्वामी जी ने उसे ब्रह्मचारी जी जैसे धाकड़, कर्मठ, त्यागी-तपी कर्मकांडियों को मैदान में खड़ा करके रोक दिया। उक्त कार्य-कर्ताओं में से किसी ने लेखक को बताया था—"स्वामी जी ने अपने उस समय के भाषणों में इस कहानी को कई गांवों में सुनाया था— एक धोबी को किसी तरह एक शेर का बच्चा हाथ लग गया। उसने बच्चे गधों के साथ उसे भी पाला। समय पाकर वह जवान हुआ। धोबी गधों के साथ उस पर भी लादी लादने लगा। कभी-कभी उसकी पीठ पर बैठ भी लेता। घर से घाट और घाट से घर का आना जाना प्रतिदिन का था। धोबी का घाट एक नदी पर था जो एक जंगल के किनारे से होकर बहती थी। जंगल का एक शेर धोबी के शेर की दशा देखकर खिन्न हो जाता था। एक दिन उससे न रहा गया। जब धोबी कपड़े धोने लगा और शेर गधों के साथ घूम-घूम कर चरने लगा तब शेर उसके समीप पहुंच कर बोला—'तुम गधा हो कि घास चर रहे हो और लादी ढो रहे हो?'"क्या इसमें सन्देह है?"जंगली शेर ने दांत तले अंगुली दबाली —"अरे! तुम इतना आत्म विस्मृति के अन्धकार में गिर गये हो! तुम इतना आत्म-ज्ञान शून्य हो! तुम शेर हो, शेर। आज जब धोबी तुम पर लादी लादे तब मौका उठाकर, गर्जना करके शान से चलना।" इतना कहकर जंगली शेर वहां से चला गया और जंगल के पास जा कर गरजा। शेर की गर्जना सुनकर धोबी सब कपड़े बटोर कर अपने गधों पर लाद दिया और एक हल्की लादी शेर की पीठ पर रखकर उस पर बैठ लिया। पीठ पर बैठते ही उसका शेर अंगिरा उठा और अंकड़ कर खड़ा हो गया। धोबी ने पतली छाकुन उसके शरीर पर जड़ दी। आज उस शेर की देह में आग लग गई। उसने गुरू गर्जना की। सुनते ही धोबी के प्राण सूख गये और वह पीठ पर से जमीन पर लुढ़क गया। शेर में शेर की चेतना आ गयी थी। उसने जोश में छलांग मारी। धोबी के घर का सारा संस्कार हवा में उड़ गया और उसने स्वाधीन जीवन की राह पकड़ ली।"

आगे स्वामी जी कहते थे कि "आज भूमिहार ब्राह्मण-समाज धोबी के शेर की भांति अपना होश-हवास खो चुका है जिससे वह ब्राह्मण-संस्कार खोता जा रहा है। उसे अपने को पहचानना चाहिए। जमींदारी के झूठे रूवाब में आकर आत्म-हत्या नहीं कर डालनी चाहिए।"

वास्तव में स्वामी जी ने अपनी सेवा का जो प्रथम चरण भूमिहार ब्राह्मण समाज के उत्थान-आन्दोलन के रूप में रोपा था उसमें उन्हें अहम्यन्य पुरोहितों और भूमिहार ब्राह्मणों - समाज के अहंकारी सामन्तों के विरूद्ध लड़ना पड़ रहा था। उन सामान्य जन, तिरस्कृत शोषित, अशिक्षित तथा धनहीन-मध्यवित्त भूमिहार ब्राह्मणों के लिए जिनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैतिक- धार्मिक वर्चस्व ध्वस्त कर दिया गया था । ये ब्राह्मण होकर पुरोहित ब्राह्मणों से और भाई-विरादर होकर जमींदार-सामन्तों से समानता और सम्मान नहीं प्राप्त कर पा रहे थे । बिशुद्ध चित्त जन्मजात जनसेवी स्वामी जी ने इस समाज-सेवा के रूप में ही, चाहे उस समय उनका वैसा उद्देश्य न रहा हो, शोषक वर्ग के विरूद्ध शोषित वर्ग में आत्म चेतना, स्वाभिमान, साहस, निर्भयता जुझारूपन आदि भाव भरकर उसे अपने अधिकार के लिये लड़ने को सजग कर दिया जिसका परिणाम हुआ कि भूमिहार ब्राह्मण-सभा के इस वर्ग के कार्यकर्त्ता आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और फिर किसान-सभा के आन्दोलनों में स्वामी जी का पूरा सहयोग किया और आवश्यकता पड़ने पर नेतृत्व भी संभाला । पहले स्वामी जी ने उक्त समाज के उद्धार तक ही जन-सेवा का निश्चय किया था, किन्त जन-सेवा के इस चरण ने स्वामी जी को इतना अनुप्राणित किया कि उसकी परिसीमा उन्होंने बढ़ा दी और देश-सेवा का संकल्प लेकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े । विदेशी निरंकुश-दुर्मद शासन-सत्ता द्वारा पदमर्दित-शोषित जनता को अपनी ओजस्वी बाणी से उद्वेलित - उद्बुद्ध करने में तथा संकट-काल में उसका नेतृत्व करने में वें सदा अविचल रहे। स्वामी जी जन-सेवा में ही आत्म-मुक्ति और ब्रह्मज्ञान का सुँख लेते रह गये। उन्होंने दलित किसान-मजदूरों की सेवा ही अपना परम उद्देश्य समझ लिया । इनके लिये उन्होंने राजनीतिक आजादी की लड़ाई ही नहीं लड़ी अपितु आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई भी जोरदारी से छेड़ना चाहते रहे । इस प्रकार जनता की सेवा में जूझते हुए स्वामी जी सन्' 50 में ब्रह्म-लीन हो गये ।

स्वामी जी पठन-पाठन तथा शास्त्र मंथन कर अपने को पूर्ण समर्थ बनाकर समाज-सेवा में बड़ी तेजस्विता के साथ उतरे और उसमें जादू जैसा प्रभाव दिखाया । तदुपरान्त ज्यों ही उन्हें देश की पुकार सुनाई पड़ी त्यों ही देश की आजादी की लड़ाई में अगली पंक्ति में जा डटे । फिर किसान- मज़दूरोंकी कराह सुनते ही शोषकों के विरूद्ध शंखनाद किया । इस प्रकार स्वामी जी की जन-सेवा विकास का एक क्रमबद्ध उज्जवल इतिहास हैं जिसे पढ़कर मानवता की सेवा करने वाले सदा अनुप्राणित होते रहेंगे । आज जब देश में अपनी-अपनी झोली भरने की होड़ लगी हुई है, कुर्सी हथियाने की घोर प्रतिद्वंद्विता चल रही है, एक मात्र वोट की कुटिल राजनीति रह गई है, नेतृत्व भाई-भतीजाबाद, जातिवाद, सवर्ण-अवर्ण के घेरे में कैद होता जा रहा है, नेतागिरी चलाने के लिए हिन्दू मुसलमान विद्वेष का जहर बोया जा रहा हैं, अनुदिन राष्ट्र-हित की उपेक्षा हो रही है तथा मानवता बाद का ढपोरशंख बजाया जा रहा है तब स्वामी जी जैसे त्यागी, तपी, जुझारू,कर्मठ, विद्वान, निःसंग तथा जन-सेवी जन-नायक की याद आना स्वाभाविक है ।

स्वामी जी दीनबन्धु थे, दलितों-शोषितों की बाणी थे, सर्वहारा के प्राण थे और मानवता के सच्चे सखा थे। स्वामी जी का महत्व सार्वकालिक और सार्वदेशिक है । जब आज भ्रष्टता का बाजार गर्म है, बलात्कार-व्यभिचार की घटनाओं का समाचार अखबारों में प्रतिदिन पढ़ने को मिल रहा है तथा आतंकवाद से देश त्रस्त है तब स्वामी जी जैसे निर्विवाद, असंदिग्ध विमल नेतृत्व के द्वारा ही देश या जन-कल्याण की आशा की जा सकती है । जब तक धरती पर मानवता रहेगी और सबको सुखी बनाने की चिन्ता चलती रहेगी तब तक किसान-मजदूरों के मसीहा स्वामी सहजानन्द सरस्वती प्रासंगिक बने रहेंगे और अभिवंदित होते रहेंगे। उनका पूरा जीवन संघर्ष, पढ़ने-समझने , आकलित करने के अनन्तर किसी को भी उनकी अधुनातन प्रासंगिकता पर विचिकित्सा-विकल्प करने को अवकाश नहीं मिलेगा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय संकीर्णता और स्वामी सहजानंद का दर्शन

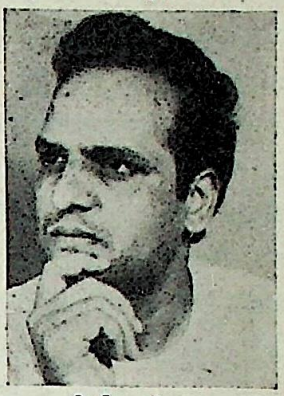

गिरीश पंकज

समकालीन परिदृश्य दुखद है। साम्प्रदायिकता ने इस महादेश की गौरवशाली परम्परा, सद्भाव की परम्परा को आहत करने का सिलसिला-सा बना दिया था, अब जातीय संकीर्णता ने नए किस्म की अराजकता का माहौल तैयार किया है। सिर्फ सत्ता पर काबिज रहने की निम्नस्तरीय प्रवृत्ति ने देश को दांव पर लगा दिया है। ऐसे विषम परिपेक्ष में मध्ययुग के संत और समाजसुधारक कबीर की याद बरबस ताजा हो जाती हैं। कबीर ने हिन्दू-मुस्लिमों के आपसी विद्वेष को देखकर अपनी रचनाओं के माध्यम से सीधा प्रहार किया था। उन्होंने दकियानूस सोच के खिलाफ जो रचनात्मक जेहाद छेड़ा था, वह आज भी प्रासंगिक है। और कबीर जैसे महान व्यक्तित्व की जरूरत हमें आज तक महसूस होती है। यह इस महादेश की खुशकिस्मती है कि तमाम विषमताओं के बीच भी आस्था और विश्वास जगाने के लिए समय-समय पर ऐसी विभूतियां जन्म लेती रही हैं, जिनके कारण साम्प्रदायिकता और जातीयता जैसे जहर की तासीर बहुत हद तक कम हो जाती है। अलगाव के खिलाफ हस्तक्षेप समय-सापेक्ष पहल है। स्वामी सहजानंद सरस्वती इसी तरह की हुतात्मा थे, जिसने दलितों के खिलाफ संघर्ष किया था और जातीय अहम् से ग्रस्त सोच के खिलाफ एक संयुक्त अभियान छेड़ा था। आज, जबकि जातीय संकीर्णता जोरों पर है, स्वामी जी की अनुपस्थिति बेहद खलती है। काश, वह होते तो उन ताकतों के खिलाफ लड़ाई का मार्ग और आसानी के साथ प्रशस्त हो सकता था।

सहजानंद सरस्वती ने किसानों के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया। स्वामी जी ने सामंतवाद, साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के विरूद्ध संघर्ष का बिगुल फूंका था। पोंगापंथी ब्राह्मणों के खिलाफ आवाज उठाने का मामला हो, चाहे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ खड़े होने का मामला हो, सहजानंद सरस्वती हर मोर्चे पर अव्वल रहे। और अंतिम सांस तक इस स्वामी ने अपना मनुज धर्म निभाया।

जातीय संकीर्णता के खिलाफ स्वामी जी के मन में विद्रोह की भावना ने तब जन्म लिया, जब उन्होंने देखा कि चंद ठेकेदार किस्म के ब्राह्मण अपनी जातीय स्मृतियों के आधार पर अपनी 'सत्ता' कायम रखना चाहते हैं। वे ब्राह्मण सिर्फ इसलिए श्रेष्ठ हैं क्योंकि वह ब्राह्मण हैं? स्वामीजी ने इस मानसिकता को लताड़ते हुएं यह सावित कर दिया कि श्रेष्ठता धर्म या जातिगत नहीं होती, वह ज्ञानगत है। 'जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान'। इस परम्परा के पक्षधर थे स्वामी जी। वाराणसी में संस्कृत अध्ययन करते हुए उन्हें वहां के पंडितों से संघर्ष करना पड़ा। स्वामी जी भूमिहार के बेटे थे। ब्राह्मण नहीं थे। काशी के ब्राह्मणों का कहना था कि सन्यासी वही बन सकता है जो ब्राह्मण हो। नवरंग राय संन्यासी होने बनारस आए थे। एक सन्यासी के मार्गदर्शन में वह संस्कृत साहित्य एवं वेदांत आदि का गहन अध्ययन कर रहे थे। यह सब पोंगा-पंथियों के लिए नागवार था। उन्होंने खूब बावेला मचाया। इस पुरातन सोच से नवरंग राय, जो तब तक सहजानंद सरस्वती हो चुके थे, काफी व्यथित हुए। उन्होंने यह सिद्ध करने के लिए कि भूमिहार भी ब्राह्मण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है और भूमिहार का पुत्र भी संन्यासियों की जमात में शामिल हो सकता है, काशी के पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। शास्त्रार्थ हुआ भी जिसमें स्वामी सहजानंद विजयी हुए। इस विजयश्री के बाद उन्हें 'त्रीदंडी' संन्यासी के रूप में पहचान मिली। स्वामी जी की इस सफलता ने उन्हें क्रांतिकारी एवं प्रगतिशील संन्यासी के रूप में यश दिलाया। काशी के ब्राह्मणों के दंभ को तोड़ने के साथ ही स्वामी जी ने धर्म एवं जातीय संकीर्णता के खिलाफ जैसे अभियान ही छेड़ दिया था।

स्वामी जी ने धार्मिक पाखंड का पर्दाफाश करने के साथ-साथ छुआछूत की घिनौनी भावना के खिलाफ भी आवाज उठायी। उन्होंने देखा और महसूस किया कि "लोगों की छूतछात की भावना एक प्रकार की बनावटी चीज थी क्योंकि जब सुंदर मिठाइयां या इस प्रकार की चीजें कहीं से किसी के पास आती थीं, वे उनमें शरीक हो जाते थे मगर रोटी, भात में छुआछूत मानते थे।"

स्वामी जी ने जातीय एवं धार्मिक संकीर्णता की खूब खबर ली। वे वैज्ञानिक सोच के पक्षधर थे। हिन्दुस्तान में स्वामी विवेकानंद के बाद और उनसे भी कहीं आगे की सोच वाले स्वामी थे सहजानंद सरस्वती। बिहार में तो उन्होंने जैसे क्रांतिकारी सोच का माहौल सा बना दिया था। ब्राह्मण ही संस्कृत के अध्ययन का अधिकारी क्यों? इस प्रश्न का हल करने के लिए उन्होंने बिहटा में 'सीतारामाश्रम' की स्थापना की और संस्कृत शिक्षा के द्वार सबके लिए खोल दिए। अपने आश्रम के बारे में उन्होंने कहा था कि इस आश्रम में भूमिहारों के बच्चे तो पढ़ते हैं ही, सरयूपारियों एवं कान्यकुब्जों के लड़के भी पढ़ते हैं। बनिये या दूसरे लड़के जब चाहते हैं, वहां के पंडितों से पढ़ जाते हैं। खुशी से पंडित लोग पढ़ा भी देते हैं। अतः पढ़ने में कोई भेदभाव नहीं है।

इस तरह स्वामी जी के प्रयासों से ब्राह्मणों का दर्प टूटा और शिक्षा के क्षेत्र में समतावाद की विजय हुई।

सामाजिक न्याय और किसानों का उद्धार, देश की आजादी। इन सब बिंदुओं को अपने जीवन का पाथेय बनाकर चलने वाले सहजानंद सरस्वती एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे, जहां शोषण न हो, जहां दलित न हों, जहां समता और ममता की खुशबू चारों तरफ बिखरी हुई हो। सच्चे कर्मयोगी थे सहजानंद। उनका मानना था कि "सिर्फ मार्क्सवादी प्रणाली पर ही समाज का पुनर्निर्माण किया जा सकता है ताकि सभी तरह की हिंसा और संकीर्णता—शोषण से मुक्ति मिले। यहां हम गांधीवाद से आसमान— जमीन की दूरी पर हैं।"

स्वामी जी ने जातीय विद्रूपताओं के विरूद्ध संघर्ष के साथ-साथ जब अंग्रेजों के खिलाफ अपना जंग शुरू किया था, तब भी वे सजगः थे। वह चाहते थे कि आजादी की लड़ाई में साम्प्रदायिक ताकतों को शामिल न किया जाए। ये ताकतें अगर शामिल होंगी तो गोरों को "फूट डालो और राज करो" जैसी सोच को हवा देने का मौका मिल जाएगा और राष्ट्रीय एकता की भावना आहत होगी। वे जिन्ना जैसे साम्प्रदायिक लोगों को पहचानते थे। हम पाते हैं कि अंततः देश दो-फांक हो गया।

स्वामी जी वर्ण से वर्ग संघर्ष और गांधीवाद से मार्क्सवाद की ओर बढ़े और अंत तक शोषण मुक्त समाज की रचना में लगे रहे। वे किसानों में भगवान देखते थे और उन्ही की पूजा करते थे। वे बर्दाश्त नही कर सकते थे कि 'मेरे भगवान का कोई अपमान करे।' किसानों का शोषण भी जातीय मानसिकता से ग्रस्त होकर जमींदार और अन्य लोग करते रहे इसीलिए स्वामीजी ने किसानों के संघर्ष के लिए उन्हें संगठित किया। उन्होंने पाया कि कुछ मुट्ठी भर लोग किसानों के साथ शोषण का खेल खेल रहे हैं। अपनी इस भावना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को उन्होंने 'किसानों को फंसाने की तैयारियां' नामक एक पुस्तिका में कुछ यूं व्यक्त किया, "आज तो जातीय संस्थाएं एकमात्र कुछ गिने चुने प्रतिष्ठित चलते-पुर्जे तथा धनिकों के राजनीतिक स्वार्थ साधन की सामग्री बन गई है और खूबी यह है कि खुल्लम-खुल्ला तो समाज सुधार की बातें की जाती है लेकिन चुपके-चुपके राजनीतिक स्वार्थ साधन का षड्यंत्र किया जाता है।"

जब स्वामी जी जातीय संकीर्णता के खिलाफ मुखर हुए तो लोगों को स्वामी जी पर ही जातिवादी होने का आरोप लगाया। इस पर उन्हें हंसी आयी लेकिन वे अपने 'अभियान' से डिगे नहीं। उन्होंने भूमिहारों के साथ-साथ वक्त पड़ने पर गैर भूमिहारों के पक्ष में भी बात की। दरअसल सहजानंद सरस्वती की लोक प्रियता ने अनेक शत्रु खड़े कर दिये लेकिन इससे एक संन्यासी को क्या फर्क पड़ता था। उन्हें तो अपना काम करना था। समाज सुधार और राष्ट्र की आजादी ही उनका सपना था। इसे पूरा करने के लिए वे पूर्णतः प्रतिबद्ध रहे। दलितों के संन्यासी, गरीबों के भगवान, बन चुके स्वामी जी जैसे विभूतियों की आज देश को सख्त जरूरत है। आज चारों तरफ जातीय संकीर्णता और अपने-अपने धर्मों की श्रेष्ठता दंभ फिर से जोर मार रहा है। ऐसे दौर में स्वामी जी कितने प्रासंगिक हो उठे हैं। ठीक है, स्वामी जी हमारे बीच नहीं है लेकिन क्या उनके अनुयायी, राष्ट्रव्यापी अभियान छेड़कर जातीय संकीर्णता के खिलाफ जेहाद छेड़ सकते?

आज जरूरत इस बात की है कि सहजानंद जी के दर्शन को —प्रगतिशील दर्शन को—राष्ट्रव्यापी प्रचार-प्रसार मिले। नयी पीढ़ी के लोग सहजानंद को नहीं जानते। नयी पीढ़ी में ऐसे क्रांतिकारी संन्यासी के संस्कार आने जरूरी हैं, तभी यह देश जातीय संकीर्णता के प्लेग से मुक्त हो सकेगा। पिछड़ी मानसिकता के पिस्सुओं से देश को बचाने के लिए सहजानंद के विचार बरदान साबित होंगे। जरूरत है ईमानदार पहल की।

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

FRIENDS EL'DOVADO

E-31, HAUZ KHAS, NEW DELHI - 110 016

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments

FROM

HARYANA COATED PAPERS LIMITED

Manufacturers of Art, Chromo and other Coated speciality papers

WORKS
14/1, Mathura Road
Faridabad-121003
Haryana

Ph : 8275931 / 8275631
8275632
Fax: 0129-275330
Telex : 0343-337 HCPF IN

REGISTERED OFFICE
Sandhya Deep (3rd Floor)
15, Community Centre
East of Kailash
New Delhi - 110 065
Ph : 6415189, 6410060
Fax : 011-6475403
Telex : 031-71225 HCPL IN

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM

M/s TIKARAM & SONS
B-3, BADLI
DELHI

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM

PASUPATI SPG. & WVG. MILLS LTD.
1561, NIRMAL TOWER
BARAKHAMBA ROAD, NEW DELHI - 110001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती की प्रासंगिकता – आज के परिप्रेक्ष्य में

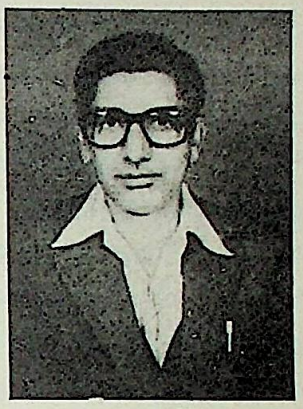

दयाशंकर सिंह

जिस तरह बसुन्धरा पर अत्याचार व अनाचार का समूल विनाश कर धर्म और सत्य के रक्षार्थ परमेश्वर स्वयं अवतार लेते है उसी प्रकार नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिये समय-समय पर ईश्वर के विभूति तत्व का अवतरण होता है जो अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से मानव व देश सेवा कर अमर हो जाते हैं। ऐसे महापुरूषों के आदर्श की प्रासंगिकता उस समय की सीमा तक सीमित नहीं रहती बल्कि युग युगान्तर तक प्रेरणा का स्रोत बना रहता है। गौतम बुद्ध महावीर, गोस्वामी तुलसीदास, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, पंडित बाल गंगाधर तिलक, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी आदि ने देश व समाज की संरचना में जो योगदान दिये हैं वे उस समय के लिये ही प्रासंगिक नहीं था बल्कि वे आज भी पथ प्रदर्शक के रूप में अनुकरणीय है, प्रातः स्मरणीय हैं।

साधू सन्यासी तो एक निष्ठ होते हैं। उनका लक्ष्य तो मोक्ष पाने व अपने शिष्यों को मोक्ष द्वार की राह बताने तक सीमित है। लेकिन इस अवधारणा को निर्मूल बताया स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने जो युग पर्वतनाय, 'बहुजन सुखाय' के लिये कार्य किया न कि स्वान्तः सुखाय। स्वामी जी ने वर्ष 1907 में महाशिवरात्रि पर्व के दिन, संयोग से जो इनका जन्म दिन भी था, काशी में सन्यास लिया, दण्ड धारण किया। उन्होंने धार्मिक, ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। ईश्वर का दर्शन पाने के लिये जंगलों, पहाड़ों व तीर्थ स्थलों का भ्रमण किया लेकिन उन्हें ईश्वर का दर्शन नहीं हुआ और न ही सत्य का वास्तविक ज्ञान हुआ। भागवत में उन्हें एक सूत्र मिला कि भगवान नृसिंह ने ध्रुव को उपदेश दिया था कि दीन दुखी की सेवा ही मेरी सच्ची उपासना है। इसी सूत्र ने उन्हें ग्रामीण दीन-दुखी, दलित, कमजोर असहाय किसानों की सेवा की ओर आकृष्ट किया। उन्हें महसूस हुआ कि दिन-रात परिश्रम करने वाला किसान जो अन्नदाता है उसे उसका सही पारिश्रमिक नहीं मिलता। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी आत्म कथा में देश के विवश व असहाय किसानों की व्यथा का मार्मिक चित्रण निम्न प्रकार किया है—किसान वर्ग मूढ़, गरीबी में फंसा हुआ अपने दुर्भाग्य पर रोता है। वह सरकार, जमींदार, साहूकार, सरकारी अफसर, वकील, पंडों और पुजारियों द्वारा शोषित होता है।

स्वामी सहजानन्द ने किसानों की दयनीय दशा को सोच कर तथा किसानों की व्यथा लिखकर अपने कर्तव्य की इति श्री नहीं किया बल्कि उनकी दयनीय दशा से प्रेरित होकर किसानों की सेवा का व्रत लिया जिसे धर्म मानकर जीवन पर्यन्त निर्वाह किया। स्वामी जी ने अर्जुन को दिये गये कृष्ण के उपदेश को अपना आदर्श माना और कर्म को स्वयं करने तथा दूसरों को परिश्रम से जीवन को सार्थक करने की प्रेरणा देने का संकल्प लिया। उनका मानना था कि "मैं ईश्वर को ढूंढ़ने चला, जंगलों और पहाड़ों में ढूढ़ा, तीर्थधामं बद्रीनाथ, केदारनाथ, मथुरा-वृन्दाबन अयोध्या-काशी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में भी तलाशा, धार्मिक ग्रन्थों में भी पाने का प्रयास किया लेकिन कही नहीं पा सका। यदि वह कही मिला तो किसानों में। किसान ही मेरे भगवान है और मैं उन्हीं की पूजा किया करता हूं। मुझे यह बरदास्त नहीं कि कोई मेरे भगवान का अपमान करें।" स्वामी जी का उपरोक्त दर्शन रामचरित मानस, गीता व वेदों के सूत्रों पर आधारित है। गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में लिखा है कि सचराचर जगत ही ईश्वर का रूप है। वास्तव में जो उस रूप की सेवा में लगा है, वस्तुत: वही ईश्वर का अनन्य भक्त है। वेदों में भी कहा गया है कि समाज की उत्पत्ति भगवान के शरीर से हुआ है। अतएव समाज सेवा का कार्य प्रत्यक्ष रूप से भगवान की सेवा है। दीन-दुखी व दलितों की सेवा तो मानव धर्म का अंग है। स्वामी जी का यह दर्शन युग युगान्तर तक तो प्रासंगिक है।

स्वामी जी युग द्रष्टा थे। उनका दर्शन, चिन्तंन उस युग के अनुरूप तो था ही, आज के पथपदर्शकों की आचार-संहिता भी है। वे जानते थे कि भारतवर्ष में युग निर्माण देश में रहने वाले 80 प्रतिशत किसानों के कल्याण से ही सम्भव है। स्वामी जी 5 दिसम्बर 1920 को पटना में मौलाना मजरूल के निवास पर महात्मा गांधी से मिलकर कांग्रेस पार्टी में प्रवेश किये और स्वदेश सेवा में लग गये। उस समय भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिये स्वतंत्रता आन्दोलन तेज करना था। इस आन्दोलन को जन-जन से जोड़ने के लिये शहर से गांवों में लाना था। इस कार्य को स्वामी जी ने उत्तर-प्रदेश व बिहार में किया। फिर देश के अन्य भागों में किसान आन्दोलन को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ कर किया। इसका परिणाम सुखद रहा। महात्मा गांधी के 'नमक आंदोलन', 'सत्याग्रह आंदोलन', 'अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन' को जन सहयोग मिला विशेषकर ग्रामीण अंचलों से। पुरूषों के साथ महिलाओं ने भी निर्भिकता से स्वतंत्रता संग्राम में अपना विशिष्ट योगदान दिया। उत्तर प्रदेश व विहार जो स्वामी जी का कार्य क्षेत्र था वहां तो स्वतंत्रता संग्राम जन-जन के जीवन का अंग बन गया था। परिणाम-स्वरूप भारत स्वतंत्र हुआ।

स्वामी जी राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनका मानना था कि किसानों व कृषक मजदूरों के कल्याण से देश का कल्याण हो सकता है। किसानों के कल्याण के लिये प्रान्तीय सरकार व केन्द्रीय सरकार को आगाह करते थे। आज भारत को आजाद हुये 47 वर्ष हो गया लेकिन स्वामी जी की आर्थिक स्वतंत्रता तथा महात्मा गांधी के 'रामराज' का सपना आज भी अधूरा है। स्वामी जी के आर्थिक स्वतंत्रता की सोच तथा महात्मा गांधी के रामराज' का आधार स्वदेश में निर्मित वस्तु का उपयोग तथा विदेशी सामनों का कम-से-कम, का उपयोग था। गांधी जी ने चरखा से निर्मित वस्त्र के उपयोग पर जोर दिया तो स्वामी जी ने बिहार के विहटा आश्रम में 400 चरखा से वस्त्र निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया। महात्मा गांधी लघु उद्योग के सिद्धान्त के पोषक थे तो स्वामी जी किसानों के आर्थिक सुधार के लिये कृषि पर आधारित लघु उद्योग की स्थापना पर जोर दिया।

किसानों की दयनीय दशा सुधारने के लिये कृषि पद्धति में आमूल परिवर्तन के लिये स्वामी जी निरन्तर प्रयासरत थे। किसानों को सिंचाई सुविधा हो तभी कृषि में प्रगति हो सकती है जो सिद्धान्त स्वामी जी ने प्रतिपादित किया था वह हरित क्रान्ति का अंग बन गया और पंचवर्षीय योजनाओं में प्रमुख मुद्दा बना। किसानों को उनकी उपज का उचित पारिश्रमिक मिलें, साहूकारों से किसानों का शोषण बन्द हो जिस सिद्धान्त को स्वामी जी ने प्रतिपादित किया था उसी पर आधारित सरकार द्वारा अनाजों का किसानों से सीधे क्रय किये जाने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीति अपनाया गया है। कृषि के लिये किसानों को उन्नतिशील बीज व उर्वरक के प्रयोग में जो अनुदान की सुविधा सरकार द्वारा दिया जा रहा है वह भी स्वामी जी के सिद्धान्त का ही आधार है।

स्वामी जी युग द्रष्टा थे। उन्होंने किसानों के सेवा का व्रत लिया था। किसानों को जागरण करने का उनका लक्ष्य था। वे असहाय, लाचार, शोषित दलित खेतिहर मजदूर व किसानों के मसीहा थे। उनका लक्ष्य था दमन, शोषण एवं पराधीनता से मुक्त नवयुग के निर्माण का। नवयुग के निर्माण में समाज में जागृति एवं समाज सुधार प्रमुख अंग था। किसानों में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने का उनका प्रयास था। उनका मानना था कि बाल-विवाह, दहेज प्रथा, बेजोड़ विवाह, विवाह में दिखावे पर व्यय किसानों को कमजोर बना देती है, उन्हें साहूकारों के गिरफ्त में ला देती है। अतएव इसके समूल विनाश के लिये उनका जीवन समर्पित था। यही कारण है कि महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी पुस्तक 'नये भारत के निर्माता' में देश के देदिव्यमान महापुरूषों में स्वामी सहजानन्द सरस्वती का भी उल्लेख ससम्मान किया है। पंडित राजनाथ ने अपनी पुस्तक 'त्रिकालजयी' में सर्वश्री राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती व सहजानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व में भारतीयता की गरिमा को निरन्तर रूप से प्रवाहित पाया और इन्हीं तीनों महापुरूषों को ही समाज का प्रतिनिधि व पथ प्रदर्शक माना। डा. प्रभाकर माचवे ने अपनी रचना 'प्रज्ञा प्रदीप' में सन् 1801 के बाद से जिनकी जन्म शती 2000 ई. तक पड़ती है, देश के 26 श्लाका पुरूषों की सूची प्रस्तुत की है। इस सूची में भारतीय शिल्प, साहित्य, विज्ञान व राजनीति क्षेत्र में देश के उत्थान के लिये विशिष्ट योगदान एवं भारतीय चिन्तन को मौलिक पथ पर अग्रसर किया और भावी पीढ़ी को मार्गदर्शन दिया है, को शामिल किया है। साहित्य में रवीन्द्र नाथ टैगोर, सुब्रह्मण्यम भारती, वंकीमचन्द्र और उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द, विज्ञान में जगदीशचन्द्र वोस, सर सी.बी.रमन, वामपंथी विचारधारा में दो नाम मानवेन्द्र नाथ राय और स्वामी सहजानन्द सरस्वती का नाम है। मराठी भाषी डा. माचवे एक तटस्थ चिन्तक और विश्वविख्यात साहित्यकार थे। मराठी भाषा के द्वारा स्वामी जी को देश के पथ प्रदर्शक की सूची में रखना प्रमाणित करता है कि स्वामी जी का दर्शन उत्तर भारत में ही नहीं बल्कि दक्षिण भारत में भी लोकप्रिय है।

स्वामी जी शुद्ध हिन्दुस्तानी थे, देशभक्त थे। वे भारतीय संस्कृति के पोषक थे। राजनीति में भी रहकर उन्होंने सन्ध्या व गायत्री जप व पूजा का क्रम अनवरत रखा। जो ब्राह्मण संन्ध्या व गायत्री जप नहीं करते थे उन्हें ब्राह्मणत्व को पूर्ण करने के लिये प्रतिदिन सन्ध्या व गायत्री का जाप करने की प्रेरणा दिया। स्वामी जी भूमिहार ब्राह्मण वंश में जन्म लिया था। उनमें ब्राह्मणत्व के संस्कार के अभाव से दुखी हुये। स्वामी जी मद्यपान व धूम्रपान के सेवन व मांसाहारी आहार के सख्त विरोधी थे। मद्य निषेद का तो उन्होंने एक आन्दोलन खड़ा कर दिया था। आज अपने देश में विभिन्न प्रकार के मद्य का सेवन बढ़ रहा है। स्वामी जी इसके विभत्स रूप का अनुमान अपने काल में ही कर लिया था। आज देश में मद्यपान पर निषेद हो शराबबन्दी का कानून बने, यही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

स्वामी जी महाजागरण के महान पुरोधा थे। दण्डी स्वामी होते हुये भी शुद्ध हिन्दुस्तानी थे। हिन्दुस्तानी इसलिये कह रहा हूं क्योंकि उनका विश्वास धर्म व जाति के आधार पर पृथकवादी सिद्धान्त नही था। दण्डी स्वामी होते हुये भी वे स्वतंत्रता संग्राम व किसान आन्दोलन में सर्वश्री अशर्फुद्दीन चौधरी, मिया अकबर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शाह, मौलाना मजरूल हक आदि के साथ काम किये थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दू, सिक्ख, ईसाई, मुसलमान में भेदभाव नहीं था। स्वामी जी भी सर्वधर्म के पोषक थे। यही कारण है कि वामपंथी स्वामी जी के आदर्शों का अनुशरण करते है तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ राष्ट्रवादी विचारधारा के पोषक संगठन ने अपनी दैनिक प्रार्थना में जिन प्रातः स्मरणीय महापुरूषों की सूची रखी है उसमें व्यास, बाल्मीकि, रामचन्द्र, युधिष्ठिर, महाराणा प्रताप, बीर शिवाजी आदि के साथ स्वामी सहजानन्द सरस्वती का भी नाम है।

महापुरूष किसी एक जाति, सम्प्रदाय या क्षेत्र का चिन्तन नही करते। उनके लिये तो समूचा देश, सर्वधर्म समभाव होता है, तभी तो लोक कल्याण का चिन्तन सम्भव है। आज तो क्षेत्र,जाति व धर्म के आधार पर पार्टियां गठित हो रही है जो वर्ग संघर्ष को बढ़ावा दे रही है। इस प्रवृत्ति के बढ़ावा से न केवल लोकतंत्र को खतरा है बल्कि राष्ट्र की एकता व अखण्डता को भी। साम्यवाद व समाजवाद की पार्टियां गरीबों के उत्थान का नारा देती है लेकिन व्यवहार में उनका आचरण जाति विशेष के उत्थान तक सीमित हो जाती है। सामाजिक न्याय के नाम पर आज राजनीतिक दल वर्ग व जाति का संघर्ष खड़ा कर दिया है। स्वामी सहजानन्द जीवन पर्यन्त गरीबों, दलितों दीन-दुखी व समाज में असहाय एवं किसानों की लड़ाई लड़े लेकिन दीन दुखियों में सवर्ण व अवर्ण का भेद नहीं रखा। स्वामी जी अत्याचार व अनाचार के विरूद्ध शेर जैसा दहाड़ लगाते थे। अत्याचार जाति विशेष का हो, वर्ग विशेष का हो, सरकारी अफसरों या साहूकारों का हो या ब्रिटिश साम्राज्य का हो वे उसके विरूद्ध निःस्वार्थ व बिना किसी भेदभाव के आवाज बुलन्द करते थे। स्वामी जी युग पुरूष थे। वे प्रतिभा का आदर करते थे। मानव को समभाव मानते थे। प्रतिभा का दमन न हो इसके लिये प्रयत्नशील थे। वर्ष 1937 में बिहार कौंसिल के चुनाव में हथुआ नरेश के विरूद्ध कांग्रेस पार्टी से एक समर्पित कार्यकर्त्ता जाति के धोबी को लड़ाया उसके चुनाव प्रचार में अपने भाषण में कहा था — राजा हथुआ से समाज का धोबी अच्छा है क्योंकि यह समाज की सेवा करता है। सेवक का स्थान मालिक से ऊपर है। मानस में कहा गया है —'राम ते अधिक राम का दासा।' धोबी की जीत हुई। छूआछूत के कलंक को मिटाने के लिये स्वामी जी का यह उदाहरण आज के सामाजिक न्याय का ढ़िढ़ोरा पिटने वालों को एक सबक है।

स्वामी जी की कांग्रेस के नीति निर्धारण में अहम् भूमिका होती थी। वे अपने धुन के पक्के थे। वे अपनी बात बिना लाग लपेट के कहते थे। द्वितीय विश्व महायुद्ध में कांग्रेस का प्रभावशाली गुट ब्रिटिश सरकार से समझौता का पक्षधर था लेकिन स्वामी जी युद्ध अवधि में ब्रिटिश सरकार से किसी प्रकार का समझौता के विरूद्ध थे। स्वामी जी ने नेता जी सुभाषचन्द्र बोस से मिलकर रामगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर एक अखिल भारतीय समझौता विरोधी सम्मेलन किया। सम्मेलन के अध्यक्ष नेता जी थे और उसके स्वागताध्यक्ष स्वामी जी थे। स्वामी जी ने ओजस्वी भाषण दिया। उन्होंने अपने भाषण में स्पष्ट घोषणा किया कि अंग्रेजों को न एक भाई और न एक पाई,। स्वामी जी ने अपने आकर्षण एवं ओजस्वी भाषण से दूसरे गुट के अधिकांश प्रतिनिधियों को अपनी ओर मोड़ लिया और समझौता विरोधी आन्दोलन का बहुमत हो गया। इसी कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष के लिये नेता जी सुभाषचन्द बोस को खड़ा किया। नेता जी के विरोध में खड़े उम्मीदवार को महात्मा गांधी व पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे दिग्गज नेताओं कां समर्थन प्राप्त था। इस अवसर पर सुभाष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू ने कहा था कि जब स्वामी सहजानन्द सरस्वती जैसा दहाड़ता शेर हमारे साथ है तब मुझे किसी की चिन्ता नहीं। सुभाष बाबू ने स्वामी जी पर अटूट आस्था व्यक्त किया था। यह स्वामी जी के प्रति श्रद्धा व विश्वास नहीं था बल्कि निःस्वार्थ समाजसेवी राष्ट्र भक्त के प्रति सम्मान था। सुभाष बाबू कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। जब लोगों ने उन्हें उनकी सफलता पर बधाइयां देने गये तो उन्होंने कहा था यह जीत मेरी नही है बल्कि यह जीत दण्डी स्वामी की है। आप लोग उन्हें बधाई दे। आज भारत वर्ष में समर्पित नेताओं का अभाव है। नेता जी व स्वामी जी के आदर्शों की आवश्यता है जो समाज व देश को अपने समर्पित निःस्वार्थ सेवा से पुनः जनजागरण कर सके।

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

CHAUHAN JEWELLERS

CHAUHAN SILVER LINE

Only at :

2632-34, Bank Street, Karol Bagh, New Delhi - 110005
Phones : 5755141, 5749857, 5723398 Fax : 5756336
E-8, South Extn. Part II, New Delhi - 110049
Phones : 6467058, 6467758

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments

FROM

λλλλλλλλλλλ

λλλλλλλλλ

λλλλλλ

λλλ

λ

D.P. ENGINEERS

HEATING, VENTILATION & AIR CONDITIONING ENGINEERS

N-8A JANGPURA EXTN, NEW DELHI - 110014

PHONES : 469-7918

463-3790

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय संकीर्णता और स्वामी सहजानन्द का दर्शन

प्रो0 कौशल किशोर शर्मा,

विश्व इतिहास के विश्लेषण से इस बात की पुष्टि होती है कि शासक वर्ग ने सत्ता में अपने को स्थापित रखने के लिए इस तरह की धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणाओं को विकसित किया जिससे समाज के शोषितों पर उनका वर्चस्व कायम रह सके। इतना ही नहीं उन्होंने शोषितों के बीच भी इस तरह की विभेदक रेखाएँ खींचने की कोशिश की जिससे शोषित वर्ग के रूप में एकत्र होकर वे शासकों का विरोध नहीं कर सके। इसी सिद्धान्त के तहत ब्रिटिश शासक वर्ग ने भी भारत वर्ष मे विभिन्न धर्मावलम्बियों को बाँट कर रखने की भरपूर कोशिश की और उनके इस प्रयास में उन्हें पूरी सफलता तब मिली जब हिन्दू और मुस्लिम संप्रदायवाद उनकी शह पर भारत में विकसित हुआ और अन्त में खूनी दंगे के बाद इसकी परिणति भारत के विभाजन में हुई। दुर्भाग्य की बात यह है कि आज भी कुछ शक्तियां अपने को सत्ता में बरकरार रखने के लिए न केवल संप्रदायवाद का सहारा ले रहीं है, वरन भारतीय समाज की एक कमजोर 'जाति-व्यवस्था' की संकीर्णताओं का दुरूपयोग कर समाज के टुकड़े-टुकड़े कर देने की दिशा मे भी अग्रसर हैं। ऐसी शक्तियों ने ऐतिहासिक तथ्यों को वर्तमान के संदर्भ में गलत ढंग से विश्लेषित कर, जातीय भावना को प्रतिक्रियावादी एवं हिंसात्मक अभिव्यक्ति देकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता और सद्भावना को समाप्त कर देश के सामने बहुत बड़ा सकंट खड़ा कर दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में महान क्रॉतिकारी चिंतक स्वामी सहजानन्द के दर्शन को प्रासंगिकता सहज ही हमारे सामने स्पष्ट हो जाती है। जातीय संकीर्णता के संदर्भ में स्वामी जी के दर्शन का महत्व न केवल उनके क्रॉतिकारी चिन्तन के कारण है, वरन् उनकी विचारधारा के अनुभूति-सिद्ध होने में हैं। असल में अनुभव सिद्ध विचारधारा, भारतीय शास्त्रीय वांगमय के गहन अध्ययन तथा मार्क्सवादी साहित्य के मंथन के आधार पर स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने विचार के क्षेत्र में ऐसी स्थापनायें रखीं जो सच्चाई की कसौटी पर आज भी उतनी ही खरी उतरती है जितनी स्वतंत्रता-पूर्व भारत में। उनके तर्क अकाट्य हैं क्योंकि वे न केवल अध्ययन-मनन पर आधारित हैं, बल्कि इसलिए कि वे व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित हैं।

जातीय संकीर्णताओं के दुरूपयोग के विषय में स्वामी सहजानन्द के द्वारा दिये गए मंतव्य पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता आज हम इसलिए महसूस कर रहे हैं क्योंकि जातीय सभावों से जुड़कर स्वामी सहजानन्द ने यह महसूस किया था कि जातीय नेता इन सभाओं का उपयोग अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए करते हैं। भूमिहार-ब्राह्मण सभा के ब्रिटिश सरकार-परस्त जमींदारो द्वारा दुरूपयोग पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि यह सभा अपने उद्घोषित कार्यक्रम को कभी भी पूरा नहीं कर पायी। न केवल उस सभा ने भूमिहार जाति के बीच शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में नगण्य काम किया, समाज-सुधार के कार्यों, जैसे-तिलक-दहेज आदि का पूरी तरह विरोध भी नहीं कर सकी। स्वामी जी के कथन की सत्यता तत्कालीन सरकारी दस्तावेजों के आधार पर भी सिद्ध होती है। इस भूमिहार-ब्राह्मण सभा के पदाधिकारी राय साहब, "राजा बहादुर" आदि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपाधि धारण, करने वाले बड़े-बड़े जमींदार हुआ करते थे।[1] 23 वर्षों के बाद भी सभा के स्वागताध्यक्ष का यही रोना था - सज्जनों। इस जाति में बड़े-बड़े राजा-महाराजा और धनवानों के रहते हुए भी जाति का यथोचित सुधार न हो सका। अन्य जातियों की अपेक्षा इस जाति में विद्या की कमी रही। इसलिए हमें विश्वास है कि जब तक आप लोग कटिबद्ध होकर जाति और समाज का कुछ कार्य अपने हाथ में न लेगें तब तक इसका उद्धार होना असम्भव है। ये राजे-महाराजे नाम-भाम की रकम[2] इस सभा को देकर इसमें अपनी धाक कायम रखते थे और इसका उपयोग ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्ति दिखाने में करते थे। इतना ही नहीं तत्कालीन जमींदार इसका उपयोग चुनावों को जीतने के लिए भी करते थे।[3] सभा के कर्णधारों की सरकार-परस्ती और अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए सभा के दुरूपयोग ने जल्दी ही स्वामी सहजानन्द का इस जातीय सभा से मोह भंग कर दिया। जैसे ही उन्हें यह विश्वास हो गया कि यह संस्था सामंती भूमिहारों की वर्ग-चेरी के रूप में कार्यरत हैं वैसें ही उन्होंने इस संस्था पर ऐसा जानलेवा कुठाराघात किया कि सभा छिन्न-भिन्न हो गयी और यह संस्था फिर कभी जीवन्त नहीं हो सकी।[4]

यहाँ स्वामी जी के भूमिहार महासभा से संपर्क तथा भूमिहार ब्राह्मण की उत्पत्ति और विकास के प्रति उनकी शोध-रूचि का मूल्यांकन समीचीन है क्योंकि निहित स्वार्थवश कुछ देशी और विदेशी इतिहासकार स्वामी जी के भूमिहार महासभा से सम्पर्क तथा भूमिहार ब्राह्मण से सम्बद्ध उनकी शोध-परक रचनाओं से निरर्थक यह सिद्ध करने पर आतुर हो जाते हैं कि स्वामी जी राष्ट्रीय, काँग्रेस, वामपंथी तथा किसान-मजदूर नेता नही अपितु भाम तथा जातीय नेता थे। इन विद्वानों को यह याद दिलाना आवश्यक है कि उस समय सच्चिदानन्द सिन्हा, राजेन्द्र प्रसाद, श्री कृष्ण सिंह, रामदयालु सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह सरीखे अधिकांश राष्ट्रीय नेता अपनी-अपनी जाति के महासभाओं से जुड़े हुए थे क्योंकि इन सभाओं का घोषित उद्देश्य अपनी-अपनी जातियों के बीच सामाजिक सुधार का कार्यक्रम लागू करना था। जहाँ तक भूमिहार ब्राह्मण सम्बन्धी उनकी रचनाओं का प्रश्न है, स्वामी सहजानन्द ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "भूमिहार ब्राह्मण परिचय और ब्रह्मर्षिवंश विस्तार" लिखकर एक जाति विशेष द्वारा भूमिहारों को नीचा दिखाने की कोशिश को नाकामयाब करने का एक सफल प्रयत्न किया। अगर गहराई से देखा जाय तो यह रूढ़िवादी एवं पाखण्ड़ी ब्राह्मण-तत्वों के वर्चस्व के खिलाफ एक युवा अक्खड़ दंडी संन्यासी को खुली चुनौती थी।

इस तरह स्वामी जी भूमिहार-ब्राह्मण सभा से अपने प्रगतिशील विचारों के कारण ही जुड़े और ब्राह्मणवाद की आरोपित सामाजिक श्रेष्ठता से लड़ने के लिए इसका इस्तेमाल किया।[6]

लेकिन जैसा कि हम पहले कह चुके हैं सामंती हितों एवं मध्यम वर्गीय अवसरवादिता के गठबंधन को पनाह देने वाली यह भूमिहार-ब्राह्मण सभा सहजानन्द को धीरे-धीरे विकसित करने लगी। इस सभा से उनके विलगाव का मूल कारण था राजनीतिक-सामाजिक जीवन की अनुभवों के आधार पर आयी उनकी नयी समझदारी। असल में स्वामी जी ने भूमिहार ब्राह्मण सभा जैसी समाजी संस्था के माध्यम से एक बहुत बड़े समुदाय के बीच मुख्य रूप से राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक तथा आर्थिक असमानता को मिटाने का सपना देखा था। लेकिन जब इस सपने का स्वामी जी ने टूटता हुआ पाया तो वे किसानों की क्रांति की अगुआई के लिए 1928-29 में आगे बढ़े और फिर स्वामी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। किसानों के उत्थान के लिए उनका यह धर्मयुद्ध उन्हें नये-से-नये क्षेत्रों एवं नई-नई समस्याओं तक उन्हें ले गया। उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

विचारधारा बदलती गई। नई-नई विचारधाराओं का ग्रहण कर उन्होंने समस्याओं को नये परिप्रेक्ष्य में देखा तथा "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" हेतु नवीनतम युद्धों के लिए जनता को तैयार किया। इस यात्रा ने स्वामी सहजानन्द को एक ऐसे प्रगतिवादी रास्ते पर ला दिया जिसका अन्त था एक ऐसे समाजवादी समाज की स्थापना जो सदा के लिए शोषण से मुक्त हो।[8] लोकहित विरोधी विचारों के निर्मम विरोध ने गाँधीवाद से प्रभावित मानवतावादी चिंतक को मार्क्सवादी चिंतक के रूप मे परिवर्तित कर दिया।

असल में व्यक्तिगत अनुभव और सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों का विश्लेषण ही स्वामी जी को वर्ण चरित्र और वर्ग-चरित्र की वैज्ञानिक व्याख्या तक ले गया। 1934 में ही स्वामी जी ने लिखा - सभी धर्मों और जातियों के अमीरों का एक ही समाज होता है और वे एक ही जगह बैठकर एक ही दृष्टिकोण से सोचते हैं, हमारी मिलों का माल मंहगा हों, हमें मजूरों को कम मजूरी देनी पड़े, हमें सूद भरपूर मिले, हमारी जमींदारी की आमदनी खुब बढ़े, समूची जमीन हमारी बकास्त और जिरात हो जाय और कोई भी रैयत हमारे सामने सिर न उठा सके, फलतः हम और हमारे अमले उसे जिस घाट पानी पिलावे—पियें। सभी धर्म और जाति के अमीर और धनी जमींदार ऐसा ही चाहते हैं।[9]

एक खास जातीय सभा से अपने सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की शुरूआत करने वाले सहजानन्द का जीवन क्रांतिकारी परिवर्तन का सर्वोत्तम उदाहरण है। 1929 में जमींदारों के निर्देशन में चलने वाली भूमिहार-ब्राह्मण सभा के विध्वंस में निर्णायक भूमिका अदा करने के बाद स्वामी जी लगातार हर तरह की जातीय सभाओं और उनके संगठनकर्त्ताओं पर प्रहार करते रहे। उनके ही शब्दों में -

बहुत ही अदब पर स्पष्टता के साथ मैं कह देना चाहता हूँ कि चाहे पहले कुछ भी स्थिति रही हो और मेरे जानते पहले भी यही थी, आज तो जातीय संस्थायें मात्र कुछ इने-गिने प्रतिष्ठित, चलते-पुर्जे तथा धनिकों के राजनीतिक स्वार्थ-साधन की सामग्री बन गयी है और खुबी यह है कि खुल्लम-खुल्ला तो वहाँ समाज सुधार की बातें की जाती हैं, लेकिन चुपके-चुपके राजनीतिक स्वार्थ-साधन का षड्यंत्र किया जाता है। जहाँ पहले किसी उच्च पदस्थ पदाधिकारी की दरबारी और स्वागत कर देने एवं राजभक्ति का बाहरी स्वांग भरने से सभाओं के ये चतुर खिलाड़ी अपने नजदीकियों तथा पिट्ठुओं के लिए नौकरियों, ऊंचे पद और दूसरी रियायतें हासिल कर लेते थे, वहीं उनके साथ-साथ ही अब चुनावों के युद्ध में भी सफलता पाते और पाना चाहते हैं।[10]

जैसा कि हम कह चुके हैं सहजानन्द के विचार अध्ययन पर कम, अनुभव पर अधिक आधारित थे। उन्होंने देखा था कि किस तरह इस शताब्दी के तीसरे दशक की शुरूवात के साथ विधान-परिषदों और बोर्डों के चुनाव के समय के आतें ही कुछ खास किस्म के लोग जातीय हित की दुहाई देकर अपना स्वार्थ-सिद्ध करते थे। इन नेताओं में अधिकांश समाज के उच्च वर्गों से आते थे। ऐसे नेताओं के स्वार्थ पर आधारित जातीय प्रेम पर प्रहार करते हुए स्वामी सहजानन्द ने लिखा - "जातीय प्रेम की सीमा है और जातीय नेता लोग भी उसका अतिक्रमण करने में साफ खतरा देखते हैं। फलतः समाज की आँखे ये खोल नहीं सकते। बलि के बकरे के साथ भी तो मुहब्बत की जाती है और उसे खिला पिला कर मोटा किया जाता है—उसमें स्वार्थ है। लेकिन उस बकरे को बाघ बनाने की बेवकुफी कौन करेगा सिवाय उस हितोपदेश के ऋषि के जिसने चूहे को बाघ बनाकर अपनी जान खतरे में डाली? यही है जातीय प्रेम और जातीय संस्थाओं की लीडरी का वास्तविक रहस्य। एक स्वार्थ के धनी या गरीब किसान या जमींदार आदि अपनी-अपनी सभायें करें तो यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात समझ में आ सकती। लेकिन धनी-गरीब किसान, जमींदार की खिचड़ी सभा का मतलब समझना-असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।[11]

स्वतंत्रता आन्दोलन के दरम्यान भीं इन जातीय सभाओं का बहुत जोर था। और कठिनाई यह थी कि अपने सामाजिक आधार के कमजोर होने के डर से राष्ट्रीय स्तर के नेता भी इनका विरोध तो नहीं करते थे बल्कि उन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पनपने देकर उनके शिकार अनजाने ही बन जाते थे। स्वामी सहजानन्द के अनुसार इस रूप में ये सभायें अपना जहर फैलाकर राष्ट्रीयता का गला घोंट रहीं थी यद्यपि इनके इस मारक (कातिल) नश्तर का किसी को पता नहीं लगता था। स्वामी जी के अनुसार जातीय सभाओं के नेता, कार्यकर्त्ता एवं स्तम्भ इतने मलिन हो जाते हैं कि राष्ट्रीय और मानवीय दृष्टि से वे काम करने के अयोग्य हो जाते हैं तथा उनके काम से लाभ होने के बजाय हानि ही अधिक होती हैं।[12]

स्वामी जी ने यह स्वीकार किया है कि जातीय सभाओं से जातियों को लाभ भी हो सकता है। किन्तु उनके अनुसार, इन सभाओं का स्वतंत्र रूप से राजनीति से बिलकुल ही अलग होकर काम करना आवश्यक है। सभी ईमानदार जातीय पत्रों और जातीय सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे सर्व प्रथम राजनीति से असहयोग कर लें। वह अपना ध्येय और नियम बना लें कि वे राजनीतिक वक्र थे, फिर वह चाहे सीधे हों या टेढ़े, कदापि पड़ने को तैयार न हो।[13] इसी संदर्भ में स्वामी जी ने राजनीति की भी एक अति बोधगम्य व्याख्या की है - राजनीति से मेरा मतलब सरकारी चुनावों से लेकर काँग्रेस या उग्रतम दल की राजनीति से है। मैं जानता हूँ कि इस राजनीति के इस प्रेम ने हमें धोखा दिया है, हालांकि आवेश में आकर उग्र राजनीति वाले ने भी अपनी राजनीति में जातीय सभाओंऔर उनके नेताओं को, सफलता की क्षणिक अधीरता में, प्रायः घसीट लिया करते हैं। ऐसी सभाओं में भाग लेने वाले चाहें तो शुद्ध राजनीतिक संस्थाओं में सम्मलित होकर उन्हीं के नाम पर अच्छी तरह काम कर सकते हैं। उनको (जातीय सभा में काम करने वाले नेताओं को) स्वतंत्र रूप से राजनीति से अलग ही रहना चाहिए। उन्हें न राजभक्ति से मतलब होना चाहिए; न राजद्रोह से, न डिस्ट्रिक बोर्डो और कौंसिलों आदि से और न उसके बायकाट से। इन सबों को वे भूल जायें तभी वे ठीक रास्ते पर चलकर समाज की, जाति की, सेवा कर सकते हैं। मैं मानता हूँ कि आज के विषाक्त वायुमंडल में भूल जाना तो असंभव है। ऐसी हालत में उन्हें यह प्रस्ताव या निश्चय करके उसे बराबर दोहराते रहना चाहिए कि जो लोग जाति के नाम पर वोट माँगे या इस ढंग की कोई बात करें उनका बहिष्कार होना चाहिए कि उन्हें इस काम से निराश करें। यदि जातीय सभाएँ और पत्र-पत्रिकायें अपनी कार्यवाही का श्रीगणेश ईमानदारी और मुस्तैदी से इस निश्चय के साथ करें तो समाज के अधिकांश झगड़े मिट जाये और वे काम चलाऊ और निर्दोष सिद्ध हो जायें।[14]

स्वामी सहजानन्द के जातीय सभाओं, जातीय नेताओं और जातीय संकीर्णता के विषय में दिये गये मन्तव्य आज उनकी मृत्यु के 44 वर्षों बाद भी समीचीन है। ब्रिटिशकाल में बड़े-बड़े जमींदार और पेशेवर लोग जातीय सभाओं का उपयोग ब्रिटिश सरकार के प्रति उनकी भक्ति दिखाने में करते थे।

आज भी जातियों की संकीर्णता को उभाकर अधिकांश नेता सत्ता पर अपनी पकड़ मज़बूत कर रहे हैं। ऐसे नेता जाति का नहीं, बल्कि अपना हित-साधन करते हैं। आज आवश्यकता है कि स्वामी सहजानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार किया जाय ताकि साधारण जनता की आँखे खुल सकें। आज देश को बचाने के लिए हर तरह की संकीर्णता को समाप्त करने के लिए आन्दोलन की आवश्यकता है। एतदर्थ, जातिवादी नेताओं की जातिगत संकीर्णता को उभारने की साजिश को बेनकाब़ करना ही स्वामी सहजानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संदर्भ : -

1. गवर्नमेंट ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा, पालिटिकल डिपार्टमैंट स्पेशल सेशन "बी" प्रोसिड़िंग्स, जनवरी, 1923, सं०-8-44, भूमिहार "बाह्मण सभा, कार्य विवरण 23 वीं भूमिहार ब्राह्मण सभा, गया दिनांक 31 दिसम्बर 1922
2. वही
3. वही
4. विजयचन्द्र प्रसाद चौधरी (सं०) स्वामी सहजानन्द सरस्वती, ओंकार से हुकार तक, पटना, 1990, पृष्ठ XIV
5. वही, पृष्ठ (XIII)
6. प्रभाकर प्रसाद सिंह, उपरोक्त, पृष्ठ - 21
7. सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, "जीवन गाथा", रामकिशोर चौधरी (सं०) स्वामी सहजानन्द सरस्वती, मुजफ्फरपुर।
8. रेणु कुमारी, "वर्ण से वर्ग की ओर", विजय चन्द्र प्रसाद चौधरी, उपरोक्त 99-100
9. स्वामी सहजानन्द, "किसानों को फसाने की तैयारियाँ", पृष्ठ - 22
10. वही, पृष्ठ 4-5
11. वही, पृष्ठ - 13
12. वही, पृष्ठ - 2
13. वही, पृष्ठ - 3
14. वही.

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

M/S BRINDCO SALES LTD

NEW DELHI

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments
FROM

M/s Goga Metal Udyog
3, Kulpur
Ext. Azad Pur, Delhi

With Best Compliments
FROM

A. 16/c, Bl.8
Loni Road
Delhi

With Best Compliments
FROM

M/s Giri Raj
Package Udyog
Delhi

With Best Compliments
FROM

Shri Rajesh Gupta

Azad Pur
Delhi

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय संकीर्णता एवं स्वामी सहजानन्द का दर्शन

प्रस्तावना

भारतीय परिवेश में जाति प्रथा एक विलक्षण सामाजिक संस्था के रूप में विकसित हुई। प्रत्येक जाति की अपनी रीति-रिवाज़, आचार-विचार और वंशगत व्यवसाय के आधार पर अलग-अलग पहचान बनी। अन्तर्विवाह की प्राथमिक मापदंडता जातीय पहचान को बेल दिया। इसके बावजूद अन्तः जातीय परस्पर निर्भरता तथा समाज के समग्र विकास में सहभागिता की स्थिति बनी रही। इस व्यवस्था के अन्तर्गत कुछ जातियों का समाजार्थिक शोषण भी हुआ। इस शोषण की उत्पत्ति जातीय संकीर्णता के गर्भ से हुई। इतना ही नहीं जातीय संकीर्णता मानव की सम्पूर्ण विकास में प्रमुख अवरोधक तत्व रही है।

जाति प्रथा एवं ब्राह्मण पुरोहितवाद

इस ऐतिहासिक तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है कि जाति प्रथा को सार्वभौम बनाने में ब्राह्मणवाद की केन्द्रीय भूमिका रही है। परन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि ब्राह्मणवाद जाति प्रथा की विचारधारा का एकमात्र पोषक नहीं रहा है।[1] अब यह प्रश्न उठता है कि ब्राह्मणवाद है क्या? श्री अशोक कुमार के अनुसार "आम तौर पर कहा जाय तो ब्राह्मणवाद का अर्थ है ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित आदर्श व दर्शन, सामाजिक आचरण व संगठन, संस्कृति व सभ्यता और पूजा विधि व धर्म, संक्षेप में सामाजिक जीवन का ब्राह्मणों द्वारा बतलाया गया तरीका व प्रणाली। इस प्रकार ब्राह्मणवाद हिन्दू समाज की बाह्य संरचना था, पूरी समग्रता के साथ प्रतिनिधित्व करता है। वस्तुतः प्राचीन काल में हिन्दू धर्म को ब्राह्मण धर्म कहा ही जाता था। ऐतिहासिक तौर पर बौद्धों ने इसका इस्तेमाल सदा सम्पूर्ण हिन्दू पद्धतियों को अभिव्यक्ति करने के लिये किया है"।[2]

श्रीमती सुधा राय

यद्यपि जाति सिद्धान्तों को धर्म का अंग बना कर ब्राह्मणों ने जाति प्रथा और ब्राह्मणवाद को अविभाज्य बना दिया था। बौद्ध धर्म भी जाति प्रथा को "कर्म" के आधार पर संरक्षित किया। आचार्य चतुरसेन ने "बौद्ध ब्राह्मण" का भी उल्लेख किया है।[3] इस्लाम के आगमन पर मुस्लिम शासक यद्यपि ब्राह्मणों के प्रति उदासीनता का भाव रखते थे फिर भी वे जाति प्रथा के प्रति सापेक्ष रहे। पं0 राहुल सांकृत्यायन जी ने अपनी पुस्तक "तुम्हारी क्षय" के पृष्ठ 10 पर लिखा है "कहने के लिए तो हिन्दुओं पर ताना कसते हुए इस्लाम कहता है कि हमने जाति-पांति के बंधनों को तोड़ दिया। इस्लाम में आते ही सब भाई-भाई हो जाते हैं लेकिन क्या यह बात सच है? यदि ऐसा होता तो आज मोमिन (जुलाहा), अप्सार (चुनिया), राइन (कुजड़ा) आदि का सवाल न उठता। .....सैयद, शेख, मलिक, पठान, उसी तरह का ख्याल अपने से छोटी जातियों से रखते हैं, जैसा कि हिन्दुओं के बड़े जाति वाले।.... सात सौ वर्ष बाद भी आज गांव का मोमिन जमींदारों और बड़ी जातों के जुल्म का वैसा ही शिकार है।" इतना ही नहीं मुस्लिम शासक जाति प्रथा को राजस्व वसूली में सहायक मानते हुए इसे पोषित किया।

सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में स्वामी रामानन्द ने जातिवाद के अभिषापों के विरुद्ध आवाज उठायी।[4] इस दौरान विभिन्न पंथों मुख्यतः कबीर तथा सिख पंथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने भी जाति प्रथा पर प्रहार किया परन्तु वांछित स्तर का परिवर्तन नहीं हुआ। ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों ने, "फूट डालो राज करो" की नीति के अन्तर्गत भारतीय सामन्तों, सम्प्रदायवादी और रूढिवादी मित्रों की सहायता से जातीय भावना को बढ़ाकर अपनी प्रभुसत्ता को अक्षुण रखने का पूरा प्रयास किया।[5]

आज़ादी की लड़ाई के दौरान गाँधी जी ने जातीय पहचान जातीय संकीर्णता से उत्पन्न अस्पृश्यता, ऊँच-नीच की भावना पर अहिंसात्मक कुठाराघात करते हुए समस्त जातियों/सम्प्रदायों के सहयोग से देश को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त कराया। गांधी जी का मानना था कि अस्पृश्यता, जाति प्रथा की उपज नही बल्कि ऊंच-नीच की उस भावना की उपज है, जो हिन्दू धर्म में घुस आयी है और उसे भीतर से खोखला कर रही है। इस प्रकार अस्पृश्यता जैसे ही खत्म होगी, स्वयं जाति प्रथा भी शुद्ध हो जायेगी। वह सच्ची वर्णाश्रम व्यवस्था बन जायेगी जिसमें प्रत्येक भाग एक दूसरे का पूरक होगा, कोई छोटा या बड़ा नहीं होगा। आज़ादी के तीन दशकों तक अलग-अलग जातीय पहचान के बावजूद हर जाति के सदस्य संकीर्णता की परिधि से ऊपर उठकर परस्पर सहयोग तथा विकास में सहभागिता के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे। जातीय संकीर्णता की भावना अहिंसात्मक आधार पर कम हो रही थी। इस क्षेत्र में ब्राह्मणों का योगदान सराहनीय था।[6]

जातीय भावना एवं संकीर्णता

प्रत्येक जाति के समान उद्गम, समान अभिवृत्ति, समान शारीरिक एवं साँस्कृतिक अभिलक्षण के आधार पर जातीय पहचान बनती है, जो जातीय भावना का मूल आधार है। इस जातीय पहचान से "हम" और "वे" की भावना विकसित होती है। डा0 श्यामचरण दूबे के अनुसार जातीय भावना का विकास प्रमुखत: सामाजिक दृष्टिकोण से अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने, जातिगत हीन भावना से छुटकारा पाने, अन्याय और उत्पीड़न से मुक्ति पाने, सत्ता में साझेदारी, प्रति संस्कृति और अप संस्कृति से बचाव, परम्परा के क्षरण, आत्मछवि को विकृत होने से रोकने और जातीय पुर्नजागरण के लिये होता है।[7]

आजकल जातीय भावना को सशक्त रूप से उभारने के प्रयास में नये-नये जातीय समीकरण बनते और बिगड़ते जा रहे हैं। कुछ प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के उद्देश्य से हिंसात्मक अभिव्यक्ति का भी सहारा ले रही हैं। फलत: जातीय अंधविश्वास, धर्मान्धता, एवं पारस्परिक अविश्वास की भावना बढ़ रही है जिसके कारण राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, सौहार्द तथा लोकतांत्रिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता संवेदनशील प्रशासन के समक्ष नयी समस्या पैदा होती जा रही है। स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी है कि एक प्रदेश के मुख्य सचिव को यहाँ तक कहना पड़ा "सरकारी कर्मचारी की कोई जाति नहीं होती।..... जब तक मैं मुख्य सचिव हूँ, जाति और धर्म की भावना प्रशासनिक सेवा में आने नहीं दूँगा।" मुख्य सचिव को यह बात उस समय कहनी पड़ी जब उन पर एक जाति विशेष में पैदा होने के कारण जातीय पहचान के पूर्वाग्रह से ग्रस्त शक्तियों द्वारा जातिगत आधार पर आक्षेप किया गया। यह शक्तियाँ सत्ता तथा विकास में भागीदारी के लिये जातीय संकीर्णता से ऊपर उठकर विवेक, तर्क सम्वाद का भी तो सहारा ले सकती है।

जातीय संकीर्णता एवं स्वामी सहजानन्द का दर्शन

स्वामी सहजानन्द जातीय संकीर्णता के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने इसके विरुद्ध हमेशा अहिंसात्मक संघर्ष किया। हमारे समाज में ब्राह्मणों (पुरोहित वर्ग) की अहम् भूमिका को स्वीकार किया गया था क्योंकि समाज की सारी व्यवस्था पुरोहित वर्ग ब्राह्मण के संरक्षण में काम करती थी।[8] पुरोहित वर्ग की विकृतियों का विरोध समय-समय पर तार्किक आधार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर हुआ। इस संदर्भ में स्वामी जी की विचारधारा स्पष्ट रही है। उदाहरण के लिये स्वामी जी के ऊपर घटित घटना को लिया जा सकता है।

स्वामी अच्युतानन्द ने ब्राह्मणेतर एक भूमिहार बालक (सहजानन्द) को दण्ड धारण करवा दिया। ब्राह्मण सन्यासियों ने इसे धर्म विरुद्ध माना तथा उन्होंने स्वामी जी को दण्ड धारण से पदच्युत करना चाहा। उनके रूढ़िवादिता और संकीर्णता से ग्रसित विचारधारा के अनुसार केवल ब्राह्मण ही दण्डी सन्यासी हो सकता है न कि किसी अन्य जाति के सदस्य। "ब्राह्मणों के मिथ्याभिमान ने व्यक्ति नहीं, एक गौरवपूर्ण जाति को अपमानित करना चाहा, और उसे वह बर्दास्त नहीं कर सका। उसने अपने दण्ड को उठाया और कुछ ही सालों में भूमिहारों में वह भाव भर दिया कि ब्राह्मणों को अपनी शेखी छोड़नी पड़ी।"[9] स्वामी जी ने विवेक, तर्क और सम्वाद के सहारे यह सिद्ध कर दिया कि दण्डी स्वामी बनने का अधिकार किसी एक जाति विशेष को नहीं है। इस प्रकार ब्राह्मणों के संकुचित क्षेत्र में स्वामी जी का यह आन्दोलन समता का आन्दोलन था।

ब्राह्मणवाद की संकीर्णता को समाप्त करने के लिये स्वामी जी ने बौद्धिक स्तर पर शास्त्रों, पुराणों तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों का सहारा लिया न कि वर्तमान की तरह हिंसात्मक भाषणों का जिसमें नफरत के सिवा कुछ नहीं होता। इस संदर्भ में संस्कृत भाषा के पठन-पाठन को भी लिया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द ने पिछड़ी जाति के लोगों को सम्बोधित करते हुए लिखा है कि "यदि तुम अपनी दशा सुधारना चाहते हो, यदि तुम समाज में सम्मान प्राप्त करना चाहते हो और यदि तुम अपने संकीर्ण विचारों से मुक्ति पाना चाहते हो तो इसका एक मात्र उपाय है- संस्कृत भाषा को सीखना।" इसी प्रकार स्वामी जी की भी तीव्र अभिलाषा थी कि हमारे देश में संस्कृत शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार व्यापक रूप से हो। पुरोहितों ने संस्कृत को अपने अलावा किसी और के पढ़ने पर पाबंदी लगा दी थी।

स्वामी सहजानन्द ने पुरोहितों के इस आचरण को बौद्धिक तर्कों के आधार पर गलत साबित किया और कहा "संस्कृत पढ़ने का अधिकार तो शुद्रों को था ही। क्योंकि महाभारतादि ग्रंथों तथा अन्यान्य पुराणों की रचना ही इसी लिये हुई कि शूद्र उन्हें पढ़कर ज्ञान करें, यही सनातन सिद्धान्त है। क्षत्रियों और वैश्यों को तो वेदादि पढ़ने का वैसा ही अधिकार था जैसा ब्राह्मणों को। पर स्वार्थी पुरोहित वर्ग ने पहले शुद्रों को संस्कृत पढ़ाना बन्द किया। पीछे धीरे-धीरे वैश्य एवं क्षत्रियों को भी और अब तो यहाँ तक नौबत आ पहुँची है कि ब्राह्मण समाज में उसे ही पढ़ाते हैं जिसे साक्षात या परम्परया पुरोहितों एवं गुरुआई से सम्बन्ध है। पुरोहित से भिन्न ब्राह्मणों को संस्कृत पढ़ाना वे लोग ऐसा ही मानते हैं जैसा साँप को दूध पिलाना"10 - इस प्रकार स्वामी जी ने संस्कृत शिक्षा को ब्राह्मण और कुलीन समाज के एकाधिकार से मुक्त करा कर जनसाधारण के लिए सुलभ कराया।

व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से ग्रस्त कुछ प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ जन साधारण में जातीय संकीर्णता की भावना विकसित करके उनके अन्दर "हम" और "वे" के आधार पर जातीय समीकरण बनाती हैं। अपने को जाति विशेष का मसीहा घोषित करती हैं। इससे सम्पूर्ण समाज का लोकतान्त्रिक ढांचा बिखरने लगता है। स्वामी जी इन शक्तियों के जातीय प्रेम पर कटाक्ष करते हुए कहा "जातीय प्रेम की भी सीमा है और जातीय नेता लोग भी उसका अतिक्रमण करने में साफ खतरा देखते हैं। फलतः समाज की आँखें, ये खोल नहीं सकते। बलि के बकरे के साथ भी तो मुहब्बत की ही जाती है और उसे खिला पिला कर मोटा किया जाता है उसमें स्वार्थ है। लेकिन उस बकरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को बाघ बनाने की बेवकूफी कौन करेगा। सिवाय उस हितोपदेश के, ऋषि के जिसने चूहे को बाघ बनाकर अपनी जान खतरे में डाली ? यही है जातीय प्रेम और जातीय संस्थाओं की लीडरी का वास्तविक रहस्य। एक स्वार्थ के धनी या गरीब किसान या ज़मींदार आदि अपनी-अपनी सभायें करें तो बात समझ में आ सकती है। लेकिन धनी या गरीब किसान या ज़मींदार की खिचड़ी सभा का मतलब समझना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।"[11]

स्वामी जी की सामाजिक अवधारणा तथा दर्शन पर श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही की यह उक्ती समीचीन है कि "स्वामी जी ने वर्ण व्यवस्था को सुस्पष्ट किया तथा जिन भ्रान्तियों की वजह से सामाजिक दृष्टिकोण जाति के मामले में उलझा हुआ था, उसे दूर किया जा सका तथा सभी ने इसे महसूस किया कि समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व सामाजिक विकास के लिए समान रूप से चाहिए। यही कारण है कि मूल, गोत्र तथा प्रवर आदि के सम्बन्ध में उनके द्वारा उपस्थापित किये गए ऐतिहासिक तथ्य आज हमें मार्ग दर्शन कराते हैं कि मौजूदा स्थिति में जब लोग आपसी एकता को नज़रन्दाज़ कर एक दूसरे के खून से अपनी प्यास बुझाना चाहते हैं, हम उनके द्वारा निर्देशित मार्गों पर चलकर सामाजिक एकता की नींव को मज़बूत करें तथा राष्ट्र की चौतरफा तरक्की के लिए सामाजिक दृष्टिकोण को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।[12]

वंशगत व्यवसाय के आधार पर भी एक जाति उच्च तथा एक जाति मध्य और एक जाति निम्न मानी जाती रही है। इस दुर्भाग्यशाली मनोवृत्ति का विरोध स्वामी जी ने किया परन्तु उनके विरोध में अहिंसात्मक प्रगति व विकास की स्पष्ट झलक मिलती है। शीलभद्र जी ने अपने एक संस्मरण में लिखा है कि उनके पिता स्वर्गीय प० राम किशोर मिश्र जी ने स्वामी जी से दो प्रश्न पूछे। पहला प्रश्न था कि हम भूमिहार ब्राह्मणों को गाय अपने हाथ से दूहना चाहिए की नहीं ?. भूमिहार बाह्मणों को अपने हाथों हल जोतना चाहिए कि नहीं ? उस समय यह दोनों कार्य कुछ जाति विशेष के लोग ही करते थे। स्वामी जी ने इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि ब्राह्मण गाय रखते हैं तो वे अवश्य अपने हाथ से गाय दूहें। आप अपने हाथ से हल जोत सकते हैं, इसमें कोई धर्म संकट नहीं है और आज तो अधिकांश ब्राह्मण युग धर्म समझकर हल जोतने लगे हैं।[13]

जातीय संस्थायें जातीय संकीर्णता की जननी

आजकल जातिगत संस्थायें अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए विकसित की जा रही हैं। इन संस्थाओं का नेतृत्व करने वाले खुल्लम-खुल्ला हिंसात्मक, उत्प्रेरक भाषण तक दे रहे हैं। यह लोग ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर जातीय पुर्नजागरण के नाम पर जातीय संकीर्णता को बढ़ा रहे हैं। जातिगत सौहार्द कम करने की दिशा में सक्रिय है। इससे सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा विकास की प्रक्रिया का प्रभावित होना स्वाभाविक है। हमारे संविधान में समग्र विकास की भावना निहित है जिसे पूरा करने के लिए आवश्यक है कि जाति विहीन समाज की अभिकल्पना को प्रचारित व प्रसारित किया जाय। आर्थिक आधार (वंशगत व्यवसाय) पर जातीय विभाजन क्रमशः समाप्त होता जा रहा है। अब समय आ गया है कि जातिगत संस्थाओं का नेतृत्व अहिंसात्मक रूप से जाति के सामाजिक आधार को परिवर्तित करने की दिशा में कदम बढ़ायें।

इन जातिगत संस्थाओं के स्वरूप एवं कार्यविधि तथा सम्पूर्ण समाज पर पड़ने वाले इनके प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में स्वामी जी ने कहा है कि "बहुत ही अदब पर स्पष्टता के साथ मैं कह देना चाहता हूँ कि चाहे पहले कुछ भी स्थिति रही हो, और मेरे जानते पहले भी यही था, आज तो जातीय संस्थायें एकमात्र कुछ इने-गिने प्रतिष्ठित, चलते-पुर्जे तथा धनिकों के राजनीतिक स्वार्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधन की सामग्री बन गयी हैं और खूबी यह है कि खुल्लम-खुल्ला वहाँ समाज सुधार की बातें की जाती हैं, लेकिन चुपके-चुपके राजनीतिक स्वार्थ साधन का षडयंत्र किया जाता है। जहाँ पहले किसी उच्च पदस्थ ऑफिसर की दरबारदारी और स्वागत कर देने एवं राजभक्ति का बाहरी स्वांग भरने से सभावों के ये चतुर खिलाड़ी, अपने नज़दीकियों तथा पिट्ठुओं के लिए नौकरियों, ऊंचे पद और दूसरी रियायतें हासिल कर लेते थे वहीं उनके साथ-साथ ही अब चुनावों के युद्ध में भी सफलता पाते और पाना चाहते हैं।"[14]

निष्कर्ष

उपरोक्त अंकित तथ्यों से स्पष्ट है कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने जाति व प्रजाति की संकीर्णतावादी मनोवृत्ति के विनाशकारी उत्पीड़न से सम्पूर्ण मानव समाज की रक्षा किया तथा उनके एतद् संबंधी दर्शन, विचारधारा आज के परिप्रेक्ष्य में उतने ही प्रासंगिक हैं जितने की पहले। स्वामी जी की आर्थिक-सामाजिक विकास अवधारणा तभी साकार हो सकती है जब जातिगत संकीर्णता से दूर हटकर जातिगत सौमनस्य, प्यार, सहायता एवं जीवन के हर क्षेत्र में सहभागिता की भावना को प्रबल बनाया जाय। आज राष्ट्रीय विकास के लिए यह आवश्यक है कि जातीय संकीर्णता के स्थान पर जातीय सहिष्णुता के सिद्धान्त को प्रतिस्थापित किया जाए। जातीय सहिष्णुता के गर्भ से ही समस्त मानव जाति के कल्याण की शक्ति का प्रादुर्भाव होता है और इसी शक्ति पर आधारित होती है राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और विकास।

मानव वंश एक है परन्तु विभिन्न मानव जातियों में वह विभाजित है। आज जाति प्रथा को समाप्त करना हम अपना आदर्श मानते हैं। परन्तु सदियों से चली आ रही इस व्यवस्था को छू-मन्तर से समाप्त नहीं किया जा सकता। आजकल जाति व्यवस्था के पूर्वाग्रह से पीड़ित कुछ जातिगत समाज सेवी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी पर भी आक्षेप लगाने में पीछे नहीं हैं जिनका बलिदान भारत भूमि के चप्पे-चप्पे पर स्वर्ण अक्षरों से लिखा हुआ है। जाति पूर्वाग्रह से पीड़ित होना स्वाभाविक है। परन्तु विवेक, तर्क और अहिंसात्मक विचार-विमर्श के आधार पर जातीय पूर्वाग्रह से मुक्ति पायी जा सकती है। किसी पर आक्षेप लगा कर नहीं। आज प्रश्न है रोजी व रोटी का। मानव के समग्र विकास का। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने इस संदर्भ में स्पष्टतः कहा है:- "वर्तमान परिस्थिति में जबकि हरेक जाति और धर्म और समाज के अधिकांश लोग यथार्थतः भूखे और नंगे हैं और आत्मसम्मान रहित जीवन व्यतीत करने को बाध्य किये जा रहे हैं हर जातीय प्रेमी, धर्म.सेवक, समाज सुधारक नेता की हर सभा का और सभी जातीय एंव धार्मिक पत्र पत्रिकाओं का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि इमानदारी के साथ इस रोटी, वस्त्र और आत्म-सम्मान की समस्या को सबसे पहले हल करने के लिए पूरी शक्ति के साथ जुट जायें और इसे हल करके ही छोड़ें। नहीं तो आज इस प्रश्न को न उठा कर धर्म, सदाचार, सुधार, नैतिकता आदि की बातें करना इस बात का सबूत देना है कि उनमें वस्तुस्थिति का सामना करने की हिम्मत नहीं है।[15]

संदर्भ सूची

1. इरफान हबीब, "भारतीय इतिहास में जाति और मुद्रा", पिपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 14-16
2. श्री अशोक कुमार, "लोकयुद्ध", वर्ष अंक-1\1989
3. आचार्य चतुरसेन, "भारत महान", प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-166

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

4. उपरोक्त पृष्ठ 173
5. श्री संजय सिंह, "बौद्धिक कृतियाँ: धर्म का मिथक", "स्वामी सहजानन्द सरस्वती-ओंमकार से हूंकार तक", राहुल प्रेस, पटना पृष्ठ-38,40
6. श्री एम० एन० बुच, "ब्रहमिंस हैव् इन देयर बीट", इण्डियन एक्सप्रेस, मई - 28, 1994
7. ड0 श्यामचरण दूबे, "परम्परा को विकृत करती राजनीति" रविवार्ता, अप्रैल - 3, 1994
8. लीलाधर "दुःखी", "ब्राह्मण", मानक पब्लिकेशन्स प्रा0 लि0, दिल्ली, 1992 पृष्ठ - 44
9. महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, "नये भारत के नये नेता", ज्योति कलश, पृष्ठ-229
10. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "कर्म कलाप", पृष्ठ-क, ख
11. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "किसानों को फँसाने की तैयारियाँ", पृष्ठ-13
12. श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही, "स्वामी सहजानन्द सरस्वती का सामाजिक दृष्टिकोण ", ज्योति कलश, पृष्ट-67
13. विद्या वाचस्पति शील भद्र, "स्वामी सहजानन्द सरस्वती : एक पूण्य स्मरण" ज्योती कलश, पृष्ठ-252
14. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "किसानों को फँसाने की तैयारियाँ", पृष्ठ-4-5
15. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, पूर्वोक्त -, पृष्ठ-38

With Best Compliments

*****
**
*

From

ANY THING & EVERY THING
IN PHOTOGRAPHY

Remember

FRIEND'S EL'DOVADO

E-31, HAUZ KHAS
NEW DELHI 110 016

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द का जातीय दर्शन

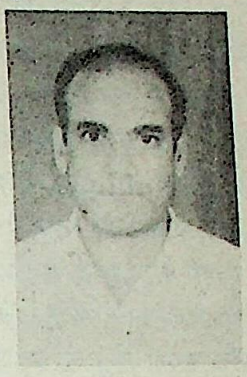

त्रिपुरारी राय

वर्णव्यवस्था :

प्राचीन भारतीय समाज में समाज के संचालन के लिए कर्म पर आधारित चार्तुवर्णय व्यवस्था प्रचलित थी। इस व्यवस्था के आधार पर समाज का स्तरीकरण किया गया था। स्तरीकरण के द्वारा समस्त मानव समूहों को विशिष्ट व्यवसायों में दक्षता प्राप्त कर समाज के विकास में अपना-अपना योगदान देना था। इस दक्षता पर आधारित स्तरीकरण के अर्न्तगत क्षत्रियों का कार्य युद्ध करना था। समाज के सदस्यों की आन्तरिक कलह तथा बाह्य आक्रमणों से रक्षा करना था। ब्राह्मणों का कार्य विद्या अध्ययन तथा अध्यापन करना, धार्मिक अनुष्ठान आदि करना तथा दैवी आपदावों से समाज की रक्षा करना था। व्यापार, पशुपालन और कृर्षि कार्य वैश्यों की जिम्मेदारी थी। इन तीनों वर्णों की सेवा सुश्रुवा करना शूद्रों की।[1] मनुस्मृति के अनुसार चारों वर्णों का कार्य निम्नांकित था :

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैंव ब्रह्मणामकल्पयत् ॥ (88)
प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्व प्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समसतः ॥ (89)
पशूनां रक्षणं दानमिज्या ध्ययनमेव च।
वाणिक्यक कुसीदं च वैश्यस्य कृर्षिमेव च ॥ (90)
एकमेव तु शुद्रश्य प्रधुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां सुश्रुषामनसूयया ॥ (91)

कालान्तर में ब्राह्मण धर्म के अनुसार चार्तुवर्ण्य को स्वीकार किया गया। भेद इतना ही हुआ कि चार वर्णों के अतिरिक्त सामान्य वर्ण नामक एक पंचम वर्ण के स्तित्व को भी स्वीकार किया गया। इस वर्ण के अर्न्तगत मुख्यतः पशुओं की हत्या करने वाले, उनके चमड़े से जूते आदि बनाने वाले, मछली पकड़ने और बेचने वाले, वन्य पशुओं का शिकार करने वाले आदि आते थे। इस वर्ण के सदस्यों का अस्पृश्य माना गया।[2]

विभिन्न सुप्रसिद्ध अन्तरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय समाज शास्त्रियों ने समाज के संचालन में वर्ण व्यवस्था की उपयोगिता एवं व्यवहारिकता पर प्रकाश डाला है।

पाश्चात्य विचारक पी.डी.आउसपेन्स्की के अनुसार वर्ण विभाजन आदर्श सामाजिक संगठन का प्रतिनिधित्व करता है। निस्सन्देह यही स्वाभाविक विभाजन है। मानव-समाजों का समुचित विकास केवल इसी सिद्धान्त को स्वीकार करने तथा इसके अनुसार चलने में ही सम्भव है। वर्ण सिद्धान्त ने मनुष्य को सही मार्ग दिखाया है।[3]

डा. जे.एल. गिल ने वर्ण व्यवस्था पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि समाजिक जीवन स्थाई आधार पर था; विभिन्न वर्णों के पारस्पारिक सम्बन्ध भली प्रकार समझते थे; लोग इन सम्बन्धों के लिए अभ्यस्त थे; विभिन्न पक्षों में कम ईर्ष्या—द्वेष था। लोगों ने व्यवस्था के अनुकूल अपने को ढ़ाल लिया था।[4]

भारतीय सामाजिक चिन्तक डा. राधाकमल मुकर्जी के अनुसार वर्ण तो स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था का नियम है, जो ज्ञानी और श्रमिक को उच्चतम स्तर तक उठा देता है और धन, स्वामित्व एवं व्यवसाय को भेद भाव का आधार नहीं बनने देता है।[5]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अनुसार वर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दुओं पर लादी हुयी चीज नहीं, वरन् जिन बुजुर्गों के सिर पर हिन्दू जाति का भला करने की जिम्मेदारी थी, उन्होंने हिन्दुओं के लिए यह कायदा खोज निकाला था। नियम मनुष्य की कृति नहीं – कुदरत का अटल कानून है। न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण की तरह जो शक्ति सदा रहती है और सृष्टि में चलती है, उसी को इंसान की भाषा में वर्ण कह दिया है।[6]

स्वामी सहजानन्द के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के सम्यक् अध्ययन से स्पष्ट है कि वह चार्तुवर्ण्य व्यवस्था के प्रति सापेक्ष रहे। वह हर वर्ण के स्वतंत्र स्तित्व को स्वीकार नहीं करते।

स्वामी जी के अनुसार चारों वर्णों में अन्योन्याश्रित संबंध है। समाज के स्वस्थ संचालन तथा विकास में चारों वर्णों की बराबर की सहभागिता है। उसमें न कोई छोटा है, न बड़ा । न कोई शोषक है न कोई शोषित। न कोई स्पृश्य है, न कोई अस्पृश्य। प्रत्येक वर्ण अपने सदस्यों को अपनी योग्यता, क्षमता और शक्ति के अनुसार विकास करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

श्री दिनेश नारायण मल्लिक ने चकिया शीतलपुर जिला सारण, बिहार के निवासी स्व. रामउचित शर्मा से साक्षात्कार के आधार पर लिखा है कि "स्वामी सहजानन्द सरस्वती का विश्वास वर्ण व्यवस्था में जरूर था वैसे वे स्वयं जनेऊ भी धारण नहीं करते थे। वर्ण-व्यवस्था में वे इसके शुद्धतम रूप में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि कोई कर्म से बड़ा या छोटा होता है। इसीलिए वे कहते थे कि मूर्ख पण्डित को आदर देना एक प्रकार की मूर्खता है।"[7]

जाति व्यवस्था :

समयान्तर कुछ स्वार्थी तत्वों ने वर्णों की सदस्यता का निर्धारण जन्मना से कर दिया। वर्ण व्यवस्था टूटने लगी और सामन्तशाही प्रणाली के आते ही जाति प्रथा का उद्‌भव शुरू हो गया। इतना ही नहीं पुराने वर्णों से उत्पन्न जातियों के साथ-साथ अनेकानेक व्यवसायों से जुड़े समूहों की भी अलग-अलग जातियां समाज के पटल पर उभर कर आयीं। जैसे चमड़े का कार्य करने वाले चर्मकार, लकड़ी का काम करने वाले बढ़ई, लोहे का काम करने वाले लोहार और मछली पकड़ने वाले केवट आदि। इस प्रकार व्यवसायों की दक्षता के आधार पर जातियां बनती गयीं। सैकड़ों जातियों और उप जातियों का उद्‌भव होता गया। इन जातियों के बनने का आधार मुख्यतः विरासत में मिले व्यवसाय, सजातीय विवाह और सहभोज का सिद्धान्त रहा।[8]

प्रत्येक जाति सामाजिक संघटन की एक स्पष्ट इकाई बन गयी। इसके अर्न्तगत सभी इकाइयों का आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, शादी-विवाह का नियम निर्धारित हो गया। इतना ही नहीं, इन नियमों को धार्मिक मान्यता प्रदान कर दी गयी। एक जाति का दूसरी जाति में विवाह (अर्न्तजातीय विवाह), एक पांत में बैठकर खाना-पीना तथा जातीय-व्यवसाय में परिवर्तन दंण्डनीय अपराध बना दिए गये । इन अपराधों की सजा जाति विशेष से बहिस्कृत कर देने तक थी।

इस प्रकरण में श्री विजय चन्द प्रसाद चौधरी की इस उक्ति को उद्धृत करना समीचीन होगा कि "बड़हिया के इर्द-गिर्द के यादवों ने जनेऊ पहनना प्रारम्भ किया। फलस्वरूप इलाके के सामंती तत्वों ने उनसे परहेज रखने का आदेश दिया। उन्हें स्पष्ट तौर पर निर्देश दिया गया कि वे जनेऊ पहना छोड़ दें अन्यथा उन्हें उस इलाके से बलपूर्वक बेघर कर दिया जायेगा।... समस्तीपुर के नज़दीक जमीन्दारों के गांव का नाम पगड़ा है जहां मुसहरों ने कंठी पहन कर वैष्णव होने का निर्णय लिया। फिर वहां के जमींदारों का फतवा निकला कि मुसहर वैष्णव नहीं हो सकते; ऐसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने के लिए उन्हें भी लूट कर बेघर कर दिया गया और उस इलाके से निकाल दिया गया। यहां भी उनको खतरा इस बात का नज़र आया कि उनके वैष्णव होने के पश्चात् उनके खेत-खलिहान के चूहे कौन मारेगा ?[9]

इस प्रकार जाति प्रथा धार्मिक मान्यता तथा सामंती व्यवस्था के कुत्सित आकांक्षाओं के कारण आलोचना की विस्तृत सामग्री बन गयी। जातीय अत्याचार, शोषण तथा अमानवीय व्यवहार के कारण जातीय ढ़ाचे पर प्रश्न चिन्ह लग गए। इस प्रथा में समाज सुधारकों तथा आर्थिक विकास के आयामों ने आवश्यक सुधार की प्रेरणा दी और काफी सुधार भी हुआ। परन्तु जाति प्रथा भारतीय सामाजिक जीवन में अत्यन्त शक्तिशाली तत्व के रूप में चली आ रही है और शायद इसीलिए जड़ से उखाड़ फेंकने की बार-बार की कोशिशों के बावजूद यह जमी हुयी है।

चर्तुवर्ण्य व्यवस्था में अस्पृश्यता तथा अनुपगम्यता का स्थान नहीं था। परन्तु जाति प्रथा की नींव में ही ये दोनों तत्व मिश्रित थे। यह दोनों तत्व समाजिक अभिषाप बनकर जाति प्रथा के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह उठाते रहे। इसीलिए 1933 में डा. अम्बेडकर ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि 'अछूत' जाति प्रथा की उपज हैं; जब तक जातियां कायम रहेंगी तब तक 'अछूत' भी रहेंगे। परन्तु गांधी जी का मानना था कि अस्पृश्यता जाति प्रथा की उपज नहीं, बल्कि ऊंच-नीच की उस भावना की उपज है, जो हिंदू धर्म में घुस आयी है और उसे भीतर से खोखला कर रही है। इस प्रकार, अस्पृश्यता पर हमला 'ऊँच और नीच की भावना' पर हमला है।[10]

स्वामी सहजानन्द सरस्वती के जातीय दर्शन को विश्लेषित करने के पूर्व यह आवश्यक है कि जाति व्यवस्था की मुख्य विशेषताओं को देखा जाय। स्वामी जी के कार्यावधि या समकाल में जाति प्रथा की मुख्य विशेषतायें थीं : जन्मना जाति का निर्धारण; अन्तर-जातीय विवाह पर प्रतिबंध; ऊंच-नीच का भेद भाव; जन्म से व्यवसाय का निर्धारण, विभिन्न जातियों के मध्य अस्पृश्यता और समाजिक स्तरण के साथ आर्थिक विषमता आदि।[11]

जाति का निर्धारण जन्म से :

जाति व्यवस्था की सबसे प्रमुख विशेषता है कि जाति का निर्धारण जन्मना हो जाता है। कर्म की प्रधानता नहीं होती है। जाति का परिवर्तन सम्भव नही है। अगर तथाकथित उच्च जाति का व्यक्ति अन्तर जातीय विवाह कर लेता है तो उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है और अगर उसकी जाति से निम्न जाति के लोग उसे स्वीकृत कर लेते हैं तो उस जाति का सदस्य हो जाता है। स्वामी जी जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार तो करते हैं परन्तु उसे कर्म से अलग रखना चाहते हैं। उनका मानना था कि अगर ब्राह्मण जाति में जन्मा व्यक्ति ज्ञानहीन है तो उसे ब्राह्मण नहीं माना जा सकता है। अगर किसी अन्य जाति का व्यक्ति 'ब्राह्मोचित ज्ञान' का ज्ञाता है तो उसके ब्राह्मणत्व को स्वीकार करना समयोचित होगा। स्वामी जी प्रत्येक जाति के निर्धारित कर्मों में लोचकता के पक्षधर थे। उनकी मान्यता थी कि वर्णाश्रम धर्म में जन्मना सदस्यता निर्धारित नहीं होती थी और न ही अन्तर-वर्ण विवाह पर प्रतिबंध था और कर्म में कड़ाई का सिद्धान्त भी नहीं था। अतः ऐसी ही व्यवस्था जाति प्रथा में भी होनी चाहिए।

विद्यावाचस्पति शीलभद्र जी ने "स्वामी सहजानन्द सरस्वती : एक पुनीत संस्मरण" शीर्षक के अर्न्तगत अपने एक लेख में लिखा है कि 'मेरे पिता का पहला प्रश्न यह —क्या भूमिहार ब्राह्मण अपने हाथ से हल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोत सकते हैं? इसके उत्तर में स्वामी जी ने कहा था अगर आप लोग अपने हाथ से हल नहीं जोतेंगे तो खेत भी आपके हाथ से निकल जायेगा। अतः आप हल अपने हाथ से जोतिये। इसमें आपके ब्राह्मणत्व को बट्टा नहीं लगेगा।

स्व. राम किशोर मिश्रा "गुरूजी" का दूसरा प्रश्न था — क्या हम ब्राह्मण अपने हाथ से गाय दूह सकते हैं? इसको स्वामी जी ने विस्तार पूर्वक समझाया था। उन्होंने कहा था— ऋषि लोग भी गाय रखते थे। स्वयं गाय दूहते थे। कभी-कभी उनकी लड़कियां भी गाय दूहने का काम करतीं थीं।

तब से मेरे पिताश्री ने स्वयं गाय दूहना प्रारम्भ किया। गांव में एक प्रकार की सनसनी सी मच गई थी। और आज तो प्रायः अधिकांश मेरी बिरादरी वाले हल जोतने और गाय दूहने में कोई दोष नहीं मानते।"[12]

इस प्रकार स्वामी जी जातीय रूढ़िवादिता के विरूद्ध थे और हजारों वर्षों से चली आ रही इस व्यवस्था में शनैः शनैः परिवर्तन के हामी थे। ऐसा ही विचार गांधी जी का भी था। गांधी जी का भी मानना था कि जातीय नियमों को अगर आकस्मिक रूप से तुरन्त समाप्त करने का निर्णय लिया जाय तो समाज में अव्यवस्था और अराजकता फैल सकती है।

जाति व्यवस्था में ऊंच-नीच का भाव :

जाति व्यवस्था की यह विशेषता रही है कि इसमें ऊंच-नीच का भेदभाव था। ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था और शूद्रों का सबसे नीचे। इतना ही नहीं यह भेदभाव अपरिवर्तनीय था। उच्च जातियों में इतना अभिमान था कि अपनी ही उप जाति को हेय दृष्टि से देखते थे। स्वामी जी जाति प्रथा में उत्पन्न इस 'सामाजिक व्याधिकी' के पूर्णतः विरूद्ध थे। वह तो 'बहुजन सुखाय' और "बहुजन हिताय" के साथ साथ मानव-समता के प्रबल पक्षधर थे। इस सन्दर्भ में स्वामी जी की यह उक्ति स्वयं में एक प्रमाण है।

" अवधेश्वर जी !यह सवाल पूछकर आपने बहुत बड़ा फायदा किया। मैं इस विषय में आप लोगों से अपना स्पष्टीकरण करना ही चाहता था। मुझे बचपन ही से अपने में दूसरे मनुष्यों के साथ समानता का भाव रहा, और जब मैंने यह देखा कि एक मनुष्य या मनुष्यों का एक समुदाय दूसरे मनुष्य या मनुष्यों के अन्य समुदाय के साथ तिरस्कार का व्यवहार करता है और अपने को ऊंचा समझता है, तो मुझे यह सदा से असहय् रहा है... संन्यासी होने पर ऐसा ख्याल था कि सभी संन्यासी मेरे साथ समानता के साथ भाई-चारे का व्यवहार करेंगे। परन्तु मैंने कुछ उलटा ही पाया। ब्राह्मण सन्यासियों ने, भूमिहार ब्राह्मण होने के कारण, मेरे साथ तिरष्कार पूर्ण व्यवहार करना शुरू कर दिया ..... विवश होकर आंदोलन शुरू करना पड़ा.... अब तो मैं नहीं समझता कि मेरे उक्त आंदोलन को लोग जातीय आंदोलन क्यों कहते हैं.... ब्राह्मणों के संकुचित क्षेत्र में ही सही, मेरा आन्दोलन समानता का आंदोलन था, जातीय आंदोलन नहीं"।[13]

श्री रामकिशोर चौधरी ने स्वामी सहजानन्द-सरस्वती की 105 वीं जयन्ती के उपलक्ष पर प्रकाशित एक स्मारिका की सम्पादकीय में लिखा है कि "स्वामी जी अगर एक तरफ महान राजनीतिक क्रांतिकारी थे तो दूसरी तरफ सफल समाज-सुधारक भी थे, तीसरी तरफ सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक अग्रदूत थे तो चौथी तरफ अभूतपूर्व तथा अतुलनीय दार्शनिक और योगी साधक थे।"[14] इस प्रकार स्वामी जी की प्रतिभा बहुमुखी थी। इन सभी गुणों का समिश्रण उनकी समाज शास्त्रीय अवधारणा में देखा जा सकता है। जब उन्होंने देखा कि एक जाति विशेष के लोग दूसरी जाति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

के लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं तो उनसे नहीं रहा गया। स्वामी जी ने सच्चे मनोवैज्ञानिक की तरह जहां एक ओर उस जाति विशेष के गर्व और अहम् भावना को समाज में वांछित समानता के स्तर पर लाने का प्रयास किया, वहीं हीन ग्रंन्थियों से त्रस्त जाति के सदस्यों के अन्तःकरण से हीन भावना निकालने का सफलतम प्रयास किया। स्वामी जी के शब्दों में :

"मैं तो किसी मतलब से उसमें पड़ा न था। एक बहुत बड़े समाज को—एक कुलीन और उच्च ब्राह्मण समाज को— मैंने औरों से पद्दलित पाया और देखा कि वह तिलमिला रहा है, अपमानित हो रहा है। मगर कुछ कर नहीं पाता। अपमानित होता है बुरी तरह। मगर उसका प्रतिकार नहीं कर पाता। मेरा दिल तड़प उठा और मैंने उसे उठाया। उठाने की कोशिश की और अपमानित करने वालों को ठीक-ठाक उत्तर दे दिया। उनके होश ठिकाने कर दिये। जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो उसे तैयार करके उसका हक उसे वापस दिलाना यही तो मेरे जानते आज़ादी की लड़ाई और असली समाज सेवा का रहस्य है।"[15]

जाति व्यवस्था में श्रम के आधार पर भी ऊंच-नीच की मान्यता रही है। बौद्धिक श्रम करने वाले ऊंच श्रेणी में आते थे और शारीरिक श्रम करने वाले नीच श्रेणी में माने जाते रहे हैं। इतना ही नहीं खेतों में हल जोतने वालों तथा मांस आदि का व्यापार करने वालों और मल मूत्र साफ करने वालों में भी आपसी ऊंच-नीच की मान्यता प्रचलित थी। यद्यपि आज़ादी के बाद इस तरह की मानसिकता में परिवर्तन हुआ है, फिर भी समाज में इसके स्तित्व को नकारा नहीं जा सकता है। स्वामी सहजानन्द इस तरह की मानसिकता के विरूद्ध थे। वर्ष 1949 की रामनवमी 9 अप्रैल को अयोध्या में अखिल भारतीय विरक्त महामंडल के महाधिवेशन में अध्यक्ष पद से बोलते हुए स्वामी जी ने कहा था कि : "हमारे यहां ऊंच-नीच और छूत-अछूत का भूत डेरा डाले पड़ा हमें परेशान कर रहा है। फिर भी हम विरक्त और भक्त होने के गुमान में मरे जा रहे हैं। तो क्या छूत-अछूत जानवर नहीं हैं और नरसी मेहता भक्त न थे? लेकिन बात क्या हुई? उनकी पकाई रोटी कुत्ता लेकर भाग चला तो वे उसके पीछे हांफते हुए दौड़े जा रहे हैं, 'महाराज रूकिये तो सही.! रोटियां रूखी हैं, गले में अटकेंगी, जरा घी तो लगा दूं'। नरसी की भक्ति कुत्ते में भगवान को देखती है, उनके सामने कुत्ता हई नहीं। मगर हमारी भक्ति हमें ऊंच-नींच के फंदे में फंसा कर मार रही है। एक ओर तो हम विरक्त और विरागी होने का दावा करते हैं। जिसके मानी है सभी सांसारिक पदार्थ का त्याग, उसमें रसहीनता। दूसरी ओर अपने दिलों में राग, द्वेष, ऊंच-नीच की भावना जैसी गंदी चीजों को रखते हैं।"[16]

जाति व्यवस्था व अस्पृश्यता :

जाति प्रथा के साथ संलग्न अनेकानेक धार्मिक एवं सामाजिक नियोग्यताओं का कड़ाई से पालन करने की प्रवृत्ति इस प्रथा के स्तित्व पर सबसे बड़ा कलंक रहा है। कुछ जातियों को अस्पृश्य समझना तथा इस मनोवृत्ति को धार्मिक आवरण दे दिया जाना सम्पूर्ण मानव जाति के लिए दुःखद घटना रही है। इतना ही नहीं अस्पृश्यों की छाया मात्र से अपवित्रता तक की बात कही गयी है। इन अस्पृश्य जातियों को अन्य जातियों के निवास स्थली तक आना प्रतिबंधित कर दिया गया। उन्हें सार्वजनिक सुविधाओं—कुंआ, विद्यालय, सड़क, यातायात के साधन और चाय आदि की दुकानों तक जाने की मनाही कर दी गयी। इतना ही नहीं इन जातियों के अन्दर भी अस्पृश्यता की भावना प्रबल थी। मन्दिरों में भी इनका प्रवेश वर्जित था। इन जातियों का निवास गांव के बाहर उत्तर पूर्वी किनारे पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राय: होता था ताकि हवा भी इनका स्पर्श करके मुख्य गांव तक आ न सके।

अस्पृश्यता के कलंक से पीड़ित अनेक जातियों का विकास अवरूद्ध हो गया। उनकी नैसर्गिक विकासोन्मुख क्षमता तथा अन्त: शक्ति भी प्रभावित हो गयी। स्वामी जी सार्वजनिक जीवन में अस्पृश्यता के प्रमुख आलोचक थे। व्यक्तिगत जीवन में छुआ-छूत एक सीमा तक वैज्ञानिक माना जा सकता है परन्तु सार्वजनिक जीवन में इसका कोई स्थान नहीं है। अस्पृश्यता, घृणा, असूया, द्वेष, स्वार्थ, दम्भ और दुराभिमान की कुत्सित भावना एक साथ चलती हैं। परिणामत: मानव का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। स्वामी जी ने इस संदर्भ में लिखा है "मैं जाति या वर्ण के चलते नीच-ऊंच या स्पृश्य-अस्पृश्य किसी को नहीं मानता। मुसलमानों या अन्य धर्म वालों को अस्पृश्य मानने की नादानी भी नहीं कर सकता हूं। अगर किसी को शक हो तो एक बार कोई भी जाति या धर्म का आदमी मेरी रोटी या मेरा पानी छू कर देख ले कि मैं उसे खाता-पिता हूं या छोड़ देता हूं।..... धर्म के आधार पर छुआछूत नादानी है।"[17]

जाति व्यवस्था में ऊंच-नीच, स्पृश्य-अस्पृश्य को धार्मिक आवरण देकर समाज में विकृति पैदा किया जाता रहा है। धर्म से भय पैदाकर इस सामाजिक नियोंग्यता को बरकार रखने का प्रयास जारी रहा। स्वामी जी इस अवधारणा के विरूद्ध थे। स्वामी जी ने कहा था कि धर्म साधन है और समाज का सर्वांगीण विकास उसका साध्य है। अत: धर्म वही है जिससे लोगों का पूर्ण उत्कर्ष सुनिश्चित हो। पूर्ण उत्कर्ष का अभिप्राय भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों हैं। इस प्रकार अगर धर्म सामाजिक नियोंग्यंता पैदा करता है तो वह धर्म नही है। वास्तव में धर्म व्यक्ति की व्यक्तिगत चीज है और उसे किसी पर थोपा नहीं जा सकता है। धर्म कभी भी सार्वजनिक वस्तु हो ही नहीं सकता। "धर्म अन्तरात्मा की चीज है और शोषितों, पीड़ितों पर धर्माचार्यों का जादू चल जाता है और उनके उत्थान के लिए होने वाला सारा यत्न बेकार सा हो जाता है"[18]

जाति व्यवस्था का स्तरीकरण :

जाति व्यवस्था के आर्थिक स्तरण के ढ़ाचे के कारण कुछ जाति विशेष का आर्थिक संसाधनों पर एकाधिकार हो गया जिसके कारण अधिकांश जातियों की आर्थिक दशा शोचनीय हो गयी। उनकी आय इतनी कम हो गयी कि वे दैनिक जीवन के लिए आवश्यक आवश्यकता को भी पूरा नहीं कर पाते थे। इसका एक और कारण था कि निर्धारित पेशे से आमदनी का न्यूनतम होना। इस स्तरीकरण के परिणामत: अधिकांश जातियों की आर्थिक स्थिति तथा रहन-सहन का आर्थिक स्तर गिरता गया। इस प्रकार ऊंच जातियों द्वारा निम्न जातियों का दोहरा शोषण होता रहा। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने इस संन्दर्भ में तीन मार्मिक घटनाओं का उल्लेख किया है :

"... मैंने जाड़ों में एक हलवाहे को मरा देखा। 60-70 साल का रहा होगा। टूटी झोपड़ी में जमीन पर पड़ा था। इन्फुलुएंजा से मौत हुई थी। यह बीमारी और जाड़े का दिन, मगर तन पर सिर्फ एक लंगोटी थी। ओढ़ने को कुछ नहीं। कहीं से एक फटा बोरा मिला था। उसी में सिर और पैर टांग डालकर पड़ा-पड़ा मरा था। पीठ और चूतर खुले ही थे। विस्तर, चारपाई, दवा वगैरह की तो बात हीं नदारद। मेरा दिल रो पड़ा मैंने सोचा इन साठ-सत्तर वर्षों में लाखों आदमियों की खुराक का गेहूं, चावल, घी, दूध पैदा किया होगा।.... इसने शायद ही जीवन भर में कभी गेहूं, घी खाया हो और अच्छा कपड़ा पहना हो, और मरने के समय नंगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही रह गया, सो भी जाड़े में। टूटी खाट भी नही। अब इसे कफन भी देने वाला कोई नहीं।"

"... वहां देहातों में काले-काले प्रायः नंगे और बिस्टी पहने पहाड़ी संथाल वगैरह रहते हैं।.... ये पहाड़ और जंगल काट कर खेत बनाते और धान उपजाते हैं। मगर कभी एक आना पैसा और कभी एक सेर भर चावल देकर दो ही चार साल में सारे खेत बनियें लिखवा लेते हैं। फलतः या तो वे बनियों के हलवाहे बन जाते या कहीं और जाकर उसी तरह खेत बनाते जिन्हें पुनरापि बनिये ले लेते हैं। यही क्रिया सैकड़ों वर्षों से चालू है। ये परिश्रमी, सच्चे और सीधे होते हैं। इसी से लूटे जाते हैं और बराबर नंगे ही रहते हैं। मेरे दिल से आवाज आयी कि इस दुनियां में सत्य और न्याय कहां है? अहिंसा कहां है? दयामय दीन-बन्धु-भगवान कहां हैं? इनसे बढ़कर दीन कौन है?..... क्या भगवान, सत्य, न्याय, नाम की वस्तु सचमुच है?"

".....मैंने रास्ते में देखा कि एक मुर्दे को टूटी खाट में सुलाये और चिथड़ा ओढ़ाये कुछ लोग गंगा की ओर लिये जा रहे हैं। उनके पास न तो मुर्दा जलाने के लिये लकड़ी और न ही दूसरा सामान है। एक मुट्ठी या मामूली सी लकड़ी थी। मेरे दिल ने पुकारा कि ओह, यह जुल्म, यह लूट! यह हृदयहीनता! जिसने जीवन में बनियों तथा सत्ताधारियों के लिए भोग-विलास का सामान और लाखों के खाने के लिए गेहूं, मलाई पैदा की उसकी ही यह दशा कि कफन तक नदारत! ऐसा तपस्वी और त्यागी कि दूध, गेहूं पैदा करके भी स्वयं न खाया, किन्तु मदमत्तों को दिया। उन्हीं का इसके प्रति ऐसा व्यवहार! इस समाज को मिटाना होगा। यही सबसे बड़ा धर्म, सबसे बड़ी अहिंसा, सबसे बड़ा सत्य है। इन्हीं गरीबों की सेवा करते हुए मरना होगा। इन्हें छोड़ मेरे दिल में भगवान कहां?"[19]

स्वामी जी की यह उक्तियां इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि जाति व्यवस्था के अर्न्तगत आर्थिक स्तरीकरण का परिणाम कितना भयंकर था। विभिन्न जातियों के अर्न्तगत भी आर्थिक स्तरीकरण था, जिसके कारण हर जाति का अमीर व्यक्ति शोषण करना अपना अधिकार मानता था। स्वामी जी के शब्दों में: "सभी धर्मों और जातियों के अमीरों का एक ही समाज होता है। और वे एक जगह बैठकर एक ही दृष्टिकोण से सोचते हैं। हमारी मिलों का माल महंगा हो, हमें मजदूरों को कम मजदूरी देनी पड़े, हमें सूद भरपूर मिले, हमारी जमींदारी की आमदनी खूब बढ़े, समूची जमीन हमारी बकाश्त और जिरात हो जाय और कोई भी रैयत हमारे सामने सिर न उठा सके, फलतः हम और हमारे अमले उसे जिस घाट पानी पिलावे— पिये, इत्यादि।"[20]

स्वामी सहजानन्द के जातीय समाज शास्त्र विवेचना से स्पष्ट है कि उनके जीवन दर्शन का अभिन्न अंग, : "कमा कर खाना, किसी को छोटा न समझना, किसान की सेवा को ईश्वर की सेवा समझनां और शोषितों-उपेक्षितों को राहत दिलाना था। हवा का रूख देखकर चलने वालों से उन्हें घोर नफरत थी तथा धर्म और जाति के नाम पर छुआ-छूत भावना से अघोर घृणा"[21] स्वामी जी जाति विहीन समाज की कल्पना करते थे तथा आज के समाजशास्त्रियों की तरह उनकी मान्यता थी कि कालांतर में जातियां विस्मृत हो जायेंगी और वर्ग व्यवस्था पुनः स्तित्व ले लेगी जो प्राचीन की भांति कर्मों पर आधारित होगी।

निष्कर्ष :

जातीय दर्शन तथा जातीय समाजशास्त्र के अद्यतन पहलुओं पर स्वामी सहजानन्द सरस्वती के विचारों से यह तथ्य उभर कर समाज के पटल पर आता है कि वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाति व्यवस्था के प्रचलित ढांचे से पूर्णत: सहमत नही थे। स्वामी जी को जातिगत द्वेष, ऊंच-नीच की भावना, स्पृश्य -अस्पृश्य की मनोवृत्ति तथा समाजार्थिक प्रतिबंध व शोषण आदि किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं था। वह इसे सामाजिक व्याधिकी मानते थे। मानव के सम्पूर्ण विकास में इन तत्वों को सबसे बड़ा अवरोधक तत्व मानते थे। जाति प्रथा की विकृतियों के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने वर्गवादी व्यवस्था की वकालत किया। उनकी समाजशास्त्रीय अवधारणा प्राचीन वर्णव्यवस्था तथा वर्तमान वर्गाश्रित व्यवस्था के बीच की प्रतीत होती है जिसमें मानव का सर्वांगीण विकास, अहिंसात्मक रूप से, क्षमता के अनुसार स्वत: हो सके।

संदर्भ सूची

1. के.दामोदरन, "भारतीय चिन्तन परम्परा", पृ.63-66
2. एम. विन्टरनिटूज़, "प्राचीन भारतीय साहित्य", पृ.254
3. पी.डी.आउस्पेंस्की, "ए न्यू माडल आफ द यूनिवर्स", पृ.508
4. डा. जे.एल.गिल, "सोसल पैथोलाजी", पृ.418
5. डा. राधा कमल मुकर्जी, "भारतीय समाज-विन्यास", पृ.16
6. गांधी, 'वर्ण व्यवस्था', पृ22
7. दिनेश नारायण मल्लिक, "उपेक्षित स्त्रोत : अपरिहार्य सूचनाओं के उत्स", "स्वामी सहजानन्द सरस्वती– ओंमकार से हुंकार तक", पृ.163
8. के दामोदरन, "भारतीय चिन्तन परम्परा", पृ.217-18
9. विजय चन्द चौधरी, "स्वामी सहजानन्द सरस्वती"– "ओंमकार से हुंकार तक", पृ.11 (भूमिका)
10. के. दामोदरन, "भारतीय चिन्तन परम्परा", पृ.459
11. डा. जी.एस. घुरिए, "कास्ट एण्ड क्लास इन इन्डिया" पृ.17
12. विद्यावाचस्पति शीलभद्र, "निवेदिता", पृ.22-23
13. त्रिवेणी शर्मा सुधाकर, "स्वामी सहजानन्द सरस्वती, स्मृति-ग्रंथ" प्रथम भाग, पृ128
14. श्री राम किशोर चौधरी, 'स्मारिका', स्वामी सहजानन्द विकास सेवा संस्थान, बिहार, पृ.11
15. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "मेरा जीवन संघर्ष", पृ. 101
16. दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती, "युग प्रव्रतकं जननायक श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती", पृ. 20
17. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, 'मेरा जीवन संघर्ष,' पृ.162
18. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "गीता-हृदय" पृ.95
19. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "मेरा जीवन संघर्ष", पृ. 260-61
20. स्वामी सहजानन्द सरस्वती, "किसानों को फँसाने की तैयारियां", पृ22
21. प्रो. रामनाथ शर्मा, 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती', स्मारिका 'अहिंसाप्रसून' स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज, नई-दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments
FROM

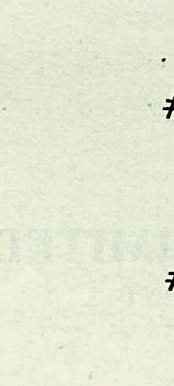

M/s Kashmiri Lal
Denting & Painting work shop
Daryaganj, Delhi

With Best Compliments
FROM

M/s R.K. Enterprises
Gali No. 9, Samaipur
Delhi

With Best Compliments
FROM

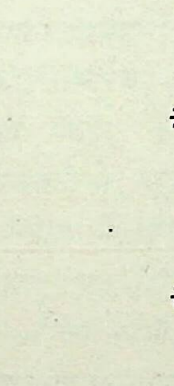

M/s Baldev & co.
47/1A, Gali Shiv Mandir
Maujpur, Delhi

With Best Compliments
FROM

M/s Nirmal Enterprises
22/28/1, Gali No. 8
Samaipur, Delhi

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments
FROM

VEER OFFSET
PRINTERS

With Best Compliments
FROM

C.V. STEELS LIMITED
TAJ APARTMENT
3rd FLOOR
2nd FACTORY ROAD
SAFDARJUNG
RING ROAD, NEW - DELHI - 1100029
PHONE : 664733, 654830
FAX : 91-11-6887792

With Best Compliments
FROM

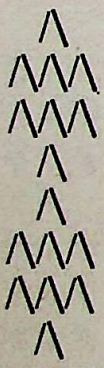

Dr. S.K. BURMAN
CHARITABLE TRUST
3-4, SAGAR APARTMENTS
6, TILAK MARG
NEW DELHI - 110001

With Best Compliments
FROM

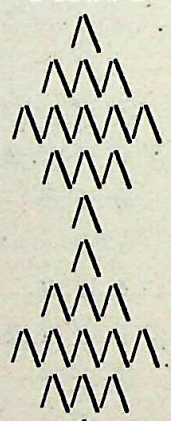

M/s K.T. ENTERPRISES
H.NO. 534,
Gali No. 14, MAUJPUR
SHADARA , DELHI

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती समाज सेवा पुरस्कार

(स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज, नई दिल्ली ने स्वामी जी की समाज सेवा की अवधारणा को साकार रूप देने वाली विभूतियों को अखिल भारतीय स्तर पर सम्मानित करने का निर्णय लिया। यह पुरस्कार वर्ष 1994 से प्रारम्भ किया गया। वर्ष 1994 तथा 1995 के इस पुरस्कार से सम्मानित दो महान विभूतियों का व्यक्तित्व व कृतित्व प्रस्तुत है।)

दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

स्वामी सहजानन्द सरस्वती की समाज सेवा की अवधारणा, "समष्टि रूप में समस्त समाज को ऊंचा उठाना ही समाज सेवा है", के प्रति, भारतीय संस्कृति के मूलाधारों के रक्षक, लोक कल्याण के प्रणेता, हिंदी एवं संस्कृत साहित्य के प्रकांड पंडित, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं सहिष्णुता की साक्षात प्रतिमूर्ति और "कार्यं वा साध्येयं देहंवा पातयेयम" के ब्रतधारी, दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित रहे।

भोजपुर जनपद के पावन-तीर्थ धाम बक्सर में गंगा तट पर स्वामी सहजानन्द सरस्वती आश्रम व न्यास तथा स्वामी सहजानन्द की पावन स्मृति में एक कीर्ति मन्दिर का निर्माण व उसमे संगमर्मर की प्रतिमा की स्थापना करके जनमानस तक सहजानन्द सरस्वती के संदेश को पहुंचाने के कीर्तिमान के परिप्रेक्ष्य में दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती, राजगुरु मठ, शिवाला, बाराणसी (उ० प्र०) को वर्ष 1994 का स्वामी सहजानन्द सरस्वती समाज सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

स्वामी जी का जन्म बक्सर के कान्यकुब्ज वर्गीय ब्राह्मण फातहाबाद के मिश्र उपाधि धारी सांकृत गोत्री चौधरी परिवार में माघ कृष्ण पक्ष संवत् 1978 वि0 तदनुसार 14 जनवरी 1921 को ग्राम मँगराँव में हुआ। आपके पिता चौधरी रामप्रसाद आजीवन समाज सेवा के प्रति समर्पित रहे। आपके बचपन का नाम "अवध बिहारी सुमन" था। "सुमन से दण्डि स्वामी" तक की जीवन यात्रा संघर्षों की एक कहानी रही।

आपकी शिक्षा बक्सर में हुई। छात्र जीवन के दौरान अंग्रेजों के क्रूरतम अत्याचारों को देखकर आपका हृदय विप्लव की भावना से भर गया। विप्लव को साकार रूप देने के लिये आपने आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर देश की आज़ादी के धर्मयुद्ध में मनसा, वाचा, कर्मणा पदार्पण किये। परिणामत: 23 जुलाई 1940 को बक्सर नगर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजनीतिक बंदी बनाये गये। ब्रिटिश न्यायालय ने 18 अगस्त 1940 को 9 माह की कारावास की सज़ा से आपका स्वागत किया। युवक "सुमन" हँसते हुए आरा जेल में प्रवेश किया। आरा, गया, भागलपुर, चाइवासा की कारा यात्रा ने आजादी की राष्ट्रीय युद्ध की अग्नि में तपा कर "सुमन" को स्वतंत्रता संग्राम का क्रान्तिकारी सेनानी बना दिया। त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन के बाद नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के अग्रगामी दल की सदस्यता स्वीकार कर "सुमन" नव प्रेरणा, नव चेतना तथा नव अदम्य उत्साह से आज़ादी की लड़ाई में लग गये। इस दौरान स्वामी सहजानन्द के सानिध्य में रहकर कृषक आंदोलन के भी प्रणेता बने रहे।

देश आज़ाद हुआ। आप राजनीतिक दांव पेंच से अपने को मुक्त रखते हुए संस्कार में प्राप्त साहित्यिक, प्राचीन संस्कृति तथा भारतीय दर्शन के गहन अनुशीलन में लग गये। अपना जीवन समाज के समग्र विकास, साहित्य सेवा तथा अध्यात्म चिन्तन को समर्पित कर दिये। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन तथा सुप्रसिद्ध बौद्ध साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान नागार्जुन के सानिध्य में रहकर अपनी उपरोक्त समर्पिता के संकल्प को पूरा किये।

वर्ष 1954, सावन शुक्ल पक्ष द्वादसी के दिन आपने संयास ग्रहण किया। "अवध बिहारी सुमन" से दंण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती की नव जीवन ज्योति को धारण कर स्वामी सहजानन्द सरस्वती की समाज सेवा अवधारणा के अनुसार समाज के समग्र उत्थान में जी जान से जुट गये। संस्कृत विद्यालयों की स्थापना, स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यालय, आश्रम तथा न्यासों की स्थापना कर दण्डि स्वामी जी आज हमारे लिए एक आदर्श त्यागमय समाज सेवा संदेश की ज्योति प्रज्वलित कर प्रेरणा के स्त्रोत बन चुके हैं।

त्रिलोकी नाथ राय
मुख्य संरक्षक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० राधा कृष्ण शर्मा

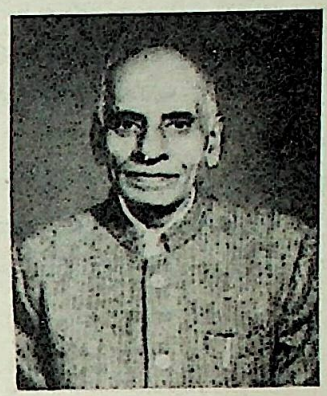

एक सुविख्यात समाज सुधारक, सरस्वती के वरद पुत्र एवं महान उपासक, साहित्य के मूर्धन्य साधक, सरलता, शुचिता और संस्कृति के प्रतीक, उदात्त राष्ट्रवादी - प्रख्यात लेखक डा0 शर्मा मे राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव और सांस्कृतिक सहिष्णुता का विलक्षण समिश्रण प्रतिबिंबित होता है। आप स्वामी सहजानन्द सरस्वती की समाज सेवा अवधारणा के प्रति आजीवन समर्पित रहे। आपके सफल निर्देशन में "स्वामी सहजानन्द सरस्वती : व्यक्तित्व और कृतित्व" विषय पर ऐतिहासिक शोध कार्य सम्पन्न हुआ है। **स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित शोध कार्य के उपलक्ष में समाज द्वारा वर्ष, 1995 का 'स्वामी सहजानन्द स्मृति समाज सेवा' पुरस्कार आपकी सेवा में समर्पित है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक प्रशस्त पत्र, पांच हजार रूपया तथा अंग वस्त्रं समाज की ओर से आपको सादर समर्पित किया जाता है।** समाज आपके स्वस्थ एवं दीर्घजीवन, प्रसन्नता एवं सम्पन्नता की हार्दिक शुभकामना करता है।

डा0 शर्मा का जन्म 1 जनवरी 1920 को ग्राम पिठौरी जनपद सारण (बिहार) में हुआ। आपने प्रारंभिक शिक्षा ग्रामस्तर पर और मैट्रिक स्तर की शिक्षा छपरा जिला स्कूल में प्राप्त की। मैट्रिक, आई0 ए0, बी.ए आनर्स और एम0 ए0 (इतिहास) तक की सारी पढ़ाई, पटना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत हुई। आपने पी0 एच0 डी0 की उपाधि बिहार विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

26 नवम्बर 1946 को डी0 ए0 वी0 कालेज, सीवान के इतिहास विभाग में एक व्याख्याता के रूप में आपकी नियुक्ति हुई। अगस्त 11, 1947 को आप इसी पद पर राजेन्द्र कालेज छपरा में चले आये। वर्ष 1953 में आप कुम्हरार की खुदाई से प्रशिक्षित हुए। उसी समय से आपने इतिहास विभाग के अध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण किया। कुछ समय के बाद प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विषय में भी पढ़ाने की अनुमति मिली और आपकी देख रेख में इस विषय की भी पढ़ाई होने लगी। सन 1970 में राजेन्द्र कालेज में स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई शुरू हुई और अब आप स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के अध्यक्ष पद पर सुशोभित हुए।

एक सफल प्राध्यापक के अतिरिक्त आप एक सफल लेखक भी हैं। आपने छोटी बड़ी लगभग पचास पुस्तकें लिखी हैं। कुछ पुस्तकें बिहार और बिहार के बाहर के विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों के रूप में इन्टर से एम0 ए0 तक स्वीकृत हैं। आपकी कुछ प्रसिद्ध पुस्तकों में दुनिया की कहानी, ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास, ग्रेट ब्रिटेन का संवैधानिक इतिहास और आधुनिक विश्व इतिहास के नाम उल्लेखनीय हैं। आप बाल साहित्य के भी अच्छे लेखक हैं। बाल साहित्य में भारत की स्वाधीनता की कहानी और डा0 अम्बेडकर की जीवनी-प्रसिद्ध है। पत्र पत्रिकाओं तथा राष्ट्रीय समाचार पत्रों में भी आपके लेख प्रकाशित हुए हैं।

आपकी शिक्षा का माध्यम यद्यपि अंग्रेजी रहा, फिर भी आप राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक रहे। शोध प्रबंध को छोड़कर, आपकी समस्त पुस्तकें हिंदी में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखी गयी हैं। वर्ष 1958 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना ने आपकी सुप्रसिद्ध पुस्तक "दुनिया की कहानी" पर पुरस्कार देकर आपको सम्मानित किया। आज सक्रिय सेवा से अवकाश प्राप्ति के बाद भी आप पढ़ाई-लिखाई में पूरी निष्ठा के साथ कार्यरत हैं। आप शिक्षा के प्रचार और प्रसार तथा समाज सेवा में गहरी रुचि रखते हैं।

आप अपने क्षेत्र के एक डिग्री कालेज को पच्चीस हजार रूपये के दानदाता हैं। आपने अपने ग्राम में एक उच्च विद्यालय स्थापित करने के लिए कुछ अपनी जमीन दी, जिसकी कीमत पचास हजार रूपये से अधिक है। आप स्वामी जी की समाज सेवा अवधारण को मूर्ति रूप देने की दिशा में अग्रसर हैं।

संक्षेप में, डा0 शर्मा को 'सादा जीवन, उच्च विचार का प्रतीक', कहा जाय तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

हम पुनः आपके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की शुभकामना करते हैं।

जयप्रकाश राय
अध्यक्ष

विशेष आभार

डा० मान्धाता राय, उपाचार्य, स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, गाजीपुर (उ० प्र०) ने मुझे प्रेषित पत्र में लिखा, "हम समाज के अग्रणी एवं विशिष्ट गुण संपन्न महापुरुषों का स्वागत कर स्वयं को उपकृत करते हैं। साथ ही उनकी चर्चा करके वर्तमान एवं आने वाली पीढी का पथ प्रदर्शन कर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं। यही हमारी ऋषि परम्परा रही है।" डा० राय के विचारो को स्वीकार करते हुए स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज अपने निर्धारित कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर है। इस पुनीत कार्य हेतु श्री अम्बिका प्रसाद राय, 405, नर्मदा अपार्टमेंट, अलखनन्दा, नई दिल्ली ने रुपया ग्यारह हजार तथा श्री जनार्दन राय, सी - 39, बाली नगर, नई दिल्ली ने रूपया पाँच हजार आर्थिक सहायता के रूप में दिया। हम इन दोनों विभूतियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

त्रिपुरारी राय
संस्थापक अध्यक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

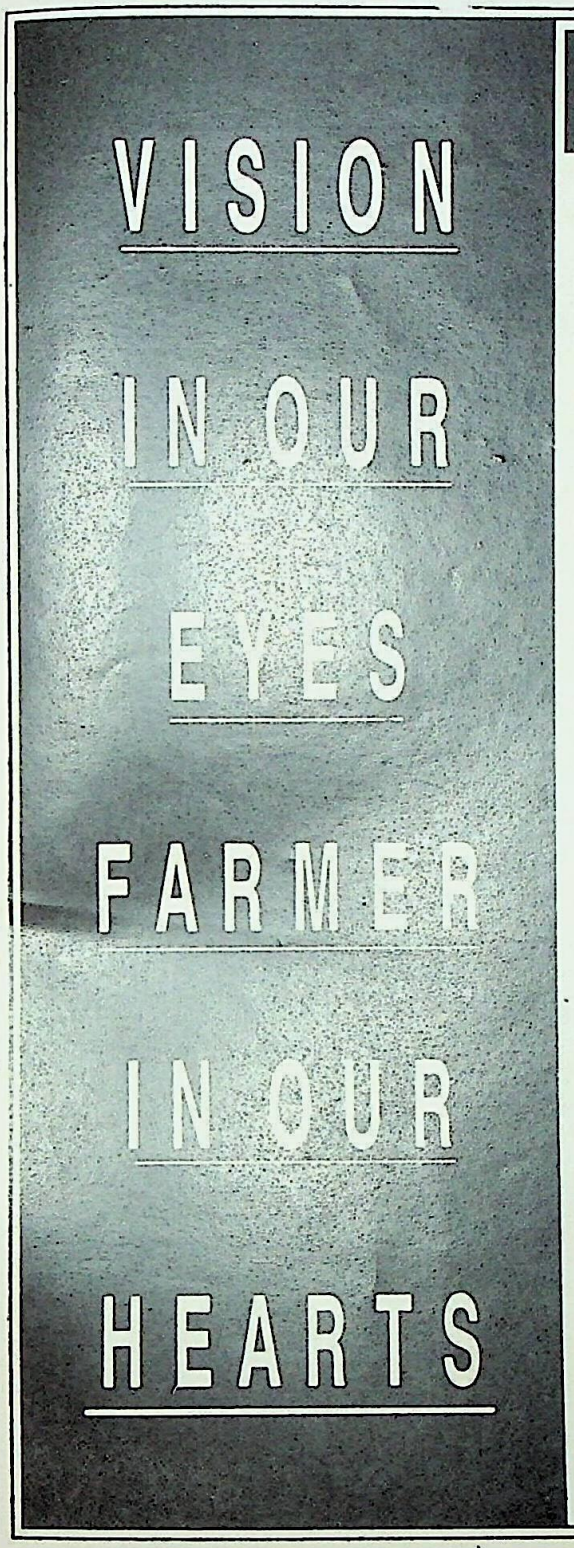

USE IFFCO NPK

From 1967 to this day, our vision has grown with the needs of farmers. With an effort to bring them, top quality fertilisers, seeds and pesticides, IFFCO has again set its eyes on increasing its capacity to more than two times of its present position by the turn of the century. Major steps in this direction are expansion of our existing plants and setting up joint venture nitrogenous plants to provide quality fertilisers at reasonable rates to the farmers. IFFCO continues to improve the quality of life of farmers, and increase agricultural productivity by educating them in latest farming techniques, including balanced use of plant nutrients, besides developing tribal and backward areas and undertaking other welfare projects.

IFFCO

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
34, Nehru Place, New Delhi - 110 019

IFFCO IN THE SERVICE OF FARMERS FOR DECADES

ALAKANANDA/2/94

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

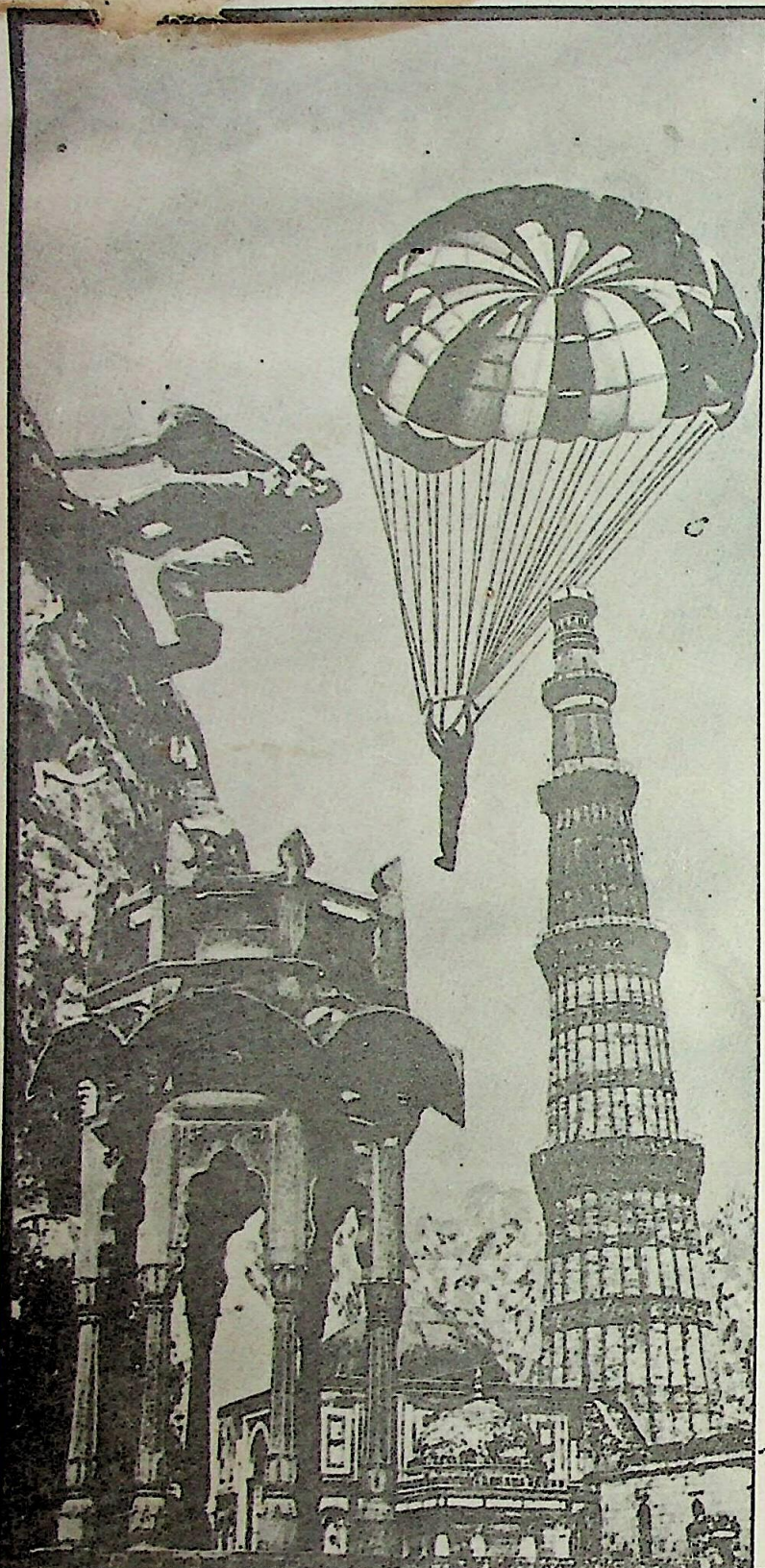

Delhi, A City Of Many Attractions.

The delights of Delhi. Magnificent forts, colourful festivals, exotic bazaars, international exhibitions, novelty melas, riveting cultural shows, riproaring sports events....

Delhi. A city of endless options. Where the past rubs shoulders with the present. Where there is

Discover It With Delhi Tourism.

something for the adventurer in you, and the intellectual. Where opportunities to exercise the body and nourish the mind abound.

Delhi. Something for everyone. Let Delhi Tourism help you get acquainted.

- Sightseeing tours
- Hotel reservations
- Foreign exchange & credit cards facility
- Transport facility
- Camping sites
- Cultural events
- Fairs & festivals
- Catering
- Parasailing
- Boating
- Rock-climbing

Sistas-D-DTDC-385/93-94

DELHI TOURISM

For further details, please contact our information counters:

- *N-36, Connaught Circus, (Bombay Life Building, Middle Circle) New Delhi-110 001. India. Tel. (91) (011) 331 5322, 331 4229.*
- *18-A, D.D.A. Shop-cum-Office Complex, Defence Colony, New Delhi-110 024, India. Tel. (91) (011) 462 3782, 461 8374.*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.